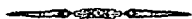


हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकरका २३ वाँ ग्रन्थ ।

शाहजहाँ ।



सुप्रसिद्ध नाटककार

स्वर्गीय बाबू द्विजेन्द्रलाल रायके

वगला नाटकका अनुवाद ।



अनुवादकर्त्ता—

पण्डित रूपनारायण पाण्डेय ।

प्रकाशक,

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय ।



आषाढ १९८८ वि० । जून् १९३१ ।

[तृतीय आवृत्ति ।]

[मूल्य एक रुपया ।]

प्रकाशक—

नाथूराम प्रेमी,

मालिक, हिन्दी-प्रन्थ-रत्नाकर-कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई



मुद्रक—

द ग सावरकर,

श्रद्धानंद मुद्रणालय, खटाव भुवन

गिरगाव, बम्बई सं० ४८

हिन्दी-ग्रंथ-रत्नाकर-सीरीजमें प्रकाशित

नाटक और प्रहसन

महाकवि रवीन्द्रनाथ टागोर लिखित

मुक्तधारा (नाटक)

पाश्चत्य सम्यताकी वुराइयो तथा भारतकी आधुनिक अग्रोपस्थाता चित्रण करनेवाला नाटक । इसमें आत्मार्पण-द्वारा विकसित एक नरीन युगका आदर्श चित्र भी खींचा है ।
मृ० ॥२), सजिल्दका १२)

चिरकुमार-सभा (प्रहसन)

यह एक बडा मनोरञ्जक प्रहसन है । इसमें कुठ ऐसे जोशीले कालेजके मिचार्थियोंका हास्यपूर्ण चित्र खींचा है, जिन्होंने चिरकाल तक ब्रह्मचारी रहकर देशसेवा करनेकी प्रतिज्ञा की है । इस उद्देश्यके लिए उन्होंने एक सभा स्थापित की और अन्तमें वे रूप और यौवनके जालमें फँसकर अपनी सभाको ले डूबे । हँसी दिह्यगी ओर व्यगोसे यह पुस्तक लत्रालत्र भरी है । मूल्य १।), सजिल्दका २)

बेलेजयन महाकावि मेटरलिककृत

प्रायश्चित्त

और

उन्मुक्तिका बन्धन

इन दोनों नाटिकाओंके अनुवाद भी विल्कुल भारतीय भूमिकामे हुए हैं जिससे इनमें मौलिक होनेका आनन्द आता है। रूपान्तरकर्ता सरस्वती-सपाठक बाबू पद्मलालजी बरशी हैं। पहले कवल प्रायश्चित्त छपा था। इस एडीशनमे 'उन्मुक्तिका बन्धन' और भी शामिल कर दिया गया है। मू० आठ आना।

वक्तव्य ।

(प्रथमावृत्तिले ।)

मेवाड-पत्तनकी भूमिका बगभापाके रयातनामा नाट्यकार और सुनवि श्रीयुक्त द्विजेन्द्रलाल राय और उनकी रचनाका यत्किञ्चित् परिचय दिया जा चुका है । आज हम उन्हींके एक और नाटक— साजाहान '—का हिन्दी अनुवाद लेकर पाठकोंके सामने उपस्थित हुए हैं । इसके पहले इस ग्रन्थमालाम द्विजेन्द्र बाबूके दो नाटक—दुर्गादास और मेवाड-पत्तन प्रकाशित हो चुके हैं । ' पुनर्जन्म ' नामक प्रहसनका अनुवाद भी ' सूक्त घर धूम ' के नामसे हमने प्रकाशित किया है ।

नाट्यशास्त्रके प्रधान प्रधान मर्मज्ञाका कथन है कि द्विजेन्द्रबाबूकी नाट्यप्रतिभाका श्रेष्ठ विकास उक्त नूरजहाँ शाहजहाँ नाटकमें हुआ है । ये दोनों ही नाटक उद्देश्यहीन हैं, अर्थात् इनमें कविने नाटकीय सौन्दर्य और चरित्र विनासके सिवा किसी नीतिविशेषके या किसी खास तरहकी शिक्षाके प्रचारका प्रयत्न नहीं किया है और बहुतोंका यह मत है कि सुकुमार काव्य-कलाके मूलमें कोई खास उद्देश्य नहीं होना चाहिए । अन्यथा उद्देश्यहीन केंसके मारे उसका सर्वोत्तम विकास नहीं होने पाता । कलाकी प्रतिभाका पूरा विकास तभी होता है, जब उसका उद्देश्य कला ही हाता है—Art for art's sake स्वर्गीय बकिम बाबूके जितने उपन्यास हैं, उतम केवल दो ही उपन्यास ऐसे हैं जिन्हें हम उद्देश्यहीन कह सकते हैं—एक ' विपटक्ष ' और दूसरा ' कृष्णरान्तका विल ' । ये ' देवी चौघराना ' और ' आनन्दमठ ' आदिक समान उद्देश्यमूलक नहीं हैं और इसी कारण उनके यही दो उपन्यास सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं ।

रुचिभेदके अनुसार नूरजहाँ और शाहजहाँमेंसे कोई नूरजहाँको सर्वश्रेष्ठ बतलाता है और कोई शाहजहाँको । बगालके प्रसिद्ध साहित्यज्ञ श्रीयुक्त देवकुमारराय चौधरी नूरजहाँके भक्त हैं, वे उसे ही द्विजेन्द्रबाबूका सर्वश्रेष्ठ नाटक बतलाते हैं और श्रीयुक्त प्रफुल्लकुमार सरकार महाशय शाहजहाँपर अपुरक्त हैं । आप ' बगदर्शन ' नामक पत्रमें लिखते हैं कि " शाहजहाँका बगसाहित्यका सर्वश्रेष्ठ नाटक कहनेमें भी हम सतोष नहीं होता । बगलासाहि यमें सत्तारको दिगलान योग्य जो दो एक बस्तुएँ हैं, उनमेंसे यह एक है । " जो हो इस मतभेदकी मीमासा पर मेरी आवश्यकता नहीं है । हमारा समझमें ये दोनों ही नाटक अद्वितीय हैं और द्विजेन्द्रबाबूके यशोगगनके प्रशंगमान नक्षत्र हैं ।

जिस समय यह नाटक कलकत्तेके 'मिनर्वा थियेटर' में खेला गया, उस समय लोग इसपर मुग्ध हो गये। दर्शकोंके द्वारा इसका इतना अधिक आदर हुआ जितना द्विजेन्द्र बाबूके अन्य किसी नाटकका नहीं हुआ था। इस नाटककी कृपासे 'मिनर्वा थियेटर' प्रसिद्ध हो गया और उसकी प्रशंसाकी धारा अरोक गतिसे बहने लगी। इसके कुछ ही समय पीछे 'शाहजहाँ नाटक' की भी साहित्य सप्ताहमें प्रसिद्धि हुई और वह (प्रसिद्धि) अब तक ज्योंकी त्यों बनी हुई है। स्वयं द्विजेन्द्रबाबूकी भी आगेकी कोई रचना उसके गौरवका हरण नहीं कर सकी। यह नाटक आजस बर्ष ९ वर्ष पहले प्रकाशित हुआ था।

श्रीयुक्त बाबू नवकृष्ण घोष बंगला साहित्यके बड़े ही मार्मिक समालोचक हैं। आपने इस नाटककी एक विस्तृत समालोचना माघ फाल्गुन चैत्र स० १९६७ के 'साहित्य' में प्रकाशित कराई थी। उक्त समालोचनासे पाठकगण इस नाटकके मर्मको और इसके गुणदोषोंका अच्छी तरह समझ सकेंगे और जान सकेंगे कि अन्य भाषाओंमें पुस्तकसमालोचनाएँ कितनी परिश्रमसे की जाती हैं, इसलिए हम उसका भी अनुवाद प्रकाशित कर देना उचित समझते हैं। आशा है कि हमारे पाठक नाटकको समाप्त करके उसे भी एक बार अवश्य पढ़ जायेंगे।

इस नाटकका अधिकांश अनुवाद फार्सीमिश्रित हिन्दीमें किया गया है और यह इसलिए कि मुसल्मान पात्रोंके मुँहसे यही भाषा अच्छी मालूम होती है। महामाया, जसवन्तसिंह आदिके मुँहसे संस्कृतमिश्रित हिन्दी कहलवाई गई है, पर ऐसे पात्रोंकी वातचीत बहुत ही कम। मालूम नहीं, पाठकोंको यह ढग कहाँतक पसन्द आवेगा। हमें भय है कि वहाँ इससे हमारे शुद्ध हिन्दीके प्रेमी पाठक हमपर अप्रसन्न न हो जायें। पर वास्तवमें यह ढग अभिनयकी स्वाभाविकता तथा मुन्दरताको बटानेके लिए ही पसन्द किया गया है।

हमें आशा है कि हिन्दी-सप्ताह मेवाट पतन और दुर्गादासके समान इस नाटकका भी आदर करेगा और आगे शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाले, ताराबाई, चन्द्रगुप्त, नूरजहाँ आदि नाटकोंके पढ़नेके लिए उत्कण्ठित रहेगा।

हम श्रीमान् दिलीपकुमार राय महाशयसे बहुत ही कृतज्ञ हैं जिनकी कृपासे यह नाटक प्रकाशित हो रहा है और जिन्होंने हमें अपनी स्वाभाविक उदारतासे अपने पिताके समस्त ग्रन्थोंके हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करनेकी अनुमति दे दी है।

ज्येष्ठ कृष्ण ९, }
स० १९७४ वि० १३

निवेदक—

नाथूराम प्रेमी।

निवेदन ।

लगभग छ वर्षों बाद 'शाहजहाँ' का यह दूसरा संस्करण प्रकाशित हो रहा है। अवकी बार इसी भाषा पहलेकी अपेक्षा अधिक साफ और बामुहारा कर दी गई है और यत्र तत्र जा अशुद्धियां रह गई थीं, वे भी ठीक कर दी गई हैं।

शाहजहाँ कलाकी दृष्टिसे जितना उच्च श्रेणीका नाटक है, हिन्दीमें आदर भी इसका उतना ही कम हुआ है, फिर भी इस आशासे कि हिन्दीमें अच्छे पाठकोंकी संख्या बढ़ रही है और उनकी रुचि भी 'कला' का मूल्य समझनेकी ओर झुक रही है हम इसे पुनः प्रकाशित कर रहे हैं। अवकी बार शायद हमें निराशा न होना पड़े।

चैत्र कृष्णा ५,
स० १९७९ वि० । }

—प्रकाशक ।

जर्मन महाकवि शीलरकृत
प्रेम-प्रपंच (नाटक)

लुइए मिलरिनका अनुवाद । यह अनुवाद त्रिलकुल देशी
भूमिकामें किया गया है जिससे यह माझम नहीं होता कि
यह अनुवाद है । घटना-वैचित्र्यपूर्ण यह नाटक बडा ही
हृदयवेधक है । मूल्य ॥३॥, सजिल्दका १॥)

समालोचना



ऐतिहासिक नाटकों में लिखनमें बड़ी भारी कठिनाई यह है कि यदि इतिहासकी रक्षा की जाती है तो कल्पनाकी दवाना पड़ता है और यदि कल्पनाकी गतिम रुकावट डाली जाती है तो नाटक अच्छा नहीं बनता। इस लिए किसी सुपरिचिन ऐतिहासिक चरित्रका अवलम्बन करके श्रेष्ठ श्रेणीके नाटककी रचना करना बहुत ही कठिन कार्य है। एक बात और भी है और वह यह कि नाटकका प्रधान पात्र पवित्र और उन्नत होना चाहिए। इसके बिना उच्च श्रेणीका नाटक नहीं बन सकता। क्योंकि यदि अपना हृदयकी बात—अतः जीवनका गभीर तत्त्व—नाटकका प्रधान पात्र ही कण्ठसे कहलवाता है। यदि प्रधान पात्र अपवित्र या अवनत हो, तो कवि को ऐसा करनेका अवसर नहीं मिलता। अपात्रके द्वारा यदि वह अपने हृदयकी बात कहलवाता है, तो वह अस्वाभाविक जान पड़ती है। रिवर शेक्सपियरने अपने मनाराज्यकी उच्च श्रेणीकी बातों और मानवहृदयके गभीर तत्त्वोंको भाउस हेम्लेट और पागल लियरके मुँहसे प्रकट किया है, परन्तु कृतघ्न आर घातक मेकथके मुँहसे वे ऐसी बातें नहीं कहला सके। जीवनकी जिस भीची और पापपूर्ण साटीपर मेकथेथ गड़ा था, उस परसे मनकी पवित्र और उन्नत सीढीपर उठकर खलनेकी शक्ति उनमें भी नहीं थी। नाटक भरमें केवल तीन ही बार मेकथेथके शोकसन्तप्त मस्तिष्कमें कविने उससे बिना जाने अपने मनकी बातें कहलाई पाई है। इसी कारण जब मेकथेथ नाटककी लियर और हेम्लेटके साथ तुलना की जाती है, तब वह उच्च श्रेणीके नाटककी दृष्टिसे निकृष्ट जान पड़ता है। यह बात दूसरी है कि स्टेजपर खेले जानेकी दृष्टिसे वह श्रेष्ठ नाटक है।

शाहजहाँ प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुष है। उसकी जीवनी महत् पवित्र या आदर्श चरित्रके अनुकूल नहीं है। इस बातकी द्विजेन्द्ररायू जानते थे और इसी लिए उन्होंने शाहजहाँ नाटकको उच्च श्रेणीके धार्मिककाव्यके रूपमें नहीं, किन्तु हृदय नाटकके रूपमें स्टेजपर खेले जानेके लिए लिखा है। सबसे पहले यह दखना चाहिए कि इस नाटकके पात्रोंको स्टेजपर अभिनय करनेका योग्य बनानेमें कवि इतिहासकी रुकावटोंको कहाँ तक हटा सका है।

नाट्यकारने शाहजहाँको रूढ़, सन्तानस्नेहप्रवण, कोमलप्राण, शान्तिप्रयास और क्षमाशीलके रूपमें चित्रित किया है। प्रत्येक दृश्यमें शाहजहाँके चरित्रके विश्वास होता गया है। उसकी छवि सर्वत्र ही उज्ज्वल और सुन्दर है। उसने जब अपने विद्रोही पुत्रोंका शासन करनेके लिए अनुरोध किया जाता है, तब वह कहता है—“ ये मेरे बेटे-बेटे ये माँके हैं। उन्हें किस जीसे सजा दूँ जहानाराह कह देख—उस सगमरमरके बने हुए (लवी साँस लेना)—उस ताजमहलके तरफ देख और फिर उन्हें सजा देनेके लिए कहना। ” यहाँ उसके सन्तानस्नेहकी गभीरता देखकर मुग्ध होना पड़ता है। उसकी प्यारी बेगम मुमताजबेगम प्रति जो उसकी जीवनव्यापिनी ममता थी, उसका स्मरण हो आता है, ताजमहलके मंत्रपूत उच्चारणसे उसके अक्षय और अपूर्व स्थापत्यकीर्तिकलापर्क या आ जाती है और आगरेके किलेके अतुल शोभामय द्वारपरसे यमुना-तटपरसे ताजमहलका दृश्य देखते देखते उसके सदाके लिए सो जानेकी कवित्वमय मृत्युरुहानी भी हृदयपटपर लिख जाती है। जब औरगजेवकी आज्ञासे अपने क्रोध हो जानेकी बात सुनकर शाहजहाँ निष्फल क्रोधसे गरज उठता है—कहता है कि “ तुमने सोचा है, यह शेर बूटा है इसलिए तुम्हारी लात सह लेगा ? मेरा बूटा शाहजहाँ हूँ सही, लेकिन मैं शाहजहाँ हूँ।—ए कौन है ! ले आओ मेरा जिरहवरतर और तलवार।—” तब उसकी अहमदनगरादिके विजय करनेकी चौर कहानियाँ स्मरण हो आती हैं और उस पञ्जरबद्ध जराजर्जर केमरीकी व्यथानर्जनासे हृदय चंचल हो उठता है। जिस समय दाराके पराजयकी और औरगजेवके दिर्घम मयूरसिंहासनपर आसीन होनेकी खबर सुनकर शाहजहाँ एक बार किलेके बाहर जाकर प्रजाके सामने पहुँचनेके लिए व्यग्र हो उठता है उस समय उसके सुत्तासनकी, प्रजावास्तव्यकी, न्यायविचारकी और राज्यकी चौरों टकैतोंसे रहित अभूतपूर्व शान्तिस्थापन करनेकी बातें याद आ जाती हैं और उसकी दुरवस्थासे मन कष्टार्द्र हो जाता है। दाराकी हत्या रोकनेके लिए जब वह आगरेके किलेके ऊपरसे कूट पडनेके लिए तयार होता है और फिर दाराकी हत्याके समाचारसे उन्मत्तवत् होकर क्षमावती धरतीपर शापनी बप फरता है, उस समय उसके दुर्बल शोकका अनुमान करके हृदय व्याकुल हो उठता है। और अन्तमें जब अपने सारे दुःखोंके कारणभूत औरगजेवको उदास भलीन और दुर्बलदेह देखकर वह उसके सारे अक्षम्य अपराधोंकी क्षमा क

देता है, तब उसके हृदयम सन्तानस्नेहकी प्रबलता कितनी अधिक है, यह देखकर मन विस्मयाभिभूत हो जाता है ।

पर जब इतिहासकी घात सोची जाती है, तब शाहजहाकी यह सुन्दर छवि मलिन हो जाती है । पितासे द्रोह करना और सिंहासन प्राप्त करनेके लिए भाइयोंसे युद्ध करना यह मुगल बादशाहोंकी परम्परागत रीति था । इसमें नूतनता कुछ भी नहीं थी । स्वयं शाहजहानि ही अपने पिताके विरुद्ध दो बार शत्रु धारण किया था और उसके पिता जहाँगारने तो मौतकी सजपर साथे हुए गदशाह अम्बरके विरुद्ध विद्रोहका झण्डा खड़ा किया था । मेरी मृत्युके बाद सिंहासनके लिए पुत्रोंमें झगडा अनश्य होगा, यह जानकर ही तो शाहजहाँने दाराका अपन पास रख लिया था और शेष तीन पुत्रोंको सूबेदार या रायप्रतिनिधि बनाकर अन्य प्रान्ताम भेज दिया था । इन सब बातोंपर जब विचार किया जाता है, तब पुत्रोंकी वगानतका हाल सुनकर शाहजहाँके मुँहसे “ देखें, सोचता हूँ—मगर ऐसा कभी साचा नहा था । ऐसा सोचनेकी आदत ही नहा है । ” आदि वाक्य असंगत और वनावटी जान पडते हैं । विशोही पुत्रोंको दमन करनेका अशुभ किये जानेपर जब वह कहता है—“ बुदा, बापोंके वह मोहनतसे भरा हुआ दिल क्यों दिया था ? उनक दिलों और निगराका लोहेका क्यों नहा बनाया ? ” तब यह सोचकर उसपर दया हो आती है कि उसे यह ज्ञान जवानीमें क्या नहीं हुआ । जब इतिहास कहता है कि उसने अपने बड़े भाईके पुत्रका चतुराईसे पतारित करके और दूसरे भाइयों तथा भतीजामरों जो जो उसका सिंहासनके प्रतिद्वन्दी हो सकत थे, उन सबको ही बिना कुछ सोचे विचार मारकर अपने कुटुम्बियोंके रक्तसे रंगे हुए हाथाम दिर्घाका राजदण्ड धारण किया था, तब उसने मुँहसे “ या पुदा भा ऐसा कौतूह्य गुनाह किया है, ” यह उक्ति जगदीश्वरके सामने सर्वथा निर्लज्जतापूर्ण जान पडती है । मेनुसी (Signoi Manouci) की बात यदि सत्य हो, तो शाहजहाकी निष्पूरताको बहुत ही आश्चर्यजनक कहना होगा । मेनुसी लिखता है कि शाहजहाँने अपने भाई शहरवार और उसने दो निरीह पुत्रोंको एक छोठरीम कैद करके उसका द्वार बन्द करा दिया, जिससे कि वे तीनों कड़े देनोंम भूखसे छटपटाकर मर गये ! मेनुसी शाहजहाँके व्यभिचारकी, गुप्त ह या भोकी जीर इन्द्रियसेवाकी तो सब बातें लिख गया है, यदि उक्त घोटका

अथ भी सच है, तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उस युद्धमें जो पुत्रगौरु महन करना पड़ा, तैदका दुःख भोगना पड़ा, सो सब उसके पापोंका उचित प्रतिफल था ।

शाहजहाँके इतिहासके साथ लियरकी कहानीका कुछ सादृश्य है । दोना ही राजा है, जराप्रस्त है, राज्यभ्रष्ट है और सन्तानोंके निष्ठुर व्यवहारसे दुर्गा हैं । द्विजेन्द्रवानुने शाहजहाँको लियरकी ही दशामें लानर गड़ा क्रिया है और शाह जहाँका हृदय भी लियरके समान कोमल और सहज ही विधुच्च होनेवाला गया है । परन्तु लियरके आदर्शपर शाहजहाँ नहीं पहुच पाया । पर इसका कारण नाट्यकारकी चतुराईकी कमी या असामर्थ्य नहीं, किन्तु इतिहास है । यह मच है कि पुत्रोंक, विशेषत औरगजेबके दुर्व्यवहारसे और दारानी हत्यासे शाहजहाँके हृदयपर गहरी चोट लगी थी, परन्तु वीरे धीरे समय बीत जाते पर उसके हृदयका वह घाव सूख गया था और वह प्रकृतिस्थ हो गया था—उमकी हालत ज्योंकी त्यों हो गई थी । किन्तु कृतघ्न कन्याआके पेशाचिक धात्ररणमें लियरका हृदय जा टूट गया, उसमें फिर जोड़ नहीं लगा और काँलियाकी मृत्युकी अन्तिम चोटमें तो वह सर्वथा ही चूर चूर हो गया । लियर नाटकके पहले तीन जड़ीक बड़े बड़े दृश्य धोम, रोप, विस्मय, अनुताप, कर्णा आदिकी हलचलमें मनमें उथल पुथल कर डालते है, परन्तु शाहजहाँ नाटकमें इम प्रकारके किसी दृश्यका समावेश नहीं हो सका है । महम्मदको छेदकर विद्रोही पुत्रोंके पक्षक अन्य किसी पात्रके साथ शाहजहाँका साक्षात् नहीं हुआ और महम्मदने भी भिवा यह कहनेके कि 'अन्नाके हुक्मसे आप कैद हैं' शाहजहाँसे न तो कोई घुरा शब्द कहा और न निष्ठुर व्यवहार ही किया । अन्तिम दृश्यम नाट्यकारने शाहजहाँके साथ औरगजेबका जो काल्पनिक साक्षात् कराया है, वह विद्रोह, हत्या आदिकी घटनाआके बहुत वर्ष पीछेका है । उस समय शाहजहाँके मनका ताप शीतल हो गया था । लियरने काँलियाको वचित करके अपनी दोनों अत्याचारिणी कन्याओंको सर्वस्व दान कर दिया था, किन्तु शाहजहाँने दाराको वचित करके औरगजेबको सर्वस्व दान नहीं किया था । अतएव औरगजेबके ऊपर आदान प्रदान सम्बन्धी कृतप्रताका दोष नहीं आया । औरगजेबने रिगन और गनेरिल्के समान अपने पिताके ऊपर न तो ममभेदी वाग्वाणोंकी वर्षा की और न उसे कोई कष्ट दिया । इसके सिव

शेनसपियरने गनरिल और रिगनके काल्पनिक चरित्रकी कालिमा बहुत दा-
गहरी करके दिखाई है, परन्तु द्विजेन्द्रलालने औरगजेयके ऐतिहासिक चरित्रके
ऊपर उस प्रकारकी इच्छानुसार म्याही नहा पोता है। यदि व ऐसा करते तो
इतिहासका अपलाप होता और औरगजनके वास्तविक चरित्रके प्रति अविचार
भी किया जाता। किन्तु स्याही न पोतनेका फल हुआ है वह कि उत्पादक
प्रति उदासीनता उत्पन्न न होकर सहानुभूतिका उद्रेक हुआ है और उत्पीडित
शाहजहाँके कष्टकी तीव्रता घट गई है। शाहजहाँका भी नाट्यकारन लियरके
समान वाद्य जगत्की आँधीके साथ अन्तरकी झञ्झावायुके प्रकोपको मलानेका
अवसर दिया है। किन्तु दोनाम अन्तर यह है कि रातके गहरे अधेरेम आश्र
यहीन और पथघ्न हुए लियरके मन्तक परसे तो धाँवी निकल गई थी और
शाहजहाँने आगेरे मद्दलकी मगमरमरकी जालियोंमेंसे यमुनाके ऊपर जो आभी
पाणीका खेल हो रहा था उसे देखा था ! दोनाके वशगत और शिक्षागत चरि-
त्रमें भी एसा अन्तर है। ऐसी दशम नाट्यकारके हाथमें कोई उपाय नहीं
था। इतिहासने उनकी काय-कल्पनाको मैकडों रस्मियोंसे बाँध रखा था,
अतः उसे ऊध्वगामी नहीं होने दिया—लियरक आदर्शपर शाहजहाँ नहीं
पहुँच पाया।

लियर नाटकमें अकेल ग्यिरन ही प्रधानत कष्ट पाया है, परन्तु शाहजहाँ
नाटकका उत्पीडन कई भागाम विभक्त हो गया है। जान पड़ता है, दाराने
ही उसका सत्रसे आरम्भ केश भाग है और उसीके भाग्यविषयपर सबसे
अधिक चिन्तित और सहानुभूति आरपित होती है। दारा वर्ममतम उदार
अकपट और वीर था किन्तु कूटबुद्धि और कर्मपटुतामें औरगजनके साथ
उसकी कोई तुलना नहीं हो सकती थी। इतिहासके इस चित्रने नाटकमें भी
स्थान पाया है। दाराके भाग्यके उलट-पेरकी छवि नाट्यकारन बहुत ही
निपुणताके साथ उज्ज्वल रूपम अंकित की है। दाराको भी नाट्यकारने पत्नी
गतप्राण और सन्तान-स्नेह विगलित हृदय बनाया है। मद्यभूमिमें स्त्रीपुत्रोंके
असाध्य कष्ट देगजर जब वह उन्मत्तप्राय हो जाता है और अपनी प्यारी स्त्रीकी
हत्या करनेका तैयार होता है, उस समयका चित्र भीषण होने पर भी उसके
चरित्रसे ठीक मेल खाता है। इतिहास कहता है कि वह अधीर और असहिष्णु
था। नादिराकी मृत्यु जिस कमरेमें हुई थी, उस कमरेम, नाच निहनसोंके

सामने सिपरको रोते देखकर दारा जय सखे स्वरसे ' सिपर ! ' कहकर उस बालककी दुर्बलता स्मरण करा देता है, तब दाराके आत्मसम्मानज्ञानका बहुत ही सुन्दर चित्र खिंच जाता है ।

दारा उत्पीडित और औरगजेब उत्पीडक है । दाराके दुःख सहानुभूतिसे उदरके साथ साथ औरगजेबपर घृणा होना स्वाभाविक है । किन्तु नाटकम औरगजेबका चरित्र जिस रूपमें चित्रित किया गया है, उससे उक्त घृणा जितनी चाहिए उतनी नहीं बटती । दाराको मृत्युदण्ड देते समय इतस्तत करना, दाराकी मृत्युपर दुःख प्रकट करना, और जिहनखोंके मरनेकी बात सुनकर सतोष प्रकाशित करना, ये सब घटनायें इतिहाससंगत हे या नहीं, यह दूसरी बात है, परन्तु नाटकम वे औरगजेबकी आंतरिक अनुभूतिके रूपमें वर्णित हुई हे और इसके फलसे नाटकीय सौन्दर्यकी अवश्य ही कुछ क्षति हुई है । उधर, नाटककारने दाराके चरित्रके दोषोंको प्रच्छन्न रखकर उसे दर्शका और पाठकोंकी आधक सहायता प्राप्त करा दी है । दारा दाम्भिक था, वह वादशाहका प्रतिनिधि बन गया था और इस कार्यमें उसे हुकूमतका स्वाद मिल गया था, ' इस कारण उसकी उद्धतता बढ गई थी । वह प्रतिवाटको जरा भी सहन नहीं कर सकता था और अमीर उमरागा बिना कारण अपमान किया करता था । मनुसी लिखता है कि दारा अपने एक स्वरीदे हुए गुलाम ' अरब खों ' के साथ उन लोगकी तुलना किया करता था और उनका मजाक उडायता करता था । सगी तकलानुरागी अम्बरनेशा जयसिंहका वह ' उस्तादजी ' कहकर उपहास किया करता था । वह क्रिश्चियन उपपत्तियापर बहुत ही अनुरक्त था और इस विषयमें बदनमा हो गया था कि उसने शाहजहाँके बर्द्धित प्रताप मंत्री सादुलखोंकी विष देकर मार डाला है । इन्हीं सब कारणोंसे वह विपत्तिसे समय अमीर-उमरागी सहायता नहीं प्राप्त कर सता ।

नाटककारने औरगजेबका जो चित्र खिंचा है, वह एक बडे भारी पुरुषार्थका चित्र है । नाटककारने बहुत ही सावधानी और आन्तरिक सहानुभूतिसे इस चरित्रको पारेस्फुट किया है और यह बात प्रत्येक रसज्ञको स्वीकार करनी होगी कि उनका यह प्रयत्न सर्वतोभावस सफल हुआ है । औरगजेबके तीक्ष्णबुद्धि, दूरदर्शिता, कार्यतत्परता, विपत्तिमें धैर्य, आत्मदमनका सामर्थ्य आदि गुण उसके प्रति स्वय ही श्रद्धाको आकर्षित कर लेते हे । औरगजेबके महान् चरित्रक साथ

तुलना करनेसे उसके भाइयारू चरित्र विल्कुल ही तुच्छ जान पड़ता है । उसके राजनैतिक बुद्धिसे साथ प्रतिद्वन्द्विता करनेमें वे बचाके समाप्त सर्वथा असमर्थ थे, यह बात नाटकमें स्पष्टतासे दिखलाई देती है । अन्यान्य पात्रोंके समाप्त और गजेबके चरित्रके दोषाको भी नाटककारने जहाँ तक बना है, अन्तरालमें ही रखा है । किन्तु दोष इतने गुरुतर है कि सैकड़ों चंष्टाओंसे भी उनही कालिम नहीं बुल सकती । यह बात नहीं है कि औरगजेब केवल शठ प्रति शठ करता था । नहीं, वह अपनी कार्यसिद्धिसे लिए आवश्यकता पडने पर जो शठ नहा है उसके भी साथ शठता या धूर्तता करता था । यह बात नाटकम भी प्रकाशित हुई है । जहानारारूके उक्थासे मुरादने जब उसने बन्दी करनेका पड्यन्त्र रचा था, उसके बहुत पहलेसे उसने मुरादको ' मन्नाट ' कहकर और अपने आपको ' मन्ना ' जानेवाला फरीर बतलाकर उसको प्रतारित किया था । वह निष्ठुर था, इसका आभाम भी नाटकम मौजूद है । उमने दारा और विपयको एक बहुत ही दुबल पतले हड्डियों तिरल हुए हाथीकी पीठपर बैठे कपडोंकी पोशाक पहनवाकर दिल्लीके चार तरफ धुमाया था । यह बडी भीषण निष्ठुरता थी । बर्नियर लिखता है कि दाराको मृत्युका दण्ड देनेके समय और गजेबने जो दुःख प्रकाशित किया था, वह उसकी कृतबुद्धिमा केवल एक अभिनय था । मेनुषी लिखता है कि जब उसे दाराका कटा हुआ सिर मिला, तब वह हर्षमे फूल गया, तलवारकी नोकमे उमने उसकी एक अर्ध निगाह डाली, दाराकी एक आँखमें काले रगका जो एक दाग था उसकी परीक्षा की, और फिर शाहजहाँके भावनक समय उतने उम सिरको एक बन्धन रारकर और बल्लसे ठरकर भेटस्वरूप भेज दिया । औरगजेबके चरित्रक इस काले हिस्सेको प्रकट न करके नाटककारन अच्छा ही किया है । और और चरित्राम भी उन्हाने गुणापर ही प्रकाश डाला है । इस विषयमें औरगजेबके चरित्रके प्रति सहानुभूति होनेके कारण कोट रास पक्षपात नहीं किया गया है । उहान औरगजेबक जटिल चरित्रके परस्परविरुद्ध भावारा स्वभावोचित रूपमें सुन्दर समन्वय कर दिया है । औरगजेबने जिस राजनीतिक प्रतिभाक बलसे भारतका साम्राज्य हस्तगत किया था, वह अन्तः तरह स्पष्टतासे और मनकी तिम मनी गताके दोषासे मुगलसाम्राज्यके जट हानकी व्यवस्था की थी वह एक दूरदर्ती तारेकी भांति कुछ अस्पष्टतासे, नाटकमें शकता है ।

मुरादको नाट्यकारने साहसी, वीर, सुराग्रिय और वेद्यासक्तके रूपमें चित्रित किया है। इतिहास भी यही कहता है। मुराद पेट और शिकारी प्रसिद्ध था और यदि वह सम्राट् होता तो मुसलमान धर्मकी कोई हानि न होती। क्योंकि वह मुसलमान धर्मम अन्वधरदा रखता था, यह बात भी इतिहासमें लिखी है। वह औरगजेबसे ठगा गया था, अतएव यह निश्चित है कि उसकी बुद्धि औरगजनके समान तेज नहीं थी। नाट्यकारने अपने चित्रमें मुरादकी निर्वुद्धितामरग कुछ गहरा भरा है, पर इससे नाटकके सौन्दर्यमें कोई क्षति-वृद्धि नहीं हुई।

शुजा साहसी और युद्धप्रेमी था और युद्धक्षेत्रकी विभीषिकाके भीतर भी वह नृत्यगीतमें मस्त रहता था। यह बात इतिहाससे मिलती है। ऐतिहासिकोंका मत है कि वह घोर त्रिलासी और आतिशय व्यसनासक्त था, परन्तु नाट्यकारने उस पत्नीगतप्राण, सरलचित्त, उन्नतमना और भावुकके रूपम चित्रित किया है।

महम्मद पहले पिताका आज्ञानुवर्ती था, पीछे वशपरम्पराकी प्रथाके अनुसार वह भी विद्रोही हो गया था। शाहजहाँने जब उसे बादशाह बना देनेका लोभ दिखलाया, तब उसने साफ शब्दोंमें कह दिया कि मुझे राज्य नहा चाहिए। यह ऐतिहासिक घटना है। किन्तु उसने इस स्वार्थत्यागका कारण पिताकी भक्ति थी अथवा पिताके क्रोधकी भीति, इसे कोई नहा जानता। उसमें यह समझनेकी शक्ति अवश्य ही थी कि जराजर्जर और मतिभ्रान्त शाहजहाँ और गजेबकी विजयिनी तलवारसे उसकी रक्षा करनेम सर्वथा असमर्थ है। क्योंकि वह औरगजेबका पुत्र था। नाट्यकारने महम्मद-चरित्रने इस म्यायत्यागका ओर पीछे पिताके परित्याग कर देनेका जो सुन्दर चित्र अंकित किया है, उससे महम्मदका चरित्रका उत्कर्ष ता हुआ ही है, साथ ही नाटकके साधारण सौन्दर्यकी भी बहुत वृद्धि हुई है।

सुलेमान वीर और सुबुद्धि था। मेनुसीने लिखा है कि शाहजहाँ, दाराकी अपेक्षा सुलेमानकी बुद्धि और शक्तिपर अधिक श्रद्धा रखता था। उसके चरित्रमें आदश चरित्रमें परिणत करके नाट्यकारने इतिहासकी अमर्यादा नहीं की है।

शाहजहाँ नाटकके स्त्रीपात्र उच्च श्रेणीने है। नादिराकी कोमलता, सहिष्णुता और पतिभक्ति हिन्दू-कुल्लस्मियोंके लिए भी आदर्शरूप है। महामायाकी बातें उस राजपूत कुलके सर्वथा उपयुक्त हैं जिसकी कि स्त्रियाँ पति और पुत्रोंकी

हो जाता है, परन्तु वह चाहती है मनके दु सको मनहीमें दवाकर हंसीकी क्षिप्र-
धाराम पतिकी दुश्चिन्तामिको बुझा देना, कौतुककी तरंगमें युद्धकी इच्छाको बहा
देना और हंसीसे चमकते हुए नेत्रोंकी बिजलीके प्रकाशमें पतिका अँधेरेसे धिरा
हुआ मार्ग प्रकाशित कर देना । बुद्धिमती पियाराके हास्यप्रकाशमें शुजाकी सर-
लता विकसित हो उठी है ।

पियाराकी परिहासरसिकताम एक त्रुटि मी है । उस दु समयम जब कि भाद
भाइयोंमें युद्ध हो रहा था, समदु लभागिनी स्त्रीका स्वामीके साथ परिहास
करना, कालविरुद्ध और सम्पन्नविरुद्ध मालम होता है और वह पियाराके
सुन्दर चरित्रमें मानों एउ हृदयहीनताकी छाया डाल देता है । तीक्ष्णदृष्टि
नाट्यकारने स्वय ही इस त्रुटिको देस लिया हे और इसी लिए उन्होंने पियाराकी
स्वगतोक्तिमें, उसकी पतिके साथकी सहज वातचीतमें और शुजाके ' जो मेरे
लिए जीने मरनेका सवाल है उसीको लेकर तुम दिलगी करती हो '-इस वाक्यमें
उस अनुचित व्यवहारकी एक नैकियत दी है । वह परिहास मौखिक था, अन्त
रगसे निम्ला हुआ नहा ।

परन्तु दिलदारके परिहासम इस प्रकारका कोई दोष नहीं आने पाया है ।
क्याकि, उसका बादशाहके वशसे कोई सम्बन्ध नहीं था और उसका व्यवसाय
ही दिलगी करनेका था । दिलदार एक छद्मवेशी दार्शनिक या दानिशमन्ट बत
लाया गया है, परन्तु वह कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं है, स्वय नाट्यकारके
सृष्टि है । लियरके साथ जैसे फूल (Fool) था, वैसे ही मुरादके साथ दिल
दार था । फूलने जित तरह उसकी दुष्ट रन्याओंका कपट समझा देनेका प्रयत्न
किया था, दिलदारने भी उसी प्रकार मुरादको पितृद्रोहके महापापसे आ
औरगजेवके भयङ्कर उलसे बचानेकी चेष्टा की थी । परन्तु सुनता कौन है
लियरकी अन्न टिपाने नहां थी और मुराद मूर्ख था । मुगल बादशाहोंके दर-
बारमें विदूषकोंका रहना इतिहासप्रसिद्ध बात है, अतएव दिलदारका चरित्र
इतिहाससात है और शाहजहाँ नाटकमें उस चरित्रकी सार्थकता स्पष्ट है ।
दिलदारकी व्यंग्योक्तिया, पितृद्रोह और भ्रातृहत्याके पङ्क्योंसे कल्पित हुई घ
नाओंमेंसे मनमें रचकर उसे बीच बीचमें विधाम लेनेका अवकाश देती
और मुरादके चरित्रकी त्रुटियोंमें अतिगव स्पष्ट करके उसकी बोवहीन सरलता
पर बरणाघा उद्रेक कर देती है ।

द्विजेन्द्रलाल हास्यरसके प्रवीण लेखक है। उनकी निमल परिहासरसिकता एक हँसीकी लहर या आमादका बुलबुला बनाकर ही लीन नहीं हा जाती। उनकी हँसीमें एक तीव्र श्लेष है, जो हृदयपटपर एक गहरा चिह्न छोड़ जाता है। पियारा जब 'शेरकी ताकत दातोंमें, हार्थकी ताकत सूँडमें' आदि उपमायें देनेके पश्चात् कहती है कि 'हिन्दुस्तानियाकी ताकत पीठमें' और जयसिंह जब कहते हैं कि 'मे औरगजेयकी अधीनता स्वीकार कर सकता हू मगर राजसिंहका प्रभुत्व नहीं मान सकता' और इसके उत्तरमें जब जसवन्तासिंह पूछते हैं कि 'क्यों राजासाहब? वे अपनी जातिके हैं, इसलिए?' और पियारा जब कहता है कि 'मे रिहाइ नहीं चाहती। मुझे यह गुलामी ही पसन्द है। तथा युजा इसका उत्तर देता है 'छि पियारा! तुम हिन्दुस्तानियास भी नीच हा' * तब कौतुकको हँसी ओंठाम ही मिल जाती है और प्राण माना एक तेज रोडेकी मारसे काप उठते हैं।

इतिहासका बात छाड़ देने पर हम देखते हैं कि शाहजहा नाटकमें सभी प्रधान अप्रधान चरित्र सुपरिस्फुट हैं। परस्पर विपरीत प्रवृत्तिके पात्रोंके चित्रोंको पाम पास रखकर नाट्यकारने एककी सहायतासे दूसरेकी उज्ज्वलताको बढ़ाया है। जयसिंहकी विश्रामघातकताके सामने दिलेरगोंका धर्मता, निहनस्वाकी नीचताके सामने शाहनवाजकी उदारता और जसवन्तामहकी मनकी सकीणताके सामने महामायाके मनका महत्त्व, ये सब बातें काले परदेपर सफेद रंगके चित्रके समान उज्ज्वल हो उठा है।

मरुभूमिमें व्याससे ध्याबुल स्त्रीपुत्राकी आसन्न मृत्युकी आशराम दाराका भगवानके निरुक्त प्रार्थना करना, उमरे धोली ही देर पीठ गऊ चरानवालोंका आना और जल पिलाना, जयसिंहसे सैन्य न पाकर दुर्वा हुए मुलेमानका दिल रस्वासे सहायताकी भिक्षा माँगना और दिलेरगोंसे जिसकी आशा नहीं थी, एसा तेजस्वी उत्तर मिलना कि 'उठिए शाहजादामादर, राजासाहब न द, म दुक्म देता हूँ। मेने दाराका नमक खाया है। मुसलमानाकी कौम नमकहराम नहीं

* हमारे पाम पष्ठ संस्करणकी पुस्तक है। उसमें यह वाक्य नहीं है। जान पडता है, यह पहलेसे संस्करणोंमें रहा होगा, पाछे किसी कारणसे निकाल दिया गया है।

होती ।' महम्मदका शाहजहाँ दिया हुआ मुकुट न लेकर चला । युद्धम पराजित हाकर शुजा और जसवन्तके राज्यमें लौटनेपर महाम फाटक बन्द करवा दना, पिराराका युद्धक्षेत्रमें जाकर मरनेका सम्बन्ध प्रकट आर अन्तिम दृश्यमें शाहजहाँके पैराग नीचे राजमुकुट रगकर औरगं क्षमाप्रार्थना करना, आदि ऐतिहासिक और काल्पनिक घटनाओंको नाट्य वटा चतुराईसे चित्रित किया है । जिस समय दारा सिपरसे अन्तिम विदा है, उस समयका चित्र वजा ही करण और मर्मस्पर्शी है और जिस दृश्यमें गजेव स्वपक्ष और विपक्ष सर्भीको वस्तुता और अभिनयके मोहसे मुग्ध उनके मुखास ' जय औरगजेवकी जय ' की ध्वनि उच्चारित करा देता है, दृश्य सचमुच ही जहानाराके शब्दोंम ' गम ' है । उस वस्तुताको प तीसरे रिचटका वह वाग्चातुर्य याद आजाता है जिसम उसने लेडी एन विधवा रानीको भुलानेका प्रयत्न किया था । पुढापेमें शाहजहाँकी अधिक घ सप्रह मरनेकी लालमा और उससे औरगजेवकी शाही जवाहरात माँगनेकी हासिफ घटना शाहजहाँ और औरगजेवके काल्पनिक साक्षान् होनेके पहले पणमें अच्छी तरह स्फुटित हुई है । औरगजेवने पुकारा, " अम्बा ! " जहोंने उत्तर दिया, " मेरे हारे मोती लेने आया है ? न दूँगा न दूँगा । अभी स लोहेकी मुंगरियासे चूर चूर कर डालेगा । "

शाहजहाँ नाटकका एक प्रधान गुण यह है कि इसक प्रत्येक दृश्यमं प्रा अन्त तम एकसा कुतहल बना रहता है । वस्तुतायें लम्बी होने पर भी अक्षयि नरा होतीं । यह साधारण लेखनशक्तिका काम नहा है । द्विजेन्द्र दाराकी हत्या रगमञ्च (स्टेज) पर, दशकोंके सामने, दीर्घकालव्यापी श्चरने साथ, न कराक परदेके भीतर ही करा दी है, इसके लिए ये प्रत्येक न रसिकके धन्यवादभाजन हैं ।

इस नाटक रचनामें कविने जो रचना-काशल और कवित्व दिगलाया है, बिस् भयसे उसका पूरा परिचय नहीं दिया जासका । अब यहाँ मुझे थोड़ी बहुत त्रु नी दिखलानी चाहिएँ, नहा तो समालाचना एकागी रह जायगी ।

दाराका मृत्यु ही शाहजहाँ नाटककी सबसे बड़ी घटना है । दाराके जीव अन्तके साथ ही नाटककी अन्तिम जवनिकाका गिरना उचित था । बिस् पहले शाहजहाँ जिस अवस्थाम था, उसी अवस्थामें आगरेके किलेके मह

भी था, उसकी स्थितिम कुछ विशेष परिवर्तन नहा हुआ। केवल दागने का सिंहासन ओर जीवन दोनारो रोया। वास्तवमें उमके भाग्यमें पलटनेपर ही नाट्यकी भित्ति स्थापित है, ओर उसकी मृत्युघटनास मा इस प्रकार अवसाद प्रस्त हो जाता ह कि आगे एन्सेएक उत्तम हृदय आते हे, ता भी उनकदेसानेका धैर्य नहीं रह जाता है।

नाटकपात्राकी वातचीतके टगमें यदि व्यक्तिगत विपमता हानी, एक्की वातोंमें डगका दूसरेकी वाताके डगसे अन्तर होता, तो नाटकका सोन्दर और भी बढ जाता। प्राय सभी प्रधान प्रधान पात्रोंके मुगोंसे कविने अपने हृदयकी वात कहलाई हे। शाहजहाँ, जहानारा, शुजा, पियारा, नादिरा, मुल्मान, दिलदार, ये सभी एरु एक कवि हे। यहाँ तक कि तरुणी जोहरतके वाच्यम भा कविजनसुलभ भाषुक्ता टपरु रही है। पात्राकी वाताम यह जो बेचि-यहीनता है उमकी ओर सबकी नष्टि आकर्षित होती है।

अनुवादक—

नाथगाम प्रेमी।

नाटकके पात्र ।



(पुरुष)

शाहजहाँ	भारतसम्राट् ।
दारा	शाहजहाँके चारों लडके ।
शुजा	
औरंगजेब	
मुराद	
सुलेमान	
सिपर	दाराके दोनो लडके ।
महम्मद सुल्तान	औरंगजेबका लडका ।
जयसिद्ध	जयपुरके र जा ।
जसवन्तसिंह	जोधपुरके राजा ।
दिलद्वार	छद्मप्रेमी शानी (दानिशमद)।

(स्त्री)

जहानारा	शाहजहाँकी लडकी ।
नादिग	दाराकी स्त्री ।
पियारा	शुजाकी स्त्री ।
जोहरनउन्निसा	दाराकी लडकी ।
महामाया	जसवन्तसिंहकी रानी ।

शाहजहाँ ।

पहला अंक ।

पहला दृश्य ।

स्थान—आगरेके किलेका शाह्वा महल । समय-

[शाहजहाँ पलंगपर आधे लेट हुए, हथेलीपर गाल रखे, सिर झुकाये सोच रहे हैं और ' सटक ' मुँहसे लगाये बीच बीचमें धुआँ छोड़ते जाते हैं । सामने शाहजादा दारा खड़े हैं ।]

शाह०—दारा, हकीकतमें यह बहुत ही बुरी ग़ज़र है ।

दारा०—शुजाने बगालमें बगानतका झटा जग्गर खटा किया है मगर अभीतक उसने अपने आपको बादशाह नहीं मशहूर किया है । ऐक़िन मुराद गुजरातमें बादशाह बन बैठा है और दक्खिनसे औरंगजेब भी उधर मिल गया है ।

शाह०—औरगजेब भी उममे मिल गया है ।—देरूँ, मोचता हूँ—मगर ऐसा कभी मोचा नहीं था । ऐसा सोचनेकी आदत ही नहीं है । इसीसे कुछ तै नहीं कर सकता । (तमाख पीना ।)

दारा—मेरी समझमें नहीं आता कि क्या किया जाय ।

शाह०—मेरी भी समझमें नहीं आता । (तमाख पीना ।)

दारा—मे डलाहाबात्में अपने लडके सुल्तमानको शुजाका मुकाबला करनेके लिए हुकम भेजता हूँ और उसे मदद देनेके लिए महाराजा जयसिंह और सिपहसालार दिलेरखोंका भेजता हूँ ।

[शाहजहाँ नीचेको नजर किये हुए तमाख पीने लगे ।]

दारा—और मुगलका मुकाबला करनेके लिए महाराजा जयवन्त-सिंहको भेजता हूँ ।

शाह०—भेजते हो !—अच्छी बात है । (फिर पहलेकी तरह तमाख पीना ।)

दारा—जहाँपनाह, आप कुछ फिक्र न करें । बागिनोका सिर कुचलना मैं ग्यून जानता हूँ ।

शाह०—नहीं दारा, मुझ इम बातकी फिक्र नहीं है । मुझे फिक्र सिर्फ इम बातकी है कि यह भाई-भाईकी लडाई है । (तमाख पीना, थोड़ी देरमें एसाएक) नहीं—दारा, कुछ जरूरत नहीं । मे मन्ना समझा दूँगा । लडाई-भिडाईका कुछ काम नहीं । उन्हें वेगोक-टोक शहरके भीतर आने दो ।

[तेजीस जहानाराना प्रवेश ।]

जहा०—रुमी नहीं । अन्ना यह हो' नहीं सकताग, गिआगान् बाद्शाहके सिगपर जो तलवार उठाई है, वह उमी गिआयाके सिगपर पटनी चाहिए ।

शाह०—जहानारा, यह क्या कहती हो ! ये मेरे बेटे हैं ।

नहा०—बेटे हो, इससे क्या ? बेटा क्या आपकी मुहब्बतका ही हकदार है ? बेटेको आपकी ताबेदारी भी करनी चाहिए । अगर बेटा ठीक गहपर न चले, तो उसे सजा दना भी आपका फर्ज है ।

शाह०—मेरा दिल तो एक ही दुरुमत जानता है, जोर यह सिर्फ मुहब्बतकी दुरुमत है । ये मर बटी-बेट बे-माफे हैं । उन्हें किम दिलमे मजा दूँ, जहानारा ! यह देख-उम सगमरमर ने दृष्ट (लगी मास लेकर)—उम ताजमहलकी तरफ देख फिर उन्हें मजा देनेके लिए कहना ।

नहा०—अब्यानात, क्या आपको लयक यही बात है ! यह कूमनेगी क्या हिन्दास्तानके बादशाह शाहजहाँको मोहती है ! शाहशाहत भी क्या जनानखाना है ! लडकोका खेल है !—एक बटी भारी सतनतका काम आपके हाथमे है । रिआया अगर बागी हो, ना उस क्या बेटा ममझकर बादशाह माफ कर देगा ? मुहब्बत क्या फर्जका ग्यार मिट्टा देगी ?

शाह०—नहानाग बहम न करे । इस बहमके लिए मेरे पाम फाई नयाप नहीं । सिर्फ एक शयार है—यही मुहब्बत । दार, मे सिर्फ यही साच रहा है कि इस बगडेमे चाहे तो हारे, मुझे दृख ही होगा । इस लडडेमे अगर तुम हार तो तुम्हारा उदामे और मुग्घाया हुआ चहरा देखना पडेगा और अगर उन लोगोन शिकस्त ग्नाई ना मुझे उनके उदामे और उतरे हुए चहरका ग्यवाल होगा । दारा, लडडेकी चखरत नहीं है । ये यहाँ ओप, मे उन्हें समझा देगा ।

दारा—अब्यानात, अच्छी बात है ।

नहा०—दारा तुम क्या इती तरह अपने बेटे आपकी नगाह

काम करोगे ? अर्थात् अगर सन्तनतका काम कर सकते, तो तुम्हारे हाथमें उसकी बग़ाडोर न छूट देते । वेअर्थात् शुजा, अपने आप बना हुआ बादशाह मुराद, और उसका मन्दगार औरगजेब, ये सब बग़ावतका झण्डा हाथमें लिये डका बजाने आगेमें धुमेगे, और तुम अपने बापके कायममुकाम होकर इम बातको खट, खटे हँसते हुए देखा करोगे ?—रघु ।

दारा—सच है अर्थात्, ऐसा कहीं हो सकता है ! मुझे जगके लिए हुक्म दीजिए ।

शाह०—या खुदा ! बापको यह मुहन्वतसे भरा दिल क्यों दिया था ? उसका दिल और जिगर लोहेका क्यों नहीं बनाया ?—ओफ !

दारा—अर्थात्जान, यह न समाझिएगा कि मैं यह तरत चाहता हूँ । यह जग इसके लिए नहीं है । मैं यह तरत और ताज नहीं चाहता । मैंने दर्शनशास्त्र और उपनिषदोंमें इमसे कहीं बढकर सन्तनत पाई है । मैं सिर्फ आपके तरत और ताजकी हिफाजतके लिए यह जग करना चाहता हूँ ।

जहा०—तुम जाते हो इन्साफके तरतको बचाने, घुरे कामकी सजा देने, इम मुल्ककी करोटी बेगुनाह मोली-भाली रिआयाको जुल्मके पजेसे छुटाने । अगर यह बग़ावतकी घुरी नियत दवाई न गई, तो मुगलोंने यह सन्तनत कितने दिन तक ठहर सकती है ?

दारा—मैं वादा करता हूँ कि मैं उनमेंसे किसीकी जान न लूँगा, और किसीको सताऊँगा भी नहीं । सिर्फ उन्हें कैद करके अर्थात्जानकी सिद्दमतमें हाजिर कर दूँगा । अगर आपका जी चाहे, तो उस वक्त उन्हें माफ कर दीजिएगा । मैं चाहता हूँ, वे जान लें कि बादशाह

सलामतके दिल्ले मुहब्बत है, मगर वे कमजोर नहीं हैं ।

शाह०—(सड़े हाकर) अ-छा तौ यही सही । उन्हे मात्रम हो जाय कि शाहजहाँ सिर्फ बाप नहीं है, वह बादशाह भी है । जाओ दारा, ले यह पजा । मैंने अपने अरित्यारात तुमको दे दिये । रागियोंको मजा दो । (पजा देना)

दारा—तौ हुक्म अन्वानान ।

शाह०—लेकिन यह मजा अकेले उहींके लिए नहीं है । यह सजा मेरे लिए भी है । बाप जब लडकेको सजा देता है, तब बेटा सोचता है कि बाप बड़ा नेट है । वह यह नहीं जानता कि बाप जो बेट उठाना है, उसका आग हिस्सा उसी बापकी ही पीठपर पड़ता है । (प्रस्थान)

जहा०—दारा, उन लोगोंके जो पक्काणक प्रगप्त करनेका सब्र भी तुमने कुछ सोचा है ?

दारा—वे कहते हैं कि अन्नाके गीमार होनेकी खबर गलत है । बादशाह सलामत अब इस दुनियामे नहीं हैं और मैं उनके नामपर अपना ही हुक्म चला रहा हूँ ।

जहा०—यही सही । इसमे गैरमुनामिब क्या है ? तुम बादशाहके बटे बटे और होनहार गालिए-मुल्क हो ।

दारा—तु मेरी बादशाहत कुत्तल करना नहीं चाहते ।

[सिपरके साथ नादिराका प्रवेश ।]

सिपर—अब्बा, क्या वे आपका हुक्म नहीं मानना चाहते ?

जहा०—भला देखा तौ, उनकी इतनी हिम्मत हो गई ! (दृश्य)

दारा—क्यों नादिरा, तुम मिर क्यों लटकाये हो ।—कहो, तुम क्या कहना चाहती हो ?

नादिरा—सुनोगे ? मरी एक बात मानोगे ?

दारा—नादिरा, मैंने कब तुम्हारा कहना नहीं माना ।

नादिरा—यह मैं जानती हूँ । इसीमें कुछ कहनेकी हिम्मत करती हूँ । मैं कहती हूँ कि तुम यह जग न ठानो भाई-भाईकी लडाई न छोडो ।

जहा०—यह कैसे हो सकता है ?

नादिरा—सुनो—

दारा—क्या ! कहते कहते चुप क्यों हो गई ?—तुम ऐसा करनेके लिए जोर क्यों दे रही हो ?

नादिरा—कल रातको मैंने एक बहुत बुरा स्याप देखा है ।

दारा—वह क्या ?

नादिरा—इस वक्त मैं उसमें ध्यान न कर सकूँगी । वह बड़ा ही खौफनाक है ! नहीं जी, इस लडाईकी जरूरत नहीं—

दारा—नादिरा, यह क्या !

जहा०—नादिरा, तुम परप्रेजकी लटकी हो । एक मामूली जगसे टरकर आँसू बहा रही हो ? उस तरह घबराई हुई बातें कर रही हो ? ऐसी तरी हुई नज्दमे देख रही हो ? ये बातें तुम्हें नहीं मोहती ।

नादिरा—तुम नहीं जानती कि वह कैसा डिलको दहला देनेवाला स्याप था !—वह बड़ा ही खौफनाक था, बड़ा ही खौफनाक था !

जहा०—दारा, यह क्या ! तुम क्या सोचते हो !—इतने कमजोर हो ! जोम्हें इतने बसमें हो ! बापका हुक्म लेकर अब क्या तुम्हें औरतका हुक्म लेना पडगा ? याद रखो दारा, तुम्हारे सामने तुम्हारा मुश्किल फर्ज है । अब सोचनेके लिए वक्त नहीं है ।

दारा—सच है नादिरा, इस लडाईका रुकना गैरमुमकिन है । मैं जाता हूँ । सचमुच हुक्म देने जाता हूँ । (प्रस्थान ।)

जो मजबूत रहता है, उसे यह बेजकूफ नहीं समझ सकता। यह मेरी बातोंको बेतुकी समझकर हँसता है। मुरादको एक तरफ लड्डाई-का ग्यन्ज है और दूसरी तरफ वह ऐयाशीमें डूबा हुआ है। समझ-दारी और तबियतदारी उसके लिए एक ऐसी जगह है जहाँ उसकी पहुँच नहीं।—वह देखो, उधर ही आ रहा है।

[मुरादका प्रवेश ।]

मुराद—दिलदार, जगमें हमारी फतह हुई। खुशी मनाओ, ऐश करो। बहुत जल्द अब्बाको तस्त परसे उतारकर मैं खुद उस-पर बैठूँगा।—दिलदार क्या सोचते हो?—तुम तो सिर हिला रहे हो?

दिल०—जहाँपनाह, मुझे आज एक नई बातका पता लगा है।

मुराद—क्या!—सुन।

दिल०—मैंने सुना है कि ग्यूनी जानवरोंमें एक यह दस्तूर है कि मौ-बाप अपने बच्चोंको खा टालते हैं।—है या नहीं?

मुराद—हाँ है तो। पर इससे मतलब?

दिल०—लेकिन यह दस्तूर शायद उनमें भी नहीं है कि बच्चे मौ-बापको खा नायें।

मुराद—नहीं।

दिल०—यह दस्तूर सुदाने शायद आदमियोंमें ही चला दिया है दोनों ही ढग होने चाहिए न। यह उसकी अकलकी ग्यूनी है।

मुराद—अकलकी ग्यूनी है। हा हा हा। बड़े मजेकी बात कही दिलदार।

दिल०—लेकिन इन्सानकी अकलके आगे खुदाकी अकल की चीज नहीं। इन्सानने मुदासे भी चाल चली है।

मुराद—यह कैसे !—

दिल०—जहाँपनाह, उस रहीम (दयामय) ने इन्सानको दौत किम लिए दिये थे ? नरर चत्रानेके लिए दिये थे, वैसे बाहर निकालनेके लिए नहीं । लेकिन इन्मान उन दौतोस चत्राना तो है ही, उनसे हँसता भी है । तत्र यही कहना पडेगा कि उसने खुदासे चाल चली है ।

मुराद०—यह तो कहना ही पडेगा—

दिल०—सिर्फ हँसते ही नहीं, बहुतसे लग मानो हँसनेकी को-शिर्गमें लग रहते हैं, यहाँ तक कि इमके लिए रुपये भी गर्च करते हैं ।

मुराद—हा हा हा !

दिल०—खुदाने इन्सानको जीभ दी थी—नाक माझम पडता है, जायका चखनेके लिए । लेकिन आदमियोने उससे बोलनेका काम लेकर तरह तरहकी जत्राने (भाषाये) पैदा कर ली ।—खुदाने नाक क्यों दी थी ? मौस लेनेके लिए ही तो ?

मुराद—हाँ, और शायद भँपनेके लिए भी ।

दिल०—लेकिन इन्सानने उमपर भी अपनी गहादुरी दिखाई है । वह उम नाकके ऊपर चश्मा लगाता है । इसमें कोई शक नहीं कि खुदाने नाक इम लिए नहीं बनाई थी ।—बहुत लागोकी नाक सोतेमे खरगटे भी लेती है ।

मुराद—हाँ, खरगटे लेती है । लेकिन मेरी नाक नहीं खरती ।

दिल०—जी जहाँपनाहकी नाक रातको नहीं, दिन-दोपहर खरती है ।

मुराद—अच्छा, अपनी जत्र बने तत्र खिबा देना ।

दिल०—जहाँपनाह, यह चीज तो ठीक-उस खुदाकी तरह है

जिसकी कोर्ट मरत नहीं है। ठीक ठीक डिग्राई नहीं जा सकती। क्योंकि डिग्रा देनेकी हालत जब होती है, तब यह बजती ही नहीं।

मुराद—अच्छा दिलदार, खुदाने इन्सानको कान भी दिये हैं। इन्सानने उनके बारेमें क्या बहादुरी दिखा पाई है ?

दिल०—लीजिए, इससे तो मैंने यह एक बड़े मतलबकी बात ईजाद कर डाली। कान पकड़नेसे दिमाग ठिकाने आजाता है। लेकिन गर्त यह है कि कानोंके पीछे एक दिमाग होना चाहिए। क्योंकि बहुतेके दिमाग (समझ) होता ही नहीं।

मुराद—दिमाग नहीं होता। यह क्या! हा हा—लो, ये भाई साहब आ रहे हैं। इस वक्त तुम जाओ।

दिल०—बहुत गूब। (प्रस्थान ।)

[दूसरी ओरसे औरगजेबका प्रवेश ।]

मुराद—आओ भाईसाहब, मैं तुमको गलेसे लगा लें। तुम्हारी ही अहमन्दीकी बदौलत हमे फतह नसीब हुई है। (गले लगाता है ।)

औरग०—मेरी अहमन्दीसे, या तुम्हारी बहादुरी और दिलेरीसे ? तुम्हारे जैसी बहादुरी बेशक कहीं देखनेको नहीं मिल सकती। ताजुब ! तुम मौतमें मिल्कुल डरते ही नहीं।

मुराद—आसफगोंकी यह बात मुझे याद है कि जो लोग मौतको डरते हैं, ये जिन्दा रहनेके लायक नहीं।—हाँ, यह तो कहा कि तुमने जसन्तसिंहके चालीस हजार मुगल सिपाहियोंपर कौनसा जादू टाल दिया था ? ये आखिरको जसन्तसिंहकी ही राजपूत-फौजके आगे बन्दूकें तान कर खड़े हो गये। मुझे तो वह सब जान-दूफासा तमाशा जान पडा।

औरग०—मैंने लडाई छिड़नेके पहल दिन कुछ सिपाहियोंको

मुठा बनाकर इस पार भेज लिया था । ये मुगलोंने फौजका यह कह कर भटका गये कि काफिरकी मातहतमें, काफिरक साथ, काफिर दागकी तरफमें लटना बड़ा बुरा काम है, और जुगनकी रुस नाजायज है । वम, उन सिपाहियोंने अभीपर यकीन कर लिया ।

मुराद—तुम्हारी चाले निगल्ले ओर ताज्जुबमें डार तनयाली होती है ।

ओरग०—भाई जान, सिर्फ एक तरकीबपर कायम रहनेमें कामयाबी हामिल नहीं हो सकती । नितनी तरकीबे हा, मयसो सोचना चाहिए ।

[महम्मदका प्रवेश ।]

ओरग०—महम्मद क्या खबर है ?

महम्मद—अध्याजान, महाराजा जमरन्तसिंह अपनी फौज त्रिय घाटेपर चढे हमारे पडावके चारों तरफ चरम काट रहे हैं ।— क्या हम लोग उनपर बारा कर दें ?

ओरग०—नहीं ।

महम्मद—इसका मतलब क्या है ?

ओरग०—रत्नपूतीका प्रमट । इसी प्रमटमें राजा जमरन्तसो नीचा देखना पड़ेगा । मे निस् प्रक्त फौज ट्रेकर नर्मदाक किनारे पहुँचा था उमी प्रक्त अगर ये मुझपर बारा कर दते तो मेरा प्रचना मुश्किल था ।—मुझे जरूर शिकस्त गानी पडती । क्योंकि तत्र-तरक तुम आय ही नहीं थे, ओर तुम्हारी फौज भी मफरकी रकी हुई थी । लेकिन मैने सुना कि इम तरहका बारा करना बहादुरीक गिल्लाक समझकर ही राजासाहब तुम्हारे आजानेकी राह दगते रहे । जत्र इतना प्रमड है तत्र उन्हें जरूर नीचा देखना पड़ेगा ।

महम्मद— तो हम लोग उनमें छेड़छाड़ न करें ?

औरंग— नहीं । हमारे पटापके चारों तरफ चक्कर काटनेसे अगर नसयन्तसिंहको कुछ तसल्ली हो, तां ने एक नहीं सौ टफा चक्कर काटा करे । जाओ । (महम्मदका प्रस्थान ।)

औरंग०— शाहजादेको लडाईका बडा शोक है ।—मेरा यह छटका सीमा ऊँचे ग्वयाग्वान और निडर है । अच्छा मुराद, अब मैं जाता हूँ । तुम भी जाकर आराम करो । (प्रस्थान ।)

मुराद— अच्छी बात है ।—दरवान, शराब और तनायफ ।— (प्रस्थान ।)

॥ ————— ॥

तीसरा दृश्य ।

स्थान— काशीमें शुजाकी फौजका पडाव ।

समय— रात ।

(शुजा और पियारा ।)

शुजा— पियारा, तुमने कुछ सुना ? दाराका बेटा सुलेमान इस जंगमें मेरा मुकाबला करनेके लिए आया है ।

पियारा— तुम्हारे बड़े भाई दाराका बेटा दिल्लीसे आया है ? मच ? तो जल्द अपने साथ दिल्लीके लड्डू लाया होगा । तुम जल्दी उसके पास आदमी भेजो । मेरी तरफ ताक क्या रहे हो ! आदमी भेजो—

शुजा— लड्डू कैसे ! उसके साथ लडाई होगी—

पियारा— उसके साथ अगर बेलका मुरब्बा हो, तो और भी अच्छा है । मुझे यह भी नापसन्द नहीं है । लेकिन दिल्लीके लड्डू— सुना है, जो खाता है यह भी पछताता है और जो नहीं खाता वह

भी पठताता है । दोनों तरह जब पठताना ही है, तब न ग्याकर पछताने-
को बनिस्वत साकर पठताना ही अच्छा—जल्दी आदमी भजे ।

शुजा—तुम एक मोममे इतना बक गई कि मुब जा कुछ कहना
था, उमके कहनेकी तुमने पुरमत ही नहीं दी ।

पियारा—तुम और न्या रहोगे ! तुमतो मिर्फे जग कराग । —

शुजा—और जो कुछ कहना होगा, वह शायद तुम कहोगी ।

पियारा—इसमे शक क्या है ! हम औरने जिस तरह समझाकर
साफ साफ कह सकती हैं उस तरह तुम लग कह सकते हो ? अगर
तुम लोग कुछ कहनेको तैयार होते हो, ता पहल ही ऐसी गड-
बट कर देते हो और बोवनेकी ऐसी ऐसी गलतियों करते हो कि—

शुजा—कि ?

पियारा—और लगत (कोप) के आगे लफन तो तुमै लोग
मानते ही नहीं । बात करनेमे तुम कलम कदमपर गलतियों करते
। । गूंग लफजो और आगे कायद (व्याकरण) को मिलाकर ऐसी
गडी जवान (भाषा) बोलते हो कि उसे बहुत ही कुबडी होकर
बलना पडता है ।

शुजा—लेकिन मुझे तो तुम्हारी भी ये बात बहुत दुरस्त नहीं
मान पडती ।

पियारा—जान कैसे पडे ! हम लोगोकी बात समझनेकी लिया-
त ही तुम लोगोको नहीं है ! या खुदा ! ऐसी अहमद औरतोकी
बतको ऐसी अहसे खारिज मर्द जात के हाथमे सोप लिया है कि
स्की बनिस्वत अगर तुम औरतोको गर्म और खोलते हुए तेलके
टाहमे चढा देते, तो शायद ये इस हालतसे मजेमे रहती ।

शुजा—खैर—तुम बके जाओ ।

पियारा—शेरकी ताकत दौंताम हाथीकी ताकत मूँटम बैसेकी ताकत मागाम, घोडेकी ताकत पिउले दोनो पैराम, हिन्दोस्तानियेकी ताकत पीठम और औरताकी ताकत जवानम होती है ।

शुजा—नहीं, औरताकी ताकत उनकी नजरम होती है ।

पियारा—ऊँ ! नजर पहटे पहल जरर कुठ काम करती है, लेकिन आगे जिन्तगीभर तो मर्दपर औरत इमी जवानके जोस हुकूमत करती है ।

शुजा—नहीं, देख पडता है, तुम मुझे बात कहनेका मंका ही न दोगी । सुनो, मैं क्या कह रहा था—

पियारा—यही तो तुममे पत्र है । तुम्हारी बातका टीराचा (भूमिका) इतना होता है कि वह पूरा ही नहीं हो पाता है और तुम बीचमे ही मतलबकी बात भूल जाने हो ।

शुजा—तुम अगर थोड़ी तेर और उम तरह बने नाओगी, तो मचमुच ही मैं कहनेकी बात भूल जाऊँगा ।

पियारा—तो चटपट रुह डालो । देर न करे ।

शुजा—ले सुनो—

पियारा—कहो । लेकिन मुगनगर (मक्षेप) मे । याद रखना—एक मौसम ।

शुजा—इम वक्त मेरे खिलाफ होकर मुझमे लटनेक लिए नगर का लटका सुलेमान आया है । उसके साथ शीकानेरके महाराज पर्यासिह और सिपहसालार दिग्गरो भी है ।

पियारा—अच्छी बात है, एक दिन उन्हें दावत करके खिला टा ।

शुजा—तुम लडकपन ही किये जाओगी । ऐसा मुन्चिल

मामग—बोसनाक लटार्ड—मामने हे और उमे तुम—

पियारा—इसीसे तो मैं उसे जरा आसान बनानेकी कोशिश कर रही हूँ । ऐसे गाढे मामलेको अगर पतला न बनाया जायगा, तो यह हजम कैसे होगा ? हाँ, रुहे जाओ ।

शुजा—अभी राजा जयसिंह मेरे पास आये थे । वे कहते हैं कि शाहशाह शाहजहाँकी मौत अभी नहीं हुई । उन्होंने मुझे शाहशाहके हाथका लिम्बा खत भी दिखलाया । उस खतमें क्या लिखा है, जानती हो ?

पियारा—चली कह डालो । अब मुझसे रहा नहीं जाता ।

शुजा—उस खतमें उन्होंने लिखा है कि अगर मैं अब भी बगालको छोड़ जाऊँ, तो मुझसे यह मन्ना न छीना जायगा । नहीं तो—

पियारा—नहीं तो छीन लिया जायगा । यही न !—जाने दो । अब और ता कुठ कहनेका नहीं है ? अब मैं गाना गाऊँ ?

शुजा—जानती हो मैंने जमानमें क्या लिख लिया है ? मैंने लिख दिया है—‘ अच्छी बात है, मैं जिना लडे-भिड बगालको छोड़ जाता हूँ । अब राजानक हुक्म और दरबारको मैं मिर-और्वोम कुबूल कर मरुता हूँ । लेकिन तगरका हुक्म मैं किसी तरह माननको तैयार नहीं हूँ । ’

पियारा—तुम मुझे गाने न दोगे । आप ही प्रक चले जा रहे हो । अब मैं न गाऊँगी ।

शुजा—नहीं गाओ । तब मैं चुप हूँ ।

पियारा—येगो बर बनना । बोलना नहीं । क्या गाऊँ ?

शुजा—जा नी चले ।—नहीं । कोई मुहब्बतका गाना गाओ ।

मा गाना गाओ, नितकी जमानमें मुहब्बत, नितके मतदरमें मुहब्बत, नितके इयारोंमें मुहब्बत नितकी ताउमें मुहब्बत और नित-

सके सममे भी मुहव्वत हो ।—ऐसा ही गाना गाओ, मैं सुनूँगा ।

(पियारा गाना शुरू करती है ।)

शुजा—पियारा दृग्पर एक तरहके ओरगुल्की आपान सुन पडती है ।—जैसे वादल गरज रहा है ।—यह देखो ।

पियारा—नहीं, तुम गाने न दोगे । मैं जाती हूँ ।

शुजा—नहीं यह कुछ नहीं है । गाओ ।

ठुमरी—पजारी ठेका ।

इस जीवनमे साध न पूरी हुई प्यारकी प्यारे ।

छोटा हूँ यह हृदय, इसीसे, इससे नाय हमारे—

प्रेम-पुज आकुल असीम यह उमड पडे हग द्वारे ॥ इस० ॥

अपना हृदय हृदयसे तेरे मिला रखूँ कितना ही,

तो भी युगल हृदय विच मानों, खटके विरह सदा ही ॥ इस० ॥

यह जीवन, यह दुनिया मेरी, कुछ टिनकी है, इसमे-
सारा प्रेम दे सकूगी क्या, रसिया, रसमे-रिसमे ॥ इस० ॥

चाहूँ जितना, और अधिक ही जी चाहे—मैं चाहूँ ।

देकर प्रेम न मिटती आसा, ऐसी अकथ कथा हूँ ॥ इस० ॥

बेहद होवे जगह, अमर हों प्रान, मिटे सब वाधा ।

तव पूजेगी आस-प्रेम दे चुके जनम-श्रन साधा ॥ इस० ॥

शुजा—यह जिन्दगी एक खुमारी है । बीच बीचमे रजावकी तरह बहिस्तसे एक तरहका डगारा आकर समझा देता है कि इस खुमारीका जागना कैसा मीठा और प्यारा है ।—यह गाना उम्मी बहिस्तकी एक झनकार है । नहीं तो यह इतना मीठा और दिल

शुजा—(चौककर)

पियाग—हो प्यारे ! इतनी रातको तोपकी आवाज—इतनी नजदीक !—दुश्मन तो उम पार है !

शुजा—यह क्या ! फिर यही आवाज ! मे दूरा गए ! (प्रस्थान) शम

पियाग—यही तो मैं भी सोच रही हूँ ! बार बार यही तोपकी आवाज सुन पड़ती है ! यह उमगसे भरा फौजका गोर-गुल, हथियारोंकी जनकार, रातका गहग सन्नाटा मानो एकाएक चोट लगनेसे चिछा उठा है ।—यह मत्र क्या है !

[तेजीसे शुजाका फिर प्रवेश ।]

शुजा—पियारा, श्राद्धाही फौजने एकाएक मेरे पडापर धारा कर दिया है ।

पियाग—गना कर दिया है ! यह क्या !

शुजा—हाँ ! महाराजा जयसिंहने यह दगावाजी की है !—मे लडाईके मंत्राने जा रहा हूँ । तुम भीतर जाओ । कुछ डर नहीं है पियारा—

पियाग—गोर-गुल गिरे धीरे बढ़ता ही जा रहा है । ओ यह क्या है—

(प्रस्थान ।)

(नेपथ्यम कोलाहल सुन पड़ता है ।)

[एक ओरस मुलेमान और दूसरी ओरस दिलेर गोंका प्रवेश ।]

मुल्मान—सूनेदार (शुजा) कहाँ है ?

दिलेर०—वे उम दरियाके तरफ भाग गये हैं ।

मुल्मान—भाग गये ? दिलेरखों, उनका पीछा करो ।

[दिक्करका प्रस्थान । जयसिंहका प्रवेश ।]

मुल्मान—महाराजा, हम लोगोंकी फतह हुई ।

सके सममें भी मुहब्बत हो ।—ऐसा ही गाना गाओ, मैं सुनूँगा ।

(पियारा गाना शुरू करती है ।)

शुजा—पियास, दूरपर एक तरहके औरगुल्फी आज सुन
खती है ।—जैसे बादल गरज रहा है ।—यह देखो !

पियारा—नहीं, तुम गाने न दोगे । मैं जाती हूँ ।

शुजा—नहीं वह कुछ नहीं है । गाओ ।

दुमरी—पजायी ठेका ।

इस जीवनमें साध न पूरी हुई प्यारकी प्यारे ।

छोटा हूँ यह हृदय, इसीसे, इससे नाथ हमारे—

प्रेम-पुज आकुल असीम यह उमड पडे हग द्वारे ॥ इस० ॥

अपना हृदय हृदयसे तेरे मिला रखूँ कितना ही,
तो भी युगल हृदय बिच मानों, खटके विरह सदा ही ॥ इस० ॥

यह जीवन, यह दुनिया मेरी, कुछ दिनकी है, इसमें—
सारा प्रेम ठे सकूगी न्या, रसिया, रसमें-रिसमें ॥ इस० ॥

चाहूँ जितना, और अधिक ही जी चाहे—मैं चाहूँ ।
देकर प्रेम न मिटती आसा, ऐसी अकथ कथा हूँ ॥ इस० ॥

वेहद होवे जगह, अमर हों प्रान, मिटे सज बाधा ।
तब पूजेगी आस-प्रेम दे चुके जनम-ऋतन साधा ॥ इस० ॥

शुजा—यह जिन्दगी एक सुमारी है । बीच बीचमें रवावकी तरह
बहिस्तसे एक तरहका डगारा आकर ममज्ञा देता है कि इस सुमारीकी
जागना कैसा मीठा और प्यारा है !—यह गाना उसी बहिस्तकी एक
झनकार है । नहीं तो यह इतना मीठा और दिलचस्प कैसा होता ।

[नेपथ्यमें तोपकी आवाज ।]

शुजा—(चौंकर) यह क्या !

पियारा—हाँ प्यारे ! इतनी रातको तोपकी आवाज—इतनी नजदीक !—दुग्धन तो उम पार है !

शुजा—यह क्या ! फिर वही आवाज ! मैं ड्रेग्ग थाऊँ ! (प्रस्थान) ^{शम}

पियारा—यही तो मैं भी सोच रही हूँ ! बार बार वही तोपकी आवाज सुन पड़ती है ! यह उमगसे भरा फौजका शोर-गुल, हथियारोंकी झनकार, रातका गहरा सन्नाटा मानो एकाएक चोट लगनेस चिल्ला उठा है ।—यह सत्र क्या है !

[तेजीसे शुजाका फिर प्रवेश ।]

शुजा—पियारा, रादशाही फौजने एकाएक मेरे पडावपर धारा कर दिया है ।

पियारा—वारा कर दिया है ! यह क्या !

शुजा—हाँ ! महाराजा जयसिंहने यह दगावाजी की है !—मे लडार्कने मैदानमे जा रहा हूँ । तुम भीतर जाओ । कुछ डर नहीं है पियारा—

पियारा—शोर-गुल वीरे वीर पड़ता ही जा रहा है । ओ यह क्या है—

(प्रस्थान ।)

(नेपथ्यमे कोलाहल सुन पड़ता है ।)

[एक ओरसे सुलेमान और दूसरी ओरसे दिलेर साँका प्रवेश ।]

सुलेमान—सूत्रेदार (शुजा) कहाँ हैं ?

दिलेर०—वे इम दरियाके तरफ भाग गये हैं ।

सुलेमान—भाग गये ? दिलेरवाँ, उनका पीठा करो ।

[दिअरसाँका प्रस्थान । जयसिंहका प्रवेश ।]

सुलेमान—महाराजा, हम लोंगोंकी फतह हुई ।

जयसिंह—आपने क्या रातको ही नदी पार होकर दुश्मनकी फौजपर आक्रमण कर दिया था ?

सुल्तान—हाँ, मगर क्या उन्होंने यह मोचा न होगा कि मैं पना करूँगा ? लेकिन तो भी मुझ इतनी जल्दी कामयाब होनेकी उम्मीद न थी ।

जयसिंह—सुल्तान शुजाकी फौज विन्कुट तयार न थी । जब आपके लगभग आठमी मग चुरु, तब भी अच्छी तरह उनकी जाँच नहीं सुली थी ।

सुल्तान—उसका सच ? चचाजान ता मन्ने और मुस्तेद सिपाही है । वे पहलेहीमे रातको आना होना मुमकिन समझते होंगे ।

जयसिंह—मेने बादशाह सलामतकी तरफसे उनसे सुलह कर ली थी । वे लडाईं करने बिना ही बगालको छोड़ जानेके लिए राजी हो गये थे । वहाँ तक कि छोड़ जानेके लिए नाव तैयार करनेका हुक्म भी दे चुके थे ।

[दिलेरशाह फिर प्रवेश ।]

दिलेर—शाहजादा साहब, सुल्तान शुजा बाल-प्रबोधके साथ नावपर बैठकर भाग गया ।

जय०—यह देखिए—उसी सजी हुई नावपर ।

सुले०—पीछा करो—जाओ फौजको हुक्म दो ।

(दिलेरशाह फिर प्रस्थान ।)

सुले०—राजासाहब, आपने कसक दुश्मन यह सुलह की थी ?

जय०—सुद बादशाहके हुक्मसे ।

सुले०—अध्यापनने ता मुझे कुछ लिखा ही नहीं । और तुमने भी मुझसे पहले नहीं कहा ।—तुम बड़े धैर्यरुप हो ।

जय०—बादशाहने मना कर दिया ग।

सुद०—फिर झूठ बोलते हो ।—जाओ । (क्यानिहका प्रस्थान ।)

सुरे०—बादशाहका कुठ ओर हुकम है और मेरे अन्त्याजानका कुठ और हुकम है । क्या यह भी मुमकिन है !—अगर यही हो तो ! राजासाहबको भेने नाहक प्रताया । और अगर बादशाहका ऐसा ही हुकम हो तो !—इपर अन्त्याने लिखा ह कि “शुजाका मय बादशाहके कंठ कर लो ।”—नहीं मैं अन्त्याके हुकमकी तामील करंगा । उनका हुकम मेरे लिए सुदाके हुकमके परापर हैं ।

चौथा दृश्य ।

स्थान—जोधपुरका किला । समय—सरेरा ।

[महामाया और चारणिया ।]

महामाया—फिर गाओ, चारणियो, फिर गाओ ।

सोहनी । ताल—वमार ।

(१)

वह तो गये ह युद्धमे जय प्राप्त करनेको वहा ।

ऐसे महा आह्वानमे निर्भय चिचरनेको वहाँ ॥

यश मानके हिन प्राणका बलिदान देनेको वहाँ ।

होने अमर, मथने मरणके निन्धुको देखो वहा ॥

उठ वीर-बाला, ताल त्रै, पौंड दग, गौरव गहे ।

सधरा रहो, विधवा बनो, ऊचा तुम्हाग सिर रहे ॥

(२)

निज शत्रुके रणके निमंत्रणमें गये हैं वे वहा ।

मिलते कवचमे हैं कत्रच, बढता विकट निग्रह वहा ॥

होता कठिन परिचय खुले खर सद्गर्हीकी धारसे ।
 भ्रूभगसे गर्जन मिले, ल्यो रक्त रक्तासारसे ॥
 उठ वीर-बाला० ॥

(३)

अनुनय, दिखाना पीठ या, होता नहीं रणमें वहाँ ।
 लाशें तड़पती सैकड़ों बस एकही क्षणमें वहाँ ॥
 तर खूनसे काली बलासी मौत नाचे चावसे ।
 वाजे वजे जयके, उधर है आर्त्तनाद जुझावसे ॥
 उठ वीर-बाला० ॥

(४)

ज्वाला बुझाने सब गये हैं वे वहाँ संग्राममें ।
 आते अभी होंगे यहाँ जय प्राप्त कर निज धाममें ॥
 अथवा अमर होकर मरेगे वीरके उत्कर्षसे ।
 ले गोदमें महिमा वही तुम भी मरोगी हर्षसे ॥
 उठ वीर-बाला० ॥

पहरेदार—महारानी साहब !

महामा०—सिपाही, क्या खबर है ?

पहरे०—महाराज लौट आये हैं ।

महामा०—आगये ? युद्धमें विजय पाकर लौट आये ?

पहरे०—जी नहीं, इस युद्धमें वे हारकर लौटे हैं ।

महा०—हारकर लौट आये हैं ! तुम क्या कहते हो ! कौन हारकर लौट आया है ?

पहरे०—महाराज ।

महा०—क्या ! महाराज जसवन्तसिंह हारकर लौट आये हैं ?

यह क्या मे ठीक सुन रही हूँ ! नोपपुरक महाराज—मेरे भ्रामी—
युद्धमें हारकर लौट आये हैं ! क्षत्रियोकी शरताका ऐसा अन्त—ऐसी
बुरी दशा—होगई है !—असम्भव है ! गीर क्षत्रिय युद्धमें हारकर घर
नहीं लौटते ! महाराज जसवन्तसिंह क्षत्रियोके शिरोमणि हैं । युद्धमें
हार हो सकती है । अगर वे युद्धमें हार गये, तो युद्धभूमिमें मरे पड़े
होंगे । महाराज जसवन्तसिंह युद्धमें हारकर कभी लौट ही नहीं सक-
ते । जो लौटकर आया है वह महाराज जसवन्तसिंह नहीं है । वह
उनका भेष बरकर आनेवाला कोई प्यार है । उसे किलेके भीतर न आने
देना । किलेका फाटक बंद कर लो । गाओ, चारणियो, फिर गाओ ।

(चारणियों फिर वही गीत गातीं हैं ।)

पाँचवाँ दृश्य ।

स्थान—ऊमर मैदान । समय—रात ।

[औरगजेव अकेले खड़े हैं ।]

औरग०—आसमानमें काले बादल उभरे हैं । ओंभी आसनी ।
एक तरिया पार कर आया हूँ, यह और एक दगिया है । बड़ा ही
खौफनाक है—इसमें बड़ी बड़ी लहरें उठ रही हैं । इसका पाट
इतना लम्बा चौड़ा है कि दूसरा किनारा नहीं देख पड़ता । तो भी
पार करना पड़ेगा—और वह भी इसी छोटीसी नावमें ।

[मुरादना प्रवेश ।]

औरग०—क्या मुगद, क्या खबर है ?

मुराद—आसके साथ एक लाम घुडमगर फौज और सौ
तीर्थे हैं ।

औरग०—तो यह खबर ठीक है ?

मुराद—ठीक है, हमारे हृगणक जासूमका यही अदाज है ।

औरग०—(दहलते दहलते) यह—नहीं—यही तो !

मुराद—दाराने इसी पहाटके उस पार अपना पड़ाव डाला है ।

औरग०—इसी पहाटके उम पार ?

मुराद—हां ।

औरग०—यही तो !—एक लाख सवार—और—

मुराद—हम लोग ऋल संघरे ही—

औरग०—चुप रहो ! बोले नहीं । मुझे सोचने दो ।—इतनी फौज दाराने पास आर्ट कहांसे ?—और एक सौ तोपें !—अच्छा, मुराद, तुम इस वक्त जाओ, मुझे सोचने दो । (मुरादका प्रस्थान ।)

औरग०—यही तो !—इस वक्त पीछे हटनेसे फिर वचाव नहीं हो सकता, लटनेमें भी जान गंजानी पड़ेगी ।—एक सौ तोपें ! अगर—नहीं—यह हो ही कैसे सकता है ।—हूँ (लबी सँस छोड़ना) आरगजेव ! अत्रकी या तो तुम्हारी तफ़्दीर खुल गई और या हमेशाके लिए फूट गई ।—फूटना ?—गैरमुमकिन है । खुलना ?—डेकिन किम तरकीबसे ?—कुछ समझमें नहीं आता ।

[मुरादका प्रवेश ।]

औरग०—तुम फिर क्यों आये ?

मुराद०—उधरसे शायस्ताखों तुमसे मिलने आये हैं ।

औरग०—आये हैं ? अच्छी बात है । इज्जतके साथ उन्हें यहाँ लाओ । नहीं, मैं खुद आता हूँ । (प्रस्थान ।)

मुराद—यही तो ! शायस्ताखों हमारे पड़ावमें क्यों आया है !—मार्टिनाह्न भीतर ही भीतर क्या-मतलब सोच रहे हैं, समझमें

नहीं आता । शायस्ताखों क्या दागस दगाप्राजी करेगा / देखा
नापगा । (श्वर उधर टहलन लगता है ।)

[औरगजेवना प्रवेश ।]

औरग०—भाई मुराद टमी उक्त आगर जानके लिए मय फा-
जके रवाना होना होगा । तैयार हो जाओ ।

मुराद—यह क्या !—इतनी रातको ?

औरग०—हाँ इतनी रातको । पटापके ढेर जैसेक तम पड रह-
ने है । ताराकी फौजपर हम धाना नहीं करेगा । इस पहाडक दुमर
किनारेम आगरे जानकी एक गड है । उसीमे चलेगे । ताराको अरु
न होगा । तारामे पहल हमे आगरे पहुँचना है । तैयार हो जाओ ।

मुराद—तो क्या अभी ?

औरग०—उहस करनेके लिए उक्त नहीं है । तगत चाहो, तो
कुछ कहो सुना नहा । नहीं तो याद रखो, मोतका सामना है ।

(दोनोंमा प्रस्थान ।)

छठा दृश्य ।

स्थान—प्रयागमें सुलेमानका पडाव ।

समय—तीसरा पहर ।

[जयसिंह और दिलेरखॉ ।]

दिलेर०—आखिरी, लडाईमें भी औरगजेवकी फतह हुई है ।
सुना राजासाहब ?

जयसिंह—मैं पहले ही जानता था ।

दिलेर०—शायस्ताखोंने दगाप्राजी की । आगरेक पास बड़ी

भारी लडाई हुई । उसमें हारकर दाग द्रोआवकी तरफ भाग गये हैं । उनके पास सब मिलाकर मैं साथी हूँ और तीस लाख रुपये हैं ।

जय०—उनको भागना ही पटता । मैं जानता था ।

दिलेर०—आप तो सभी जानते थे ।—दाग भागनेके वक्त जल्दी-के मोरे बहुतसा रुपया नहीं ले जा सके । लेकिन उसके बाद सुना, बड़े बादशाहने मत्तान खच्चरोपर मोहरे लादकर दाराने लिए भेजी । राहमें जाटोने वह रकम भी छुट्ट ली ।

जय०—बेचारा दारा ।—लेकिन यह मैं पहले ही जानता था ।

दिलेर०—औरगजेब और मुराद फतहयात्रीकी खुशी मनाते हुए आगरेमे टाखिल हुए हे । मतलब यह कि हम वक्त औरगजेब ही बादशाह है ।

जय०—यह सब मैं पहलेहीसे जानता था ।

दिलेर०—औरगजेबने मुझे खतमें लिखा है कि अगर तुम मय अपनी फौजके सुलेमानको छोडकर चले जाओ, तो मैं तुम्हे बहुत बडी रकम इनाम दूंगा । आपको भी शायद यही लिखा है ।

जय०—हाँ ।

दिलेर०—राजासाहब, इस जगके आखिरी नतीजेके बारेमे आपकी क्या राय है ?

जय०—मैंने कल एक ज्योतिषीसे इसके बारेमें पूछा था । उन्होंने कहा, हम समय भाग्यके आकाशमें औरगजेबका सितारा बुलन्द हो रहा है, और दागका सितारा डूब रहा है ।

दिलेर०—तो फिर हम लोगोंको इस वक्त क्या करना चाहिए ?

जय०—मैं जो करूँ, उसे तुम देखते भर जाओ ।

दिलेर०—अच्छा । इन सब बातोंमें मेरी अइ उतना काम नहीं

करती । मगर एक बात—

जय०—चुप रहो, सुलेमान आ रहे हैं ।

[सुलेमानका प्रवेश ।]

नयर्मिह और दिलेर०—शाहजादा साहब, नमस्तीम ।

मुले०—राजासाहब, अत्रा हारकर भाग गये ।—यह बाद-शाह शाहजहाँका खत है । (पत्र देना ।)

जय०—(पत्र पढ़कर) कहिए शाहजादा साहब, क्या किया नाय ?

मुले०—शाहशाहने मुझे अत्राजानकी कुमकको फौज लेकर जन्ट रवाना होनेके लिए लिखा है । मे अभी जाऊंगा । तबू उतार लिये जाये और फौजको हुकम दिया जाय कि—

नय०—शाहजादासाहब, मेरी समझमें और भी ठीक ग्वरर पानेके लिए स्कना मुनामिज है । क्यों रॉमाहब, तुम्हारी क्या राय है ?

दिलेर०—मेरी भी यही राय है ।

मुले०—इसमे पढ़कर ठीक ग्वरर और क्या हा सकती है ? गुद बादशाहके दस्तखत है ।

जय०—मुझे यह जाल जान पड़त है । ग्वरर बादशाह गुद कुड काम नहीं कर सकते । उनकी आवा आवा ही नहीं है । आपके पिताकी आज्ञा पाये बिना हम यहसे एक कदम भी नहीं हट सकते । क्यों दिलेरगो ?

दिलेर०—आपका कहना ठीक है ।

मुले०—लेकिन अत्रा तो भाग गये हैं । ये हुकम कैसे दे सकते हैं ?

नय०—तो हमको अब उनकी जगहपर औरगजेरकी आज्ञाकी राह देखनी पड़ेगी—अगर यह बात सच हो ।

सुले०—क्या ! औरगजेबके हुकमकी—अपने वालिदके दुश्म-
नके हुकमकी—मैं राह देगूगा ?

जय०—आप न देखे, हमको तो देखनी पड़ेगी—क्यो दिलेरखों ?

दिलेर०—हाँ, मौका तो कुछ ऐसा ही आ पडा है !

सुले०—तो क्या आप दोनों आदमियोने मिलकर दगावाजी
करनेकी ठान ली है ?

जय०—हम लोगोका दोष क्या है ?—बिना उचित आज्ञा पाये
हम किम तरह कोई काम कर सकते हैं ? लाहौरमें शाहजादा दारा-
के पास जानेकी कोई उचित और माननीय आज्ञा हमने नहीं पाई ।

सुले०—मैं तो हुकम दे रहा हूँ ।

जय०—आपकी आज्ञासे हम आपके पिताकी आज्ञाके विरुद्ध
कुछ नहीं कर सकते । क्यो खों साहब ?

दिलेर०—कैसे कर सकते हैं ।

सुले०—समझ गया । आप लोगोने दगावाजी करनेकी ठान ली
है । अच्छा, मैं सुद ही फौजको हुकम देता हूँ ।

(सुलेमानरा प्रस्थान ।)

दिलेर०—राजामाहब, आप यह क्या कर रहे हैं ?

जय०—टरनेकी कोई बात नहीं है । मैंने सब सिपाहियोंको
अपनी मुट्ठीमें कर रक्खा है ।

दिलेर०—आप जैसा होशियार कामकाजी आदमी मैंने कोई
नहीं देखा । लेकिन यह काम क्या ठीक हो रहा है ?

जय०—चुप रहो !—इस समय जरा अलग रहकर तमाशा
देखना ही हमारा काम है । अभी हम एकदम औरगजेबकी तरफ झुक
भी न पड़ेगे । कुछ रुकना होगा । क्या जाने—

[सुलेमानफा फिर प्रवेश ।]

सुले०—फौजके सिपाही भी मर डम राग्यगामीमें शामिल हैं । आप लोगोंके हुक्मके वगैर ये टममे मस हाना नहीं चाहते ।

जय०—यही फौजी दस्तर है ।

सुले०—राजामाहव, बादशाहने मुझे अत्र्याकी कुमरुपर जानेको लिखा है । अत्र्याके पाम जानेके लिए मेरा नी छटपटा रहा है । मैं आप लोगोंसे मिन्नत करता हूँ ।—डिलेरखों, दाराका बेटा मे टाप जोटकर आप लोगोंमे यह भीख माँगता हूँ कि आप न जायें—मेरे सिपाहियोंको मेरे साथ अत्र्याके पाम लाहौर जानेका हुक्म दे दे । मैं देखूँ, इस बागी औरगजेवमे कितनी बहादुरी है । अगर मैं अपने इन डिलेर सिपाहियोंको लेकर अत्र भी जगके मैदानमें पहुँच सकता—राजासाहब !—डिलेर गों ! हुक्म दीजिए । इस महारानीके बदले मैं जिन्दगी भर गुलाम रहूँगा ।

जय० - बादशाहकी आज्ञाके बिना हम यहाँमें एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते ।

सुले०—डिलेरखों, मैं—शाहजादा दाराका बेटा, घुटने टेककर—यह भीख माँगता हूँ । (घुटन टेकता है ।)

डिलेर०—उठिए शाहजादा साहब, राजा साहब न दे मैं हुक्म देता हूँ । मैंने दाराका नमरु खाया है । मुसलमानोंकी कौम नमकहराम नहीं होती । आइए शाहजादा साहब, मैं अपनी सारी फौज लेकर आपके साथ लाहौर चलता हूँ ।—ओर कसम खाता हूँ कि अगर शाहजादा मुझे छोड़ न देंगे तो मैं खुद शाहजादाको कभी न छोड़ूँगा । मैं जम्रत पडन पर शाहजादा दाराके बेटेके लिए जान देनेको तैयार हूँ । आइए शाहजादा साहब, मैं इन्हीं उक्त हुक्म

देता हूँ ।

(मुलेमान और दिलेरखाका प्रस्थान ।)

जय०—लो, खों साहब एक बूँद पानीमें ही गल गये । अपनी भलाईकी तुमने परा ही नहीं की । मैं क्या करूँ ? अपनी सेना लेकर मैं आगे चले ।

(प्रस्थान ।)

सातवाँ दृश्य ।

स्थान—आगरेका महल । समय—तीसरा प्रहर ।

[शाहजहाँ और जहानारा ।]

शाहजहाँ—जहानारा, मैं बड़े गौरसे औरगजेवकी राह देख रहा हूँ । वह मेरा बेटा, मेरा जर्मर्डे फतहयात्र बेटा है, मेरी लाज और मेरी इज्जत है ।

जहानारा—इज्जत ! अब्बा, इतना मकार इतना झूठा है वह ! उस दिन जब मैं उसके खेममें गई, तब उसके डँगसे ऐसा मालूम पड़ा कि वह आपको बहुत मानता है और आपकी बड़ी इज्जत करता है । उसने कहा मुझसे यह बड़ा भारी कसूर हो गया है, मैंने यह बड़ा भारी गुनाह किया है । साथ ही साथ उसने दो-एक बूँद आँसू भी गिरा दिये । उसने कहा, दाराकी तरफ जो बड़े बड़े लायक आदमी है, उनके नाम अगर मुझे मालूम हो जायँ, तो मैं ब्रेवडक अन्वाजानके हुक्मके मुताबिक मुगदको छोड़कर दाराकी तरफ हो जाऊँ । मुझे उसकी उम बातपर यकीन हो गया और मैंने बदनसीब दाराके तरफदार दोस्तोंके नाम उसे बतला दिये । वरम, उसने उन्हें उसी वक्त कैद कर लिया । मैंने दाराको रक्षा भेज दिया था । राहमें वह रुका औरगजेवने हथिया लिया । वह ऐसा दगाबाज और फरेबी है ।

शाह०—नहीं जहानाग, यह यह नहीं कर सकता। ना ना ना।
मे इस बातपर यकीन न करूँगा।

जहा०—आप यह एक दफा इस किल्ले में। मैं घोखा देकर चालाकीसे उसे कैद करूँगी। यहाँ मैंने हथियारबन्द सौ पिपाही ठिपा रखे हैं। उमे मैं आपके सामने ही कैद करूँगी।

शाह०—जहानारा, यह क्या बात है!—यह मेरा हर्तोत्तम, तुम्हारा भाई है। नहीं जहानारा, ऐसा करनेकी जरूरत नहीं है। यह आये। मैं उम माहत्रतसे अपने काबू में कर लूँगा। उससे भी अगर यह काबू में न आयेगा—तो उमके आगे, मराठे—उमके आगे घुटने टेककर तुम सब लोगोंकी और अपनी जानकी भीख माँग लूँगा। रुहूँगा, हम और कुछ नहीं चाहते, हमें जीने दो, हम लोगोंको आपमें एक दूसरेसे मुहब्बत करनेका मौका दो।

जहा०—अन्ना, इस बेइज्जतीसे मैं आपको बचाऊँगी।

शाह०—बेइज्जतीसे इन्तिजा करनेमें आपकी बेइज्जती नहीं हो सकती।

[महम्मदका प्रवेश।]

शाह०—यह देखो महम्मद आगया! तुम्हारे अन्ना कहाँ है?

महम्मद—बाबानान, मुझे मालूम नहीं।

शाह०—यह क्या! मैंने तो सुना था, यह यहाँ जानेके लिए घोड़ेपर सवार हो चुका है।

मह०—किसने कहा! ये तो घोड़ेपर चढ़कर बाबाशाह अकबरकी कब्रपर नमाज पढ़ने गये हैं। मुझे जहाँ तक मालूम है, यहाँ आनेका उनका प्रिन्सुल इरादा नहीं है।

जहा०—तो तुम यहाँ क्यों आये हो!

मह०—इस किल्लेके शाही महलपर कब्जा करनेके लिए।

देता हूँ ।

(सुलेमान और दिलेरखाका प्रस्थान ।)

जय०—लो, खों साहब एक वूँद पानीमे ही गल गये । अपनी भलाईकी तुमने पर्गी ही नहीं की । मैं क्या करूँ ? अपनी सेना लेकर मैं आगे चलूँ ।

(प्रस्थान ।)

श्री जहाँपना

सातवाँ दृश्य ।

स्थान—आगरेका महल । समय—तीसरा प्रहर ।

[शाहजहाँ और जहानारा ।]

शाहजहाँ—जहानारा, मैं बड़े शौरसे औरगजेवकी राह देख रहा हूँ । यह मेरा बेटा, मेरा जर्मोमर्द फतहयात्र बेटा है, मेरी लाज और मेरी इज्जत है ।

जहानारा—उज्जत ! अब्बा, इतना मक्कार इतना झूठा है वह उस दिन जब मैं उसके खेमेमे गई, तब उसके ढँगसे ऐसा मालूम पड़ा कि यह आपको बहुत मानता है और आपकी बड़ी इज्जत करता है । उसने कहा, मुझसे यह बड़ा भारी कसूर हो गया है, मैंने बड़ा भारी गुनाह किया है । साथ ही साथ उसने दो-एक वूँद आँसू भी गिरा दिये । उसने कहा, दाराकी तरफ जो बड़े बड़े लायक आदमी हैं, उनके नाम अगर मुझे माझूम हो जायें, तो मैं बेघडक अब्बाजाद के हुक्मके मुताबिक मुरादको छोड़कर दाराकी तरफ हो जाऊँ । उसकी इस बातपर यकीन हो गया और मैंने बदनसीब दारा तरफदार दोस्तोंके नाम उमे बतला दिये । बस, उसने उन्हें उसी प्रकार कैद कर-लिया । मैंने दाराको रुका भेज दिया था । गहमे वह रुका भी औरगजेवने हथियार लिया । यह ऐसा दगावान और फरेबी है

शाह०—नहीं जहानाग, यह वह नहीं कर सकता। ना नाना।
मैं इस बातपर यकीन न करूँगा।

जहा०—आप यह एक दफा इस क्रिये में। मैं गोला देकर चालाकीसे उसे कैद करूँगी। यहाँ मेन हथियारगन्दर सौ सिपाही ठिपा रक्खे हैं। उसे मैं आपके सामने ही कैद करूँगी।

शाह०—जहानाग, यह क्या जान है!—यह मेरा लरतजिगर, तुम्हारा भाई है। नहीं जहानाग, ऐसा करनेकी जरूरत नहीं है। यह आप। मैं उसे मोहच्यतसे अपने काबूमें कर लूँगा। उमसे भी अगर यह काबूमें न आयेगा—तो उमके आगे, मैं गालिद—उसके आगे पुटने टेकरुकर तुम मर लोगोकी और अपनी जानकी भीख माँग लूँगा। कर्हूँगा, हम और कुछ नहीं चाहते, हम जीने दो, हम लोगोको आपमें एक दूसरेसे मुहच्यत करनेका मौका दो।

जहा०—अन्धा, इस वैडज्जतीसे मैं आपको बचाऊँगी।

शाह०—प्रेतेमे इन्तिजा करनेमें आपकी वैडज्जती नहीं हो सकती।

[महम्मदना प्रवेश।]

शाह०—यह देखो महम्मद आगया। तुम्हारे अन्धा कर्हो है ?

महम्मद—ग्रागजान, मुझे माडूम नहीं।

शाह०—यह क्या। मैंने तो सुना था, यह यहाँ आनेके लिए बाँटेपर सगर हो चुका है।

मह०—किसने कहा। वे तो गोडेपर चटकर ग़दशाह अकररकी कत्रपर नमाज पढने गये हैं। मुझे जहाँ तक माडूम है, यहाँ आनेका उनका प्रिलकुल डराग नहीं है।

जहा०—तो तुम यहाँ क्या आये हा।

मह०—इम किलेके शाही महलपर कब्जा करनेके लिए।

देता हूँ ।

(मुलेमान और दिलरसाका प्रस्थान ।)

जय०—लो, खों साहब एक बूँद पानीमे ही गल गये । अपनी भलाईकी तुमने पर्या ही नहीं की । मैं क्या करूँ ? अपनी सेना लेकर मैं आगे चले ।

(प्रस्थान ।)

सातवाँ दृश्य ।

स्थान—आगरेका महल । समय—तीसरा प्रहर ।

[शाहजहाँ और जहानारा ।]

शाहजहाँ—जहानारा, मैं बड़े शौकमे औरगजेवकी राह देख रहा हूँ । वह मेरा बेटा, मेरा जॉर्मर्ड फतहयात्र बेटा है, मेरी लाज और मेरी इज्जत है ।

जहानारा—इज्जत ! अब्या, इतना मक्कार इतना झूठा है वह । उस दिन जब मैं उसके खेममें गई, तब उसके टँगसे ऐसा मालूम पडा कि वह आपको बहुत मानता है और आपकी बटी इज्जत करता है । उसने कहा, मुझसे यह बड़ा भारी कसूर हो गया है, मैंने यह बड़ा भारी गुनाह किया है । साथ ही साथ उसने दो-एक बूँद आँसू भी गिरा दिये । उसने कहा, दाराकी तरफ जो बड़े बटे लायक आदमी है, उनके नाम अगर मुझे मालूम हो जायें, तो मैं बेवटक अब्जाजानके हुक्मके मुताबिक मुरादको छोडकर दाराकी तरफ हो जाऊँ । मुझे उसकी इम बातपर यकीन हो गया और मैंने बदनसीब दाराके तरफदार दोस्तोके नाम उसे बतला दिये । वम, उनमें उन्हें उमी वक्त कैद कर लिया । मैंने दाराको रक्षा भेज दिया था । राहमें वह रक्षा भी औरगजेवने दियी लिया । वह ऐसा दगाबाज और फरेबी है ।

शाह०—नहीं जहानारा, यह वह नहीं कर सकता । ना ना ना ।
 मैं इस बातपर यकीन न करूँगा ।

जहा०—आपने वह एक दफा इस फ़िल्म में मेरी बोली देकर चालाकीसे उसे कैद करेगी । यहाँ मेने हथियारबन्द सो निपाही ठिपा रक्खे हैं । उसे मे आपका मामने ही कैद करेगी ।

शाह०—जहानारा, यह क्या बात है !—वह मेरा छरतेजिगर, तुम्हारा भाई है । नहीं जहानारा, ऐसा करनेकी जरूरत नहीं है । वह आपने । मे उम मोहब्रतमे अपने काबूमें कर लूँगा । उससे भी अगर वह काबूमें न आयेगा—तो उमके आगे, मैं गालिट—उसके आगे घुटने टेककर तुम सब लोगोकी और अपनी जानकी भीख मँग लूँगा । रुहूँगा, हम और कुछ नहीं चाहते, हमे जीने दो, हम लोगोको आपसमे एक दूसरेसे मुहब्रत करनेका मौका दो ।

जहा०—अब्या, इस बेइज्जतीसे मे आपको प्रचाऊँगी ।

शाह०—पेटेमे इन्तिजा करनेमे आपकी बेइज्जती नहीं हो सकती ।

[महम्मदका प्रवेश ।]

शाह०—यह देखो महम्मद आगया । तुम्हारे अन्ना कहा है ?

महम्मद—बाबानान, मुझे मालूम नहीं ।

शाह०—यह क्या ! मेने तो सुना था, वह यहाँ आनेके लिए घाटेपर सवार हो चुका है ।

मह०—किसने कहा ! मे तो घोड़ेपर चढ़कर बादशाह अकबरकी कन्नपर नमाज पढ़ने गये है । मुझे जहाँ तक मालूम है, यहाँ आनेका उनका प्रिलकुल इगदा नहीं है ।

जहा०—तो तुम यहाँ क्यों आये हो !

मह०—इस किलेके आही महलपर काना करनेके लिए ।

शाह०—यह क्या !—नहीं महम्मद, तुम हँसी कर रहे हो।

मह०—नहीं ब्राजाजान, यह मच बात है।

नहा०—हो ! तो मैं तुमको ही कैद करूँगी। (सीटी बजाना।)

(हथियारबन्द पाँच सिपाहियोंका प्रवेश।)

जहा०—महम्मद हथियार दे दो।

मह०—स्यो !

जहा०—तुम मेरे कैदी हो। सिपाहियों, हथियार ले लो।

मह०—तो मुझ भी अपने सिपाहियोंको बुलाना पटा।

(सीटी बजाना।)

[दस शरीर रक्षक सिपाहियाक प्रवेश।]

मह०—मेरी फौजके हजार सिपाहियोंको बुलाओ।

जहा०—एजाब सिपाही ! उन्हें किलेके भीतर किसने घुसने दिया ?

शाह०—मैंने। सन कसूर मेरा है। मैंने मुहब्बतके मारे, और गजेबने गतम जो मुझसे मॉगा था, सब उसे दिया था।—ओ मैंने ग्नागम भी यह नहीं सोचा था।—महम्मद !

मह०—ब्राजाजान !

शाह०—तो क्या अब मैं यही ममक लें कि मैं तुम्हारा कैदी हूँ ?

मह०—कैदी तो नहीं त पर हों आप बाहर नहीं जा सकते।

शाह०—मैं ठीक ठीक समझ नहीं सकता। यह क्या सच्चा ब्राजाजान है या यह सब स्वाप देग रहा हूँ ? मैं कौन हूँ ? मैं शाहशाह शाहजहाँ हूँ ? तुम मेरे पोते, मेरे सामने तलवार लिये सडे हो।—यह क्या है ?—एक ही दिनमें क्या दुनियाका सब कायदा उलट गया ! एक दिन जिसकी गुम्सेसे लगे और देगकर ओरगजेब

जमीनमें बँस सा जाता था—उमके—उसके—बेटेके हाथोंमें—वही
 आहजहाँ कैदी है ।—जहानारा !—रुहों गई ! यह है ! यह क्या
 आहजादी है ? तेरे होठ हिल रहे हैं मुँहमें आवाज नहीं निकलती,
 तू फीकी और सूखी नजरमें एकटक दृग् रही है, तब गुलामी गाले-
 पर म्याही फेर दी गई है ।—क्या हुआ बेटा !

नहा०—कुछ नहीं अत्रा !—लेकिन मर टिकी हाउत आप
 कैसे जान गये !—मे सिर्फ यही मोच रही हूँ ।

आह०—महम्मद ! तुमने मोचा है कि म डम नायसावी, टन
 जुन्मको—जहाँ इसी तरह उठ बैठ किसी मन्दगारके न हानेमें चुप-
 चाप सह लेगा ! तुमने मोचा है, यह शर उठा है, उर्माएँ नुम्हारी
 लोते सह लेगा ! मे बूटा आहजहाँ हूँ मली, लेकिन मे आहजहाँ
 हूँ ।—ए कौन है ! ले आओ मरा जिम्मे-उरार और तयार ।—
 क्या, कोई नहीं है ?

मह०—बाबाजान आपके गाम सिपाही क्रियेमें बाहर निकाल
 दिये गये हैं ।

आह०—किसने उन्हें निकाल लिया ?

मह०—मेने ।

आह०—किसके हुक्मसे ?

मह०—अत्राके हुक्मसे । डम उक्त मेरे ये हजार सिपाही ही
 जहाँपनाहकी हिफाजतका काम करेंगे ।

आह०—महम्मद ! तगावान !

मह०—मे सिर्फ अत्राके हुक्मकी तामीर कर रहा हूँ । मे और
 कुछ नहीं जानता ।

आह०—ओरखतेम !—नहीं जान यह कहाँ आर मे ग्या !—

जहानाग तब भी अगर, आज मैं इस किल्लेके बाहर जाकर एकदफा अपने मिपाहियोंके सामने खड़ा हो सकता, तो अब भी इस बूटे शाहजहाँकी जयजयकारसे औरगजेब जमीनमें घुटने टेक देता।— एक दफा, सिर्फ एकदफा बाहर निकल पाता।—महम्मद ! मुझे एकदफा बाहर जाने दो।—एकदफा ! सिर्फ एकदफा !

मह०—बाबाजान, मेरा कमूर नहीं है। मैं अब्बाके हुक्मका पात्र हूँ।

शाह०—और मैं क्या तुम्हारे अब्बाका अब्बा नहीं हूँ ? वह अगर अपने गालिदपर ऐसा जुल्म कर रहा है, तो तुम क्यों फिर उसके हुक्मके पात्र हो !—महम्मद, आओ, किल्लेका फाटक खोल दो।

मह०—माफ कीजिएगा बाबाजान। मैं अब्बाके हुक्मको टाक नहीं सकता।

शाह०—न खोलोगे ? न खोलोगे ? देखो, मैं तुम्हारे बापका बाप—बीमार, लागर और जईफ हूँ। मैं और कुछ नहीं चाहता। सिर्फ एक दफा इस किल्लेके बाहर जाना चाहता हूँ। कमम साता हूँ, फिर लौट आऊँगा।—न जाने दोगे !—न जाने दोगे !

मह०—माफ कीजिएगा बाबाजान—यह मुझमें न हो सकेगा।
(जाना चाहता है।)

शाह०—ठहरो महम्मद ! (कुछ सोचनेके बाद राजमुकुट और पहलंगपरस डुरान उठाकर) देखो महम्मद ! यह मेरा ताज और यह मेरा कुरान है ! यह कुरान लेकर मैं कसम ग्याता हूँ कि बाहर जाकर मत्र रियायाकी भीटके मामने यह ताज मैं तुम्हारे सिरपर रख दूँगा। किसीकी मजाल नहीं जो चूँ करे। मैं आज बूढ़ा, लागर और

लकनेकी रीमारीसे व्याचार जरूर हूँ । लेकिन बादशाह शाहजहाँ इतने दिनोंसे इस तरह हिन्दोस्तानकी सन्तनत करता आरहा है कि यह अगर एक टफा अपनी फौजक मिपाहियोंके सामने जाकर खड़ा हो मके, तो सिर्फ उसकी आग बरसानेवाली नजरमें ही सा औरगजेर खाक हो जायें ।—महम्मद, मुझे डाड दो । तुम हिन्दोस्तानकी बादशाहत पाओगे । कसम खाता हूँ महम्मद ।—मैं सिर्फ इस दगाजाज जागसाज औरगजेरम एक टफा समझूँगा ।—महम्मद ।

मह०—बानाजान, मारू कीनिपगा ।

शाह०—देखो, यह लटकोका गेल नहीं है । मैं खुद बादशाह शाहजहाँ कुरान लेकर कमम गाता हूँ । देखो, एक तरफ तुम्हारे अन्वाका हुकम है, ओर एक तरफ हिन्दोस्तानकी बादशाहत है, उसी दम जो चाहे पमन्द कर ले ।

मह०—बानाजान मैं अन्वाके हुकमके खिलाफ कोई काम नहीं कर सकता ।

शाह०—एक बादशाहतक लिण भी नहीं ।

मह०—दुनियाभरकी बादशाहतके लिण भी नहीं ।

शाह०—देखा महम्मद सोच ले । अच्छी तरह सोच ले—

हिन्दोस्तानकी सन्तनत—

मह०—मैं यहाँ खड़ा होकर अब यह बात नहीं सुनूँगा । यह लालच प्रदुत बड़ा है । दिल पटा ही कमजोर है । बानाजान, मारू कीनिपगा । (प्रस्थान ।)

शाह०—चला गया । चला गया । जहानारा, चुप क्यों है ?

जहा०—औरगजेर ! तुम्हारा पसा सजादतमद लडका । वह

अपने बापके हुक्मको माननेका फर्ज अदा करनेमें एक बड़ी भारी मत्तनतको छत मार कर चला जाता है—और तुमने अपने बूटे बापको उसको ऐसी मोह्वरतके बदलेमें बोखा देकर ढगासे कैद कर लिया है !

शाह०—सच कहती है बेटी !—ये औलादमाले लोगो ! पिना सुद खाए अपने बेटोको मत गिलाओ, इन्हे छातीसे लगाकर मत चुल्लओ, इन्हे हँसानेके लिए प्यारकी हँसी मत हँसो । ये सत्र पह-सान-फरामोगीके पौत्रे हैं । ये सत्र छोटे छोटे शैतान हे । इन्हे आयापेट खिलाओ । इन्हे रोज मधेरे शाम कोटोमे मारो । हमेगा लड लड ऑरिे दिखाकर टोटते रहो । तो जायद ये महम्मदकी तरह तुम्हारे तायेर ओर सआदतमद होग । उन्हें यह सजा देनेमे अगर तुम्हारे कलेजेमे कमक हो, तो तुम उस कलेजेक टुकडे टुकडे कर डालो आँखोमे आँसू आये, तो आँसे निकारकर फेर दो, दु उससे चिछोनेको जी चाहे, तो दोनो हाथोसे अपना गला घोट लो ।—ओ—

जहा०—अन्ना, इस फेदखानेके फोनेमे बैठकर लचार बच्चाकी तरह रोने-भीक्ष्णे-कुडनेसे कुठ न होगा, छत खाये हुए उले आदमीकी तरह बैठकर दौत पीसने और कोमनेसे कुल न होगा, किसी भरते हुए गुनहगारकी तरह आखिरी पत्तमे पकटफा खुदाको ग्हीम करीम कहकर पुकारनेमे कुठ न होगा । उठिए, चोट खाये हुए जहरीले नागकी तरह फन फैलाकर फुफकारते हुए उठिए, बच्चा छिन जाने पर बाधिन जेमे गरज उठती है जैमे ही गरज उठिए, जुन्ममे पागल दुई कौमकी तरह जाग उठिए । होनीकी तरह मन्त, हमदकी तरह अन्धे और शैतानकी तरह बेगहम बन जाइए । तन नससे पेय जायगा ।

शाह०—अच्छी बात है ! ऐसा ही हो ! आ बेटा, तू भी मेरी मददगार हो । मे आगकी तरह जल उठे, तू हवाकी तरह चल । मैभू-चापकी तरह इस मन्तनतको उल्ट-पुल्टकर सत्यानाश कर दे, तू समदरकी लहरोंकी तरह आकर उमे डुगा दे । मे जग ले आऊँ, तू मरी ले आ । आ तो, एकदफा इस मन्तनतको उल्ट-पुल्ट करके चल दे । फिर चाह नहीं जाय—कुछ हर्न नहीं ! तोपकी तरह शीले उटाते हुए प्रलट होकार आममानम ला जायें ।

दूसरा अंक ।



पहला दृश्य ।

स्थान—मथुराम औरगजेवका पढाव ।

समय—रात ।

[दिलदार अकेला सटा है ।]

दिल०—मुराद ! कैसे धीरे-धीरे सीढी-सीढी तुम गिरते जा रहे हो ! एक तो शराबके बहावमें बहे जा रहे हो, फिर उसपर तपायफोंके नाजो-अदा (हाय-भाय) का तफान भी जोरोजोरसे जारी है । तुम जरूर डूबोगे । अब देर नहीं है । मुराद ! तुम्हें देखकर मुझे कभी कभी रज हां आता है । तुम बहुत ही भोले हो । शाहजादिके कहने सुननेसे औरगजेवको दगासे कैद करने गये थे । पानीमें बसकर मगर-मच्छमें दुश्मनी !—आज उमके बडलेकी दायत है ।—बह जहॉपनाह आगये !

(मुरादमा प्रवेश ।)

मुराद—भाई माहव अभीतक नमाज पढते हे !—उनकी जिन्दगी आकबत-अन्देगी (परलोकके ब्यान) में ही गुजरी । इम जिन्दगीका मजा उन्होंने कुछ भी न पाया ।—दिलदार, क्या सोच रहे हो ?

दिल०—जहॉपनाह, सोच रहा हूँ कि मछलियोंके डैनें न होकर अगर पग होते, तो जान पडता है, गायद वे उडाने लगतीं ।

मुराद—अरे, मछलियोंक अगर पख होते, तो वे चिडिया ही कहलानी ? उन्हे कोई मछली कहता ही क्यों ?

दिल०—हाँ ठीक है । यह मैं पहलू नहीं सोच सका था । इसीसे इस गडबटमे पड गया । अब साफ समझमे आ रहा है ।—अच्छा जहाँपनाह, वक्तग ऐसे चानगर बहुत कम टग्व पडते हैं । यह पानी-में तैरता है, जमीनपर चलता है और आममानम भी उडता है ।

मुगड—उममे और मौजूदा दलीलसे क्या ताल्लुक है बेगकूफ़ !

दिल०—उम रहीम करीमने त्तेना पैर नीचेके हिस्सेमें टिये थे चलनेके लिए, यह बात साफ जान पडती है ।

मुगड—हाँ, साफ जान पडती है ।

दिल०—लेकिन पैर अगर सोचनेका काम करना शुरू कर दे, तो निमागको सही रखना मुश्किल हो जायगा ।—अच्छा जहाँपनाह, आप यह जानते हैं कि खुदाने जानरोंको मिर सामने ओर फूँछ पीछे क्यों दी है ?

मुगड—अरे बेगकूफ़, अगर उनका मिर पीछे होता, तो यही उनका मामनेका हिस्सा होता ।

दिल०—ठीक कहा जहाँपनाह ।—कुत्ता तुम क्यों हिलागा है, इसका सत्रय मामूली नहीं है ।

मुगड—क्या सत्रय है ?

दिल०—कुत्ता दुम हिलाता है, इमका सत्रय यही है कि कुत्तमें दुममे ज्यादाह जोर है । अगर दुममें कुत्तमे ज्यादाह जोर होता, तो दुम ही कुत्तेको हिलाती ।

मुगड—हा हा—यह देखो भांडि माहत्र आ गये ।

[औरगजेबका प्रवेश ।]

औरग०—तुम आगये भाई, अपने ममगरेको भी साथ लेते आये ?

मुराद—हाँ भाई साहब, दिलबस्तगीके लिए मसखरा भी चाहिए और तयायफ भी ।

ओरग०—हाँ, जरूर चाहिए ।—कल एकाएक बहुतसी नान-यान परीजमाल तयायफें आकर मौजूद हुईं । तुम जानते हो मुझे ता यह शोक है नहीं । मैं तो अब मक्के शरीफको जा रहा हूँ । मैंने सोचा, उनमें तुम्हारा दिलबहलाप हो सकता है । ये बहुत उम्दा शराबकी कई बोतलें भी मुझे फिरगियोंमें मिल गई हैं ।—भला देखो, यह शराब कैसी है । (बोनल देना ।)

मुराद—देरों ! (पात्रम डालकर पीना) वाह ! तुहफा है ! वाह ! दिलदार, क्या सोच रहा है ? जरामी पियेगा ?

दिल०—जहाँपनाह, मैं एक वान सोच रहा था कि मव जानकर सामने ही क्या चलते हैं ?

मुराद—क्यों ? पीनेकी तरफ नहीं चल सकते, इसलिए ।

दिल०—नहीं । इसका सबब यह है कि उनकी दोनों ओरि सामनेकी तरफ हैं । लेकिन जो अंग्रे हैं, उनका सामने चलना और पीछे चलना बराबर है—एक ही बात है ।

मुराद—तुहफा है ! ये फिरगी अगब बहुत अच्छी बनाते हैं । (फिर पीना) भाई साहब, तुम भी जरासी पी लो ।

ओरग०—नहीं । तुम तो जानते ही हो, मुझे शराबसे परहेज है । कुरानमें शराब पीनेकी मनाही है ।

दिल०—अबे, नागो, देगो रात है या दिन !

मुराद—कुरानकी मभी हिदायतोंको माननेसे दुनियाका काम चल सकता । (मगपा ।)

दिल०—हार्थीमें जितना जोर है, उतनी ही जगर अफ भी होती, तो यह कैसा आकिल जानकर हाना ? तब हार्थीके ऊपर महाव्रत न बैठता, महाव्रतक ऊपर हार्थी ही बैठता । इतनी ताकत-जोड़ने में निम्नको मय मूँटक लिण प्रमती फिरती है—आ ।

ओरग०—नाई, तुम्हाग ममखरा तो रूत्र िड्डीगीवान हे ।

मुराद— यह एक नायाग गोहर है ।—तयायके कहीं हे ?

ओरग०—उस तम्ब्रेम । तुम गुद ही जाकर बुला लाआ ।

मुराद—अभी ला । मुराद चगमे या पेशमे कभी पीछे नहीं हटता ।

(प्रस्थान ।)

(दिलदार “ अर, जागा ” कहकर मुरादक पीछे जाना चाहता है ओर ओरगचर उम गरता है ।)

ओरग०— ठहरो, तुममे कुछ कहना है ।

दिल०—मुझे न मारा बारा, मैं तगत भी नहीं चाहता, मक्का भी नहीं चाहता ।

ओरग०—तुम कौन हा, ठीक कहो । तुम कोरे मसखरे नहीं हो । कौन हा तुम ?

दिल०—म एक पुराना गिरहकट, रोपेनाज चोर हूँ । मेरी आदत है खुशामत, शरागन, जुआचोरी, पानीपन । मैं सियारमे भी ज्यादा मराना, कुत्तसे भी ज्यादा खुशामती जोर चिडियोमे भी बढकर बुद्धिम (लम्पट) हूँ ।

ओरग०—सुना, मुझे मसखरापन पसद नहीं है । तुम क्या काम कर सकत हो ?

दिल०—कुछ नहीं कर सकता । जंभाड़ ले सकता हूँ, अंगड़ाइ ले सकता हूँ, कोई काम कराओ तो उमे विगाड सकता हूँ, गाली-गत्रेज दो, तो उसे समझ सकता हूँ—और—और कुछ नहीं कर सकता ।

औरग०—जाने दो,—समझ गया । मुझे तुम्हारी जम्हरत होगी कुछ डर नहीं है ।

दिल०—भरोसा भी नहीं है ।

[वेश्याओंके साथ फिर मुरादका प्रवेश ।]

मुराद—वाहवाह !—ये डरे !—तुहफा है ।

औरग०—नो तुम अब दिलचस्तीगी करो । मैं जाता हूँ । तुम्हारे ममगरेको भी लिये जाता हूँ । इसकी वानोमे मुझे बटा मजा आता है ।

मुराद—क्या ! आता है न ? कहता तो हूँ, यह एक नायाब गौहर है । अच्छी बात है, इसे ले जाओ । मुझे उम वक्त इसमे भी अच्छी मोहवन मिल गई है ।

(दिलदारको लेकर औरगजेरका प्रस्थान ।)

मुराद—नाचो, गाओ ।

नाचना—गाना ।

[तर्ज—मजा देते हैं क्या यार, तरे बाल घूँघरवाले ।]

ये आये हैं हम यार, तुमको गले लगाने आये ।

हुस्न, हँसी, यह गाना, जो कुछ है सो सब, जाना—
हम आज तुम्हें मनमाना, देंगे देंगे कर मन भाये ॥ आये० ॥

चरनोंमें फूल चढ़ाये, यह हार गलेमे पिन्हायें,
वन दासी तुम्हें रिझाये, अन तो सुरतके वादल छाये ॥ आये० ॥
ये ओठ अमृतके प्याले, पी ले पी ले यार मजा ले ।

सीनेसे खींच लगा ले, पूरा अर्मी बस हो जाये ॥ जाये० ॥
 तन मन धन जीवन सारा, हमने तुमपर ह वारा ।
 दूसरत सुख, प्यार हमारा, तुममे पूरा बस हो जाये ॥ आये० ॥
 यह हवा चमनसे आती, रुश करती, रुशवू लाली ।
 वह जमना भी लहगती, अपना सुन्दर रूप दिखाये ॥ आये० ॥
 ' पी कहा ' परीहा गाता, वह मीठी तान सुनाता ।
 मन लाट-पाट हो जाता, पेसी खिली चादनी पाये ॥ आये० ॥
 इस खिली चांदनीहीमें, मर जाय अगर तो जीमे—
 दुख होगा नहीं, उसीमे मरना जन्नतसे बढ़ जाये ॥ आये० ॥
 तेरे कदमोमे ही रहना, तुझपर मरकर तुझको चहना ।
 मुतलक झूठ नहीं यह कहना, इसक सिपा न कुछ मन भाये ॥ आये० ॥
 पड रह नजरके नीचे, यह चाह यहा तक खींचे—
 लाई है आखे मींचे, हमको, बने न तिन अपनाये ॥ आये० ॥
 कर दो सर्फगज ता आज, बस यह जमान चुप हो आज ।
 प्यारे आशिकके सरताज, दिलबग दिलसे दिल मिल जाये ॥ आये० ॥
 (गान सुनते सुनते मुरादका पचपान और धीरे धीरे खींचे बंद कर लेना ।)

(वेश्याओंका प्रस्थान ।)

[सिपाहिया सहित आगजेयका प्रवेग ।]

औरग०—ब्रोंय ली !

मुराद—(चोकर) कौन ' भाई ' यह क्या ! दगाप्राजी ?

(उठना)

औरग०—अगर हाथ पेर हिलाने तो कल कल टाला !—छोडो मत ! (सिपाही मुरादका बंद कर रत दे ।)

औरग०—इसे आगे ले जाओ । मेरे आह्वान महम्मद सुल-

तान और गायस्ताखोंके हगले कर देना । मैं स्का ठिखे देता हूँ ।

मुराद—इस्का बटला पाओगे—मैं तुमसे समझ लूँगा ।

औरग०—छे जाओ ।

(हिरासतकी हालतमें मुरादका प्रस्थान ।)

औरग०—मेरा हाथ पकड़कर मुझे कहाँ लिये जा रहे हो ? या खुदा ! मैं यह तर्क नहीं चाहता था । तुम्होंने हाथ पकड़कर मुझे इस तर्कपर बिठाया है । क्यों—यह तुम्हीं जानो ।

पहली अंक ————— समाप्त
दूसरा दृश्य ।

स्थान—जागरेके किल्ला शाही महल ।

समय—प्रातः काल ।

[अकेले शाहजहाँ ।]

शाह०—मूरज निकल आया वैसा ही, जैसा चमकीला और सुगंधित रंगका हमेशा निकलता करता है । आममान वैसा ही नीच है, यह जमना उसी तरह टटलाती—बल खाती हुई अपनी पुरानी चाक्रे फले-ले करती बह रही है, उस पारके दररनोंका नीला रंग वैसा ही देख पड़ रहा है । मत्र कुल वैसा ही है जैसा कि मैं बचपनसे देखता आ रहा हूँ । मिरा मैं ही बदल गया हूँ । (विपादके स्वरमें) मैं आज अपने ही बेटेकी हिरासतमें हूँ । मैं आज औरतोंकी तरह लाचार और बन्धुकी तरह कमजोर हूँ । बीच-बीचमें गुस्सेसे गरज उठता हूँ, लेकिन यह बे-मौमिमके वादलका गरजना—फजूलका हाथ हाथ करना है । इस तरह कुटकुटकर मैं आप भीतर ही भीतर फलता जा रहा हूँ । आ ! हिन्दास्तानके बादशाह शाहजहाँकी आन

यह कैसी हालत ! (एक गमपर हाथ टुटकर वसुनाकी ओर एस्टक देराना)—यह कैसी आगान है ! यह ! फिर ! फिर !—यह कान ? जहानारा !

[जहानाराका प्रवेश ।]

शाह०—जहानारा, यह कैसा शोगगुल है ? यह फिर !—मुना (उत्सुक भावसे) क्या तग अपनी फौज और तोंप माय लिए फतहयान होकर आगे लाए आया है ? आआ वेदा ! उस वेदभाकी वेदनी और जुमका बदला ले ।—क्यों जहानारा, क्यों क्या मंद ली ? समझा वेदी—यह दाराकी फतहयारीकी सुझावरी नहीं है—यह ओर एक पुरी गम है । ठीक है न ?

जहा०—हाँ अत्रानान !

शाह०—म जानता हूँ, उन्नसीनी अकेला नहीं आती अपन साथ नई नई आफते भी ले आती है । जत्र आफतोका मिलमिला शुरू हुआ है तत्र यह अपना पूरा तग लिवाय विना नहीं रह सकता । क्यों वेदी, कौनसी बुगी गवर है ! यह कैसा शोग गु है !

जहा०—ओगजेय आन राटशाह हाकर डिडीके तगपर बैठा है । आगेरेम आन उमीका जन्मा है—उमीका यह शारोगुड है ।

शाह०—(जैसे मुना ही गही, शम दगमे) क्या ! ओगजेय—उसने क्या किया ?

जहा०—यह आन डिडीके तगपर बैठा है ।

शाह०—जहानारा, त क्या कह रही है ! मैं विन्दा हूँ, या म गया ? औरगजेय—नहीं—गैर मुमकिन है ! जहानारा, तेरे मुननेम भूट हुई है । यह कहा हो सकता है ! औरगजेय—औरगजेय यह काम नहीं कर सकता । उसका तग अभी तक जीता है ।—उसमे

क्या कुछ भी ममजदारी चाकी नहीं रही ? क्या उसकी आँखोंमें कुछ भी दुनियाकी शर्म नहीं है ?

जहाँ०—(काँपते हुए स्वरमें) जो गरस बूढ़े चापको दगासे कैर कर सकता है—उसे 'जिन्दा-उरगो' बना सकता है—वह और क्या नहीं कर सकता !

शाह०—तो भी—नहीं। होगा।—ताजुब क्या है !—ताजुब क्या है !—यह क्या ! जमीनसे काल धुओं निकलकर आसमानको चढ़ रहा है। आसमान स्याह हो गया ! शायद दुनिया उलट-पलट गई !—यह यह ! नहीं, क्या मैं पागल हुआ जा रहा हूँ !—यह तो वही नीला आसमान है, जैसा ही मारु-सुथरा सुहाना मरेरेका रक्त है ! कुछ भी तो नहीं हुआ।—ताजुब ! (कुछ चुप रहकर) जहानारा !

जहाँ०—अब्या !

शाह०—(गद्गदस्वरमें) त बाहर क्या देख आई ?—दुनियाका काम क्या ठीक उसी तरह चल रहा है ? माँ अपनी ओलादोको दूध पिला रही है ? औरते अपने जौहरोका घर देख रही है ? नोकर मालिकोंकी खिदमत कर रहे हैं ? लोग फकीरोंको भीख दे रहे हैं ? देख आई—कि इमारते जैसी ही ग्वटी है ! रास्तेमें लोग चल रहे हैं ! आन्ही आदमीको रखा नहीं जाता !—देख आई ! देख आई !

जहाँ०—अज्ञान, कमीनी दुनिया उसी तरह अपना काम कर रही है। कैदी शाहजहाँका खयाल किसीको नहीं है।

शाह०—हाँ ?—मचमुच ?—वे यह नहीं कहते कि यह बड़ा भारी जुल्म है ? वे यह नहीं कहते कि हमारे प्यारे रहमदिल गरीब-परवर शाहजहाँको किमती मजाल है कि कैद कर रक्ते ? वे चिल्लाकर यह

नहीं कहते कि हम बग़ारत करेंगे, और गनेवका पकटकर कंठ कर लेंगे, आगरेके किलेका फाटकर ताटकर अपन शाहजहाँका लाकर फिर तरतपर निठावेंगे !—यह नहीं कहते ? नहीं कहने ।

जहा०—नहीं अन्ना, दुनिया किसीके गिण नहीं मोचती । सबको अपनी अपनी पटी है । मैं अपने ग्याल्मे ऐसे डूबे हुए हूँ कि फल अगर मुरज न निकल, एक जवर्दस्त आग आसमानको जलाती हुई मुरजको जगह दोग करने लगे, ता ये उसीकी लाल रोगनीमें पहलेकी तरह अपना अपना काम करते जायेंगे ।

शाह०—अगर मे एक दफा रिहाई पाकर किलेके बाहर जा सकता ।—जहानारा, मोका नहीं मिलता ? सिर्फ एक दफा त छिपाकर मुझ किलेके बाहर ले चउ मरती है ?

जहा०—नहीं अन्ना, बाहर हजारों हथियारबंद सिपाही पहरा द रहे हैं ।

शाह०—तब भी जुठ हर्ज नहीं ।—एक दिन मैं मुझे ही अपना बादशाह मानते थे । मैंन कभी उनसे बुरा करता नही किया । उनमे बहुतसे ऐमे होंगे जिन्हे रानी टकर मैंन भ्रमों मरनसे बचाया होगा—आफ्तोस डुटाया होगा—कंदसे रिहाई दी होगी । बदलेमे—

जहा०—नहीं अन्ना,—इमान खुशामदी—कुत्तकी तरह खुशामदी—होता है । जो गोश्तका एक छोठडा टे मकता है, उसीके पैरोंके पास खडे होकर वह टुम हिलान लगता है ।—इतना कमीना है ! इतना नागयक है !

शाह०—तो भी मैं अगर एक दफा उनके पास जाकर सटा

क्या कुछ भी समझदारी बाकी नहीं रही ? क्या उमकी आँवोंमें कुछ भी दुनियाकी जर्म नहीं है ?

नहा०—(काँपते हुए स्वरमें) जो गरस बूढ़े बापको दगामे कैद कर सकता है—उसे 'जिन्दा-डरगोश बना सकता है—वह और क्या नहीं कर सकता !

शाह०—तो भी—नहीं। हागा।—ता-जुब क्या है !—ता-जुब क्या है !—यह क्या ! जमीनसे काला धुआँ निकलकर आसमानको चढ़ रहा है। आसमान स्याह हो गया ! गायद दुनिया उल्ट-पल्ट गई !—यह यह ! नहीं, क्या मैं पागल हुआ जा रहा हूँ !—यह तो वही नीला आसमान है जैसा ही मारु-सुथरा सुहावना सवेरेका यक्त है ! कुछ भी तो नहीं हुआ।—ता-जुब ! (रुठ चुप रहकर) जहानारा !

जहा०—अच्चा !

शाह०—(गदगदस्वरमें) तू बाहर क्या देख आई ?—दुनियाका काम क्या ठीक उम्मी तरह चल रहा है ? माँ अपनी औलादोंको दूध पिला रही है ? औरतें अपने गौहरोंका धर देस रही हैं ? नौकर मालिकोंकी पिढमत कर रहे हैं ? लोग फकीरोंको भीख दे रहे हैं ? देख आई—कि इमारते जैसी ही ग्वटी हैं ! रास्तेमें लोग चल रहे हैं ! आदमी आदमीको रखा नहीं जाता !—देस आई ! देख आई !

नहा०—अन्वाजान, कमीनी दुनिया उम्मी तरह अपना काम कर रही है। कैदी शाहजहाँका ग्वयाल किसीको नहीं है।

शाह०—हाँ ?—सचमुच ?—वे यह नहीं कहते कि यह बड़ा भारी जुल्म है ? वे यह नहीं कहते कि हमारे प्यारे ग्मदिल गरीब-परवर शाहजहाँको किसनी मजाल है कि कैद कर रखे ? वे चिह्लाकर यह

तीसरा-दृश्य ।

सीता दूसरे

स्थान—राजशाही गल्लभूषिना एक कितारा ।

समय—दि-रापहर ।

[ये सब बच्चे—सा, नादिरा और सिपर बैठे हैं—] प्रवेश

पाम ही—नादिरा उठना-गो-रही है ।]

नादिरा—प्यारें डोहकर, ऊपर नहीं चला जाना—यह तब आराम करे ।

सिपर—हाँ अत्रा । ओ कैसी प्यास लगी है ।

पाम—आगम । नादिरा इन दुनियाँमें हमारे लिए आराम नहीं है । यह ऊपर मैदान लगती हो—निम्ने हम अभी तय करके आये हैं ।—येवनी हो नादिरा ।

नादिरा—पानी ?—आ—

पाम—हमारे पीछे पाना उजाट उमर है हमारे मामन भी पैसा ही उजाट उमर है ।—पानी नहीं है, छह नहीं है, किनारा नहीं है—मोय साथ कर रहा है ।

सिपर—अत्रा, उठी प्यास लगी है—जगमा पानी ।

पाम—बेटा, पानी यहाँ नहीं है ।

सिपर—अत्रा, पानी ! पानी न मिलेगा तो मैं मर जाऊँगा ।

पाम—(गुस्सेस) हूँ !

सिपर—ओ ! पानी ! पानी !

नादिरा—देखो प्यारें, कहीं अगर जरासा पानी मिल सके, तो लाओ । बच्चा प्रेतोद्य हुआ जा रहा है । प्यासके मारे मेरा भी कलेजा मुँहको आ रहा है ।

पाम—क्या सिर्फ तुम्हीं लोगोंका यह हाल है नादिरा ? प्यास

हा जाऊँ,—इन सफेद चालोंको त्रिपेरकर, रुमजोरीसे फौपता हुआ
 मैं अगर जरीबका महारा लेकर उनके आगे गटा हो जाऊँ, उन्हें
 तगम न आयेगा ? रहम न आयेगा ?

जहा०—अब्रा, अब दुनियाँमें तरम और रहमका नाम नहीं
 रहा । खौफने उन्हें तहस-नहस कर डाला । जो लोग बटतीके जमा
 नेमें ' जय बादशाह शाहजहाँकी जय ' के नारेसे आसमानको हिला
 तेते ये, वे ही अगर आज आपकी इस जईफ मरीज मजबूर मृत
 को देखें, तो इस मुँहपर थूक देगे—और अगर मेहरबानी करके न
 थूकेंगे, तो नफरतके साथ मुँह फेरकर चले जायेंगे ।

शाह०—पेसी प्रात ! पेसी प्रात !—(गभीर स्वरसे) अगर आज
 दुनियाकी यह हायत है, तो जम्हर एक बटी भारी बला उसकी रा-
 रागमें फेंक गई है । तो फिर डेर क्या है ? या गुदा ! अब उसे नेस्त-ना
 ब्रू कर दो ! अभी गला घोटकर उसे मार डालो ! अगर ऐसा ही
 है, तो ऐ आसमान ! अभीतक तेरा रंग नीला क्यों है ! मूरज ! तू
 अभीतक आसमानके ऊपर क्यों है ! बेहया ! नीचे उतर आ ! एक
 बड़े भारी तफानमें तू चूरचूर हो जा ! भूचाल ! तू दृमककर इस
 जमीनकी छाती फाटकर इसके टुकडे टुकडे उटा दे । ते आग ! तू
 भभककर तमाम दुनियाको ग्राहमे मिला दे । और, क्या
 ही अच्छा हो, अगर भारी आँगी आकर वही राक खुत्ताके मुँह-
 पर टाल आवे !

अनीम कटार न मारने पाओगे।—मुझ पहले मारो ।

सिपर—नहीं, अब्या मुझे पहले मारो ।

दारा—यह क्या मेरे अड्डाह !—यह फिर—बीचबीचमें क्या दिवाते हो ! गहरे अँधेरेके बीचमें यह कैसी रोशनीकी शलक है ! या खुदा ! या रहीम ! तुम्हारे पैदा किये हुए इन्मान पेम खूबमूरत, लेकिन ऐसे जल्लाद हैं !—इन मा-बेटोंका एक दूसरेको बचानेके लिए यह रोना—मगर तो भी मोटे किमीको बचा नहीं सकता।—इतने जबरदस्त, लेकिन इतने कमजोर ! इतने ऊँचे, लेकिन इतने नीचे गिरे हुए !—यह रोना नहीं, आममानसे पाक-साफ मोनियोकी वारिज है। यह बहिस्त और दोजग्य एक साथ !—मेरे खुदा, यह कैसी पहलेली है !

सिपर—अब्या अब्या—ओ (गिर पटना)

नादिरा—मेरा बच्चा ! (जाकर गोदम उठा लेना ।)

दारा—यह फिर वही दोजग्य है !—ना—ना—ना यह रोगनीका रहम है ! यह शैतानी है ! यह दगा है ! अँधेरेकी तामत दिखानेके लिए यह एक जलता हुआ अगारा है ! कुछ नहीं। मैं तुम सबको कल फरेंगा !—फिर खुदकुशी करूँगा—! (जोहरतकों ओर देखकर) वह—सो—वही है ! उसको भी मारूँगा । उसके बाद—तुम लोगोंकी लारोंसे लिपटकर मैं भी जान दे दूँगा ।—आओ, एक एक करके मेरे सामने आओ ।

(नादिराको मारनेके लिए कटार खींचना ।)

सिपर—(होशमें आकर) मत मारो, मत मारो ।

दारा—(सिपरको एक हाथमें दूर हटाकर कटार मारनेकी तैयार होकर)

मारनेके लिए तैयार हो जाओ ।

नादिरा—मारनेसे पहले हमें जरा इयादत कर लेने दो !

मेरा गला नहीं सूख रहा है ? तुमको सिर्फ अपना ही खयाल है ।

नादिरा—प्यारे, मैं अपने लिये नहीं कहती ।—यह बेचारा—
आहा—

दारा—मेरे भी कलेजेक भीतर एक आग लगी हुई है ।—धँस
वॉय जल रही है । उसपर इस बेचारे बच्चेका मूखा हुआ मुँह टप
रहा हूँ—मुँहसे बात नहीं निकलती—देखता हूँ—और नादिरा, क्या
तुम समझती हो कि मेरे दिलपर सदमा नहीं पहुँचता । लेकिन क्या
करूँ—पानी नहीं है । कोसभरके भीतर पानीकी बूँद भी नहीं है—
नामो-निशान नहीं है ।—ओ ! किस हालतमें मुझे टाल रखा है
मेरे खुदा ! अत्र नहीं सहा जाता ।

सिपर—अब्या अत्र नहीं रहा जाता ।

नादिरा—आहा मेरे बच्चे—मैं तुझपरमे कुर्यान हो जाऊँ—अत्र
नहीं सहा जाता ।

दारा—मरो—मरो—तुम सब मरा, मैं भी मरूँ—आन यही हमें
सबका खतमा हो जाय ।—हो जाय—यही हो जाय ।

सिपर—अम्मी ओ बोला नहीं जाता । कैसी बच्चेनी है अम्मी ।

नादिरा—ओ कैसी बच्चेनी है ।

दारा—नहीं, अत्र देखा नहीं जा सकता । मैं आज खुदामे बदला
लूँगा । उमकी टम सटा हुई बोधी दुनियाको काटकर उसकी भारी
बड़मानी जाहिर कर दिगाऊँगा । मैं मरूँगा, लेकिन उमरो पहले
अपने हाथमे तुम सबको कल कर टाँडूँगा, तुमको । मारकर
मरूँगा ।—
(कटार निकालता ।)

सिपर—अम्मीको मन मागे—मुझ मार डालो !

नादिरा—ना ना—मुझे पहल मागे ! मेरे देखते तुम बच्चेकी

मर्द—हाय हाय, बच्चेको साँस लेना कठिन हो रहा है !

दारा—जोहरत ! जोहरत ! मर गई ।

मर्द—नहीं, अभी मरी नहीं है । कैसी प्यारी लडकी है

दारा—जोहरत !

जोहरत—(क्षीणस्वरसे) अब्बा !

[ग्वालिनका प्रवेश । जल देना । सबका जल पीना ।]

स्त्री—आओ भैया, हमारे घर चलो ।

मर्द—आओ भैया !

दारा—तुम कौन हो ! तुम क्या कोई फरिश्ते या देवता हो !—
तुम्हें खुदाने भेजा है ?

मर्द—नहीं भैया, मैं एक चरनाहा हूँ ।—यह मेरी स्त्री है ।

दारा—तुममें इतनी मुहब्बत, इतनी मेहरबानी है ! इन्सानमें
इतना रहम ! आदमीमें इतनी हमदर्दी ! यह भी क्या मुमकिन है !

मर्द—क्यों भैया, तुमने क्या कभी कोई आदमी नहीं देखा ?
तुम हमेशा शैतानोहीको देखते रहे हो ?

दारा—क्या यही ठीक है ? वे सत्र क्या शैतान ही हैं ?

स्त्री—यह तो आदमीहीका काम है भैया । अनाथको आश्रय देना,
भूखेको खिलाना, प्यासेको पानी पिलाना—यह तो आदमीहीका
काम है भैया । केवल शैतान ही ऐसा न करेगा ।—पर मुझे यह
विश्वास नहीं कि कभी तभी ऐसा करनेको शैतानका भी जी न
चाहता हो—आओ भैया !

(सब जाते हैं ।)

दारा—इनादत !—किसकी ? खुदाकी ? खुदा नहीं है । सत्र टोंग है, बोखेवाजी है । खुदा नहीं है ।—कहाँ है !—कहाँ है !—कौन कहता है, खुदा है ! है ? अच्छा ! करो इनादत ।

नादिरा—आ बच्चे, मरनेसे पहले खुदाकी याद कर लें ।

(दोनों घुटने टेककर आँखें मूंद लेते हैं ।)

नादिरा—मेरे खुदा ! मेरे रहीम ! बड़े दुखमें आज तुम्हें पुकार रही हूँ । मालिक ! दुख दिया, अच्छा किया । तुम जो दोगे, उसे हम सिर आँखोंसे कुचूल करेंगे । तो—भी—तो भी—मगते वक्त अगर लडकी-लडके और प्यारे गौहरको सुश देखकर मर सकती ।—

दारा—(देखते ही देखते सहसा घुटने टेककर) या खुदा ! तुम शाहोके शाह हो । तुम नहीं हो, तो इतने बड़े इस दुनियाके कारखानेको चलाता कौन है ! कहाँसे यह कायदा आया कि जिसके जोरसे ऐसी दो पाक चीजे दुनियांम देख पडती हैं—मा और जौलद—या खुदा ! तुमको मैंने अक्सर याद किया है, लेकिन ऐसे दुखमें, ऐसी आजिजीसे, कलेजा धाम कर, और कभी नहीं पुकारा । या रहीम ! अपने बदोको बचाओ ।

[गऊ चरानेवाले एक मर्द और भीरतका प्रवेश ।]

मर्द—तुम कौन हो ?

दारा—यह किसकी आज्ञा है ! (आँख खोलकर) तुम लोग न हो ?—जरा सा पानी, जरा सा पानी दो !—मुझे न दो—इस जारत और—इस बच्चेको दो—

खी—हाय हाय, रेचारे तडप रहे हैं ! मैं अभी पानी लाती हूँ ! सनिक वीरज धरो भैया ।

(प्रधान ।)

(पियारा गाती है ।)

प्यासकी मारी गई, मैं मेहके जा पास ।

गिर पड़ी बिजली, न पूरी हुई मेरी आस ॥ उलटा० ॥

शुजा—सुनोगी नहीं ? तो मैं जाना हूँ ।

(पियारा गाती है ।)

ज्ञानदास कहे कन्दाईकी, मुझे यह प्रीत ।

मरनसे भी अधिक दुखदा, हुई, उलटी रीत ॥ उलटा० ॥

शुजा—आ, हैरान कर डाल ! मैं तो यही कहूँगा कि दुनियाँमें कोई मर्द दुबारा व्याह न करे । दूमरी जोरू रासमक मिरपर सवार होती है । अगर तुम पहली जोरू हाती, तो क्या तुम्हें एक बात सुनानेके लिए मुझे इतनी मिन्नत करनी पडती ?—

पियारा—आ, मेरा ऐसा अच्छा गाना मिट्टी कर दिया ! मैं तो यही कहूँगी कि दुनियाँमें कोई औरत उस मर्दके साथ शादी न करे, जिनकी पकू जाग मर चुकी हो । यह बात अगर न होती, तो तुम आकर मेरा ऐसा अच्छा गाना मिट्टी कर देने ? आ, परेशान कर डाल । दिन-रात जगकी ही राग सुननी पडती है । फिर तुम न जानते हो कणायद (व्याकरण), न समझते हो गाना । परेशान कर डाल !

शुजा—यह तुमने कैसे जाना कि मैं गाना नहीं ममझता ?

पियारा—ऐसा अच्छा गाना ! आहाहाहा !

शुजा—अपने गानेमें आप ही मस्त हो रही हो !

पियारा—क्या करूँ, तुम तो समझते ही नहीं । इसीसे गाने-बाला और सुननेवाला मैं ही हूँ ।

शुजा—गलत है । गानेवाला—सुननेवाला नहीं, गानेवाली—सुननेवाली—होगा ।

चौथा दृश्य ।

स्थान—मुग़रके किलेका महल ।

समय—चादनी रात ।

[पियारा टहल-टहल घर गा रही है ।]

आनन्दभैरवी । ठेका धमार ।

उलटा हुआ सारा काम ।

घर बसाया चैनकी, जाना न था अजाम ।

आगसे वह जल गया, बस में रही नाकाम ॥ उलटा० ॥

अमृत-सागरमें गई, गोता लगाया जाय ।

विष हुआ तकदीरसे मेरे लिए वह हाथ ! ॥ उलटा० ॥

भाग कैसे है, कहँ क्या, प सखी, सुन बात ।

चौद चिनगारी बरसता कर रहा उतपात ॥ उलटा० ॥

[शुजाका प्रवेश ।]

शुजा—तुम यहाँ हो । उधर मैं तुम्हे न जाने कहीं कहीं ढूँढ
आया ।

(पियारा गाती है ।)

छोड़ नीचेको चढी ऊँचे बढाकर पाव ।

अगम पानीमें गिरी, कोई चला नहीं दाव ॥ उलटा० ॥

शुजा—उसके बाद तुम्हारी आज सुननेसे माझ्म हुआ कि
तुम यहाँ हो ।

(पियारा गाती है ।),

चाह लछमीकी मुझे थी, आह जीके साथ ।

पासका भी रत्न खो, आई गरीबी हाथ ॥ उलटा० ॥

शुजा—ब्रत सुनो—आ —

(पियारा गाती है ।)

प्यासकी मारी गई, मैं मेहके जाँ पास ।

गिर पडी थिजली, न घूरी हुई मेरी आस ॥ उलटा० ॥

शुजा—सुनोगी नहीं ? तो मैं जाता हूँ ।

(पियारा गाती है ।)

ज्ञानदास कहे कन्दाईकी, मुझे यह प्रीत ।

मरनसे भी अधिक दुखदा, हुई, उलटी गीत ॥ उलटा० ॥

शुजा—आ, हैरान कर डाला ! मैं तो यही कहूँगा कि दुनियाँमें कोई मर्द दुबारा ब्याह न करे । दूसरी जोरू रसमके मिरपर सवार होती है । अगर तुम पहली जोरू होती तो क्या तुम्हें एक बात सुननेके लिए मुझे इतनी मिन्नते करनी पडती ?—

पियारा—आ, मेरा ऐसा अच्छा गाना मिट्टी कर दिया ! मैं तो यही कहूँगी कि दुनियाँमें कोई औरत उम मर्दके साथ शादी न करे, जिनकी एक जोरू मर चुकी हो । यह बात अगर न होती, तो तुम आकर मेरा ऐसा अच्छा गाना मिट्टी कर देने ? आ, परेशान कर डाला ! दिन-रात जगकी ही रंग सुननी पडती है । फिर तुम न जानते हो कथायद (ब्याकरण), न समझते हो गाना । परेशान कर डाला !

शुजा—यह तुमन कैसे जाना कि मैं गाना नहीं समझता ?

पियारा—ऐसा अच्छा गाना ! आहाहाहा !

शुजा—अपने गानेमें आप ही मन्त हो रही हो !

पियारा—क्या करें, नुम तो समझते ही नहीं । इसीमें गाने-बाल और सुननेवाला मैं ही हूँ ।

शुजा—गलत है । गानेवाला—सुननेवाला नहीं, गानेवाली—सुननेवाली—होगा ।

पियारा—(सिटपिटाकर) तभी तो, तुमने मंत्र मिट्टी कर दिया ।

शुजा—इस वक्त बात यह कहनी है कि सुलेमान मुग़लका फ़िल
छाडकर चला गया है । क्या जानती

पियारा—(अनसुनी करके) उही तो !

शुजा—उसके बाप दाराने उसे बुला भेजा है । लेकिन इधर—

पियारा—(उसी भावसे) म्हाजरा ठीक है । कजायदकी गल्ती
नहीं है ।

शुजा—अरे सुनो, दाराने दोनो बार औरगजेबसे शिकस्त खाई है ।

पियारा—(उसी भावसे) मने गलत नहीं कहा ।

शुजा—तुम बात नहीं सुनोगी ?

पियारा—पहले यह मान लो कि मुझसे कजायदकी गल्ती
नहीं हुई ।

शुजा—जखर गल्ती हुई है ।

पियारा—गल्ती त्रिलकुल नहीं हुई ।

शुजा—चलो, किससे पूछोगी, पूछो ।

पियारा—देखो, मैं कहती हूँ, आपसमें समझौता कर लो, नहीं
तो मैं इसके लिए गजब ढाँदूंगी । रात भर चिन्ताऊँगी और देखूँगी
कि तुम कैसे सोते हो । आपसमें समझौता कर लो ।

शुजा—तो फिर मेरी बात सुनोगी ?

पियारा—हाँ सुनूँगी ।

शुजा—तो तुमने गल्ती नहीं कहा ।—खासकर इस लिए कि
तुम मेरी दूसरी बीबी हो । अब सुनो, खास बात है । बेटव मामला
है, तुमसे सलाह पूछता हूँ ।

पियारा—मलाह ! अच्छा ठहरो मैं तैयार हा चट्टे । (चहरा और पोशाक ठीक करके ।) यहाँ कोई ऊँची नगद भी नहीं है । अच्छा, खड खटे ही सुनूँगा । कहो, मैं तैयार हूँ ।

शुजा—मुझे यकीन है कि अब अब्बा इस दुनियाँमें नहीं है ।

पियारा—मेरा भी ऐसा ही खयाल है ।

शुजा—जयमिहने मुझे जो मारगाइके दस्तखत दिखाये थे—
सो सत्र दाराका जाल था ।

पियारा—जस्त्र ही—

शुजा—मानती हो ?

पियारा—मानती मैं कुछ नहीं । कहते जाओ ।

शुजा—दूसरी लडार्डेम भी औरगजेप्रसे दाराने निकस्त खाई, यह तुमने सुना ?

पिया०—हाँ सुना है ।

शुजा—किससे सुना ?

पिया०—तुमसे ।

शुजा—कत्र ?

पिया०—अभी !

शुजा—दारा आगरा छोड कर भाग गये और औरगजने फतह पाकर आगरेमे जाकर अब्बाको कैद कर लिया है । उमने मुरादको भी हिरामतमे रख छोडा है ।

पिया०—हूँ !

शुजा—औरगजेप्र अब मुहस लडेगा ।

पियारा—मुमकिन है ।

शुजा—और औरगजेवसे अब मेरी लडाई होगी, तो यह लडाई बड़ी भारी होगी ।

पियारा—इसमें क्या शक है ।

शुजा—मुझे उसके लिए अभीमे तैयार हो जाना चाहिए ।

पियारा—जल्दगी बात है ।

शुजा—लेकिन—

पियारा—मेरी भी ठीक यही सलाह है । लेकिन—

शुजा—तुम क्या कह रही हो—मेरी ममझमें नहीं आता ।

पियारा—सच तो यह है कि उमें मैं भी बहुत अच्छी तरह नहीं समझ रही हूँ ।

शुजा—चाने दो, तुममें सलाह मँगना ही बेकार है ।

पियारा—विलकुल ।

शुजा—लडाईका मामला तुम क्या समझोगी ?

पियारा—मैं क्या समझूँगी ।

शुजा—लेकिन डर और एक मुश्किल आ पडी है ।

पियारा—वह मुश्किल कैसी है ?

शुजा—मुहम्मदने तो मुझे साफ लिख दिया है कि यह मेरी लडाईसे आदी नहीं करेगा ।

पियारा—ठीक तो है, यह कैसा करेगा ।

शुजा—क्यों नहीं करेगा । मेरी लडाईमें उसकी भेगनी पकई हो गई है । अब बदलनेसे कैसे काम चल सकता है ।

पियारा—या अल्लाह, सचमुच कैसे चल सकता है ।

शुजा—लेकिन अब यह व्याह करनेको राती नहीं है ।

पियारा—ठीक तो है, कैसे गजी होगा !

शुजा—लिखा है, मैं अपने बापके दुश्मनकी लटकीमे शक्ती नहीं करूँगा ।

पियाग—कैसे करेगा !

शुजा—लेकिन इंग्र इमस मेरी लटकीका उडा मद्रमा पहुँचेगा ।

पियाग—सो तो पहुँचगा ! क्यों न पहुँचेगा !

शुजा—मैं क्या करूँ—कुछ समझमे नहीं आता ।

पियाग—मैग भी यही हाल है ।

शुजा—अब क्या किया जाय !

पियाग—हाँ, क्या किया जाय !

शुजा—तुममे कोई मतलबकी बात पूछना बेकार है ।

पियाग—समझ गये ।—कैसे समझ गये ! हाँजी, कैसे समझ गये ! तुम बटे समझदार हो !

शुजा—अब क्या करूँ ? औरगजेबसे लडाई ! उसके साथ उसका बहादुर बेटा महम्मद है । मोचनेकी बात है । इससे सोच रहा हूँ । तुम क्या सलाह देती हो ?

पियाग—प्यारे, मेरा कहा सुनोगे ? सुना तो कई ।

शुजा—कहो, सुनूँ ।

पियाग—तो सुनो । मैं कहती हूँ लटनकी जगलत नहीं है ।

शुजा—क्यों ?

पियाग—सलतनत लेकर क्या हागा ? हमे काहेकी कर्मा है ? देवो, यह बगालकी हरी-भरी परती, तरह तरहके फलों, चिडियों और ग्वमरतियोंकी बहार । काहेकी मस्तनत ! मैं तुमको अपने लि-

के तख्तपर बैठकर पूज रही हैं, उसके आगे तरत-ताऊस क्या चीज है ! जब हम इस महलके ऊपरवाले बरामदेमे खड़े होते हैं—एक दूसरेके गलेसे गला लगा होता है—हाथमे हाथ होता है—हम तरह तरह की चिड़ियोंकी बोलियाँ सुनते हैं—दूरतक फैली यह गगाकी धारा देखते हैं—इस दूरतक फेले हुए नीले आममानके ऊपर हम दोनों अपनी शामिल और गुग नजरोकी नाप बढ़ाते चले जाते हैं—उस नीले रगके एक सुनसान किनारेपर एक तरहकी खामोशी और खुशीकी फर्जी जगह मानकर, उसमे एक रवाबे-गफलतके कुजमे बैठकर, एक दूसरेकी तरफ णकटक देखते हैं—दिलसे दिल मिलनेका मजा छटते हैं—तब क्या तुम्हें यह नहीं जान पटता प्यारे, कि यह सन्तनत कोई चीज नहीं है ? प्यारे, यह लडाई अच्छी नहीं । हो सकता है कि हमारे पास जो नहीं है वह भी हम न पाये और जो है वह भी चला जाय ।

शुजा—इससे तो तुमने ओर भी सोचमे ढाल दिया ।—सोचते सोचते मेरा सिर फिर ही रहा था, उसपर—नहीं, वन्कि दाराकी हुकूमत मैं मान भी सकता था । औरगजेवकी—अपने छोटे भाईकी—हुकूमत, रुभी मजूर न करूँगा । नहीं—कभी नहीं । (प्रस्थान ।)

पियारा—तुमसे कुछ कहना बेकार है । तुम ब्रह्मादुर हो ।—सन्तनतके लिए शायद तुम लटते भी नहीं, मगर छटनेके लिए लडोगे । तुमको मैं खूब पहचानती हूँ—लटाईका नाम सुनकर तुम नाच उठते हो ।

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—दिल्ली का शाही दरवार ।

समय—प्रातः काल ।

[सिंहासनपर औरंगजेब बैठे हैं । उनके पास मीर जुमला, शायस्ताखी इत्यादि सेनापति, मन्त्रीगण, जयसिंह, और शरीररक्षक लोग उपस्थित हैं । सामने राजा जसवंतसिंह खड़े हैं ।]

जसवंत—जहाँपनाह, मैं आया था—सुन्तान शुजाक निरुद्ध करनेमें आपको अपनी सेनामें सहायता देने । पर यहाँ आकर अब यह मेरा विचार गूँथ गया—अब सहायता देनेको जी नहीं चाहता । मैं आज ही जोधपुरको छोड़ा जा रहा हूँ ।

औरंग०—महाराजा जसवंतसिंह, आपने नर्मदाकी लड़ाईमें दाराकी मदद की थी मगर इसके लिए मैं आपमें नाराज नहीं हूँ । औरंगजेबकी सुझाव मिलनेपर हम महाराजाको अपना पियानतदार दोस्त समझेगे ।

जसवंत—जहाँपनाह प्रसन्न हों या अप्रसन्न, इससे जसवंतसिंहका कुछ बनता—भिगडता नहीं । और मैं आज इस दरवारमें जहाँपनाहसे दयाकी भीख माँगने नहीं आया हूँ ।

औरंग०—तो फिर महाराजाके यहाँ आनेका और क्या मतलब है ?

जसवंत—मैं आपसे एक बार यह पूछने आया हूँ कि किस अपराधसे हमारे ब्याहुर सम्राट् शाहजहाँ कैद हैं और किस अफिद्वारसे आप उनके—अपने पिताके—रहते उनके सिंहासनपर बैठे हैं ।

औरंग०—इसकी कोफियत क्या आज मुझे महाराजाको देनी होगी !

जमरन्त०—दे न दे, आपकी इच्छा में केवल आपसे पू
आया हूँ ।

औरग०—किस मतलबमें ?

जस्रन्त—जहाँपनाहका उत्तर मुनकर मैं अपना कर्तव्य
निश्चित करूँगा ।

औरग०—कैसे ? अगर मैं कैफियत न दूँ तो ?

जस्रन्त०—तो समझूँगा कि देनेके लिए जहाँपनाहके पाम कुछ
कैफियत ही नहीं है ।

औरग०—आप जो चाहे समझें, उससे हमारा कुछ नफा-नुक
मान नहीं । औरगजेब खुदाके सिया और किसीके आगे अपने
कामोंकी कैफियत नहीं देता ।

जमरन्त०—अच्छी बात है ! तो ईश्वरके आगे ही कैफियत
दीजिएगा ।

(जानेको उद्यत होना ।)

औरग०—ठहरिए राजामाहब !—मैं कैफियत न दूँगा, तो
आप क्या करेंगे ?

जमरन्त—भर सक वादशाह शाहजहाँको कैदसे छुड़ानेकी
चेष्टा करूँगा । वम । छुडा सकूँगा या नहीं, यह दूसरी बात है,
किन्तु अपना कर्तव्य मैं अग्र्य करूँगा ।

औरग०—आप वागान्त करेंगे ?

जमरन्त—वागान्त ! ममादूका पक्ष लेकर युद्ध करनेका नाम
विद्रोह नहीं है । विद्रोह किया है आपने । हो सकेगा, तो मैं उस
विद्रोहीको दण्ड दूँगा ।

औरग०—राजासाहब, अब तक मैं इम्तिहान ले रहा था कि
 आपकी हिम्मत कितनी है। पहले सुना था, इस वक्त डर रहा हूँ
 । आप बड़े ही निडर हैं।—राजामाहत्र, हिन्दोस्तानका बादशाह
 औरगजेव जोधपुरके राना जसवन्तसिंहकी दुश्मनीमें नहीं डरता।
 अगर आप चाहेंगे, तो मैदानेजगमे और एक बार औरगजेवको पह-
 चान लेंगे।—माटूम हो गया, नर्मदाकी लडाईमें औरगजेवको
 आपने अच्छी तरह नहीं पहचाना।

जसवन्त—जहाँपनाह, नर्मदाके युद्धमें ? आप उस विजयकी
 लाई करते हैं ? जसवन्तसिंहने दयाधर्मका विचार करके आपकी
 ली हुई निर्मल सेनापर आक्रमण नहीं किया। नहीं तो मेरी सेनाकी
 लाल फूँकहीमें औरगजेव और उनकी सेना रईकी तरह उट जानी।
 इतनी दयाके बदलेमें जसवन्तसिंह औरगजेवकी दगावार्जीके लिए
 तैयार न था। यही उसका अपराध है।—जहाँपनाह आप उसी
 नीतकी प्रलाई कर रहे हैं ?

औरग०—महागना जसवन्तसिंह खरखरदार ! औरगजेवके
 मनकी भी हद है। खरखरदार !

जसवन्त—सम्राट्, औरग किसे दिखता है ? औरग दिगानर
 आप जयसिंह पेसे आग्नीको काटूमें कर सकते हैं। जसवन्तसिंहकी
 प्रकृति और ही है—ममज्ञ लीजिएगा। जसवन्तसिंह आपकी लाल
 लाल औरगको आपके तोपके गोलोंकी ही तरह तुच्छ समझता है।

मीरजुमला—राजामाहत्र, यह कैसी बात है !

जसवन्त—चुप रहो मीरजुमला ! राना रानाकी लडाईमें जगली
 गील्टुको क्या अधिकार है कि वह उनके पीछेमें पड़े ? हममेंमें अभी
 कोई मरा नहीं। तुम्हारी बारी युद्धके बाद आती है—तुम और

जसवन्त०—दे न दे, आपकी इच्छा, मैं केवल आपसे आया हूँ ।

औरग०—किम मतलबसे ?

जसवन्त—जहाँपनाहका उत्तर सुनकर मैं अपना निश्चित करूँगा ।

औरग०—कैसे ! अगर मैं कैफियत न दूँ तो ?

जसव०—तां समझूँगा कि देनेके लिए जहाँपनाहके पास कुछ कैफियत ही नहीं है ।

औरग०—आप जो चाहे समझें, उससे हमारा कुछ नफा-फुमान नहीं । औरगनेव खुटाके सिवा और किसीके आगे आकार्मोंकी कैफियत नहीं देता ।

जसवन्त०—अच्छी बात है ! तां ईश्वरके आगे ही कैफियत दीजिण्गा ।

(जानेको उद्यत होना ।)

औरग०—ठहरिए गजामाहद्व ।—मैं कैफियत न दूँगा, तां आप क्या करेंगे ?

जसवन्त—भर सक वादशाह शाहजहाँको केदसे छुडानेकी चेष्टा करूँगा । बस । छुडा मरूँगा या नहीं, यह दूसरी बात है, किन्तु अपना कर्तव्य मैं अवश्य करूँगा ।

औरग०—आप वागावत करोगे ?

जसवन्त—मगावत ! मन्नादूका पक्ष लेकर युद्ध करनेका नाम विद्रोह नहीं है । विद्रोह क्रिया है आपने । हा मरूँगा, तो मैं उस विद्रोहीको दण्ड दूँगा ।

औरग०—राजासाहब, अब तक मैं इतिहास ले रहा था कि पकी हिम्मत कितनी है। पहले मुना था, इस वक्त द्रव्य रहा हूँ आप बटे ही निठर हैं।—राजामाहब, हिन्दोस्तानका गान्धाराह गजेव जोधपुरके राजा जसवन्तसिंहकी चुम्नीसे नहीं डरता। अगर आप चाहेगे, तो मैदानेजगमें और एक बार औरगजेवको पहन लेंगे।—माइम हो गया, नर्मदाकी लडाईमें औरगजेवको आपने अच्छी तरह नहीं पहचाना।

जसवन्त—जहाँपनाह, नर्मदाके युद्धमें आप उस विनयकी लडाई करत है? जसवन्तसिंहने दयानर्मका विचार करके आपकी मकी हुई निर्मल सनापर आक्रमण नहीं किया। नहीं तो मेरी मेनाकी कल फेंकहीमे औरगजेव और उनकी मेना रईकी तरह उट जाती। इतनी त्यागे बदलेमें जसवन्तसिंह औरगजेवकी दगावाजीके लिए तैयार न था। यही उमका अपराध है।—जहाँपनाह आप उसी नीतकी लडाई कर रहे हैं?

औरग०—महाराजा जसवन्तसिंह, खतरदार! औरगजेवके मकी भी हद है। खतरदार!

जसवन्त—सम्राट् अंग्रेज किसे दिगोत है? अंग्रेज दिगोत आप जयसिंह ऐसे आदमीको कानुमे कर सकते हैं। जसवन्तसिंहकी कृति और ही है—समझ लीजिएगा। जसवन्तसिंह आपकी लाल ल अंग्रेजको आपके तोपके गोलेकी ही तरह तुच्छ समझता है।

मीरजुमला—राजामाहब, यह केसी बात है।

जसवन्त—चुप रहो मीरजुमला! राजा राजाकी लडाईमें जगली लडाईको क्या अधिकार है कि यह उनके बीचमें पड़े? हममेंसे अभी लडाई मरा नहीं। तुम्हारी पारी युद्धके बाद आती है—तुम और

जसप्रन्त०—दें न दें, आपकी इच्छा, में केवल आपसे पूछा
आया हूँ ।

औरग०—किम मतलबसे ?

जसप्रन्त—जहाँपनाहका उत्तर सुनकर में अपना कर्तव्य
निश्चित करूँगा ।

औरग०—कैसे ? अगर में कैफियत न दूँ तो ?

जसप्र०—तो समझूँगा कि देनेके लिए जहाँपनाहके पाम बुद्धि
कैफियत ही नहीं है ।

औरग०—आप जो चाहे समझे, उससे हमारा कुछ नफा-नुफा
मान नहीं । औरगजेब खुटाके सिवा और किसीके आगे अपने
कामोंकी कैफियत नहीं देता ।

जसप्रन्त०—अच्छी बात है ! तो ईश्वरके आगे ही कैफियत
दीजिएगा ।

(जानेको उद्यत होना ।)

औरग०—ठहरिए राजासाहब !—में कैफियत न दूँगा, तो
आप क्या करेगे ?

सक बादशाह शाहजहाँको कैदसे छुड़ानेके
बस । छुड़ा मऊँगा या नहीं, यह दूसरी बात है
कर्त्तव्य में अनश्य करूँगा ।

०—आप बागावत करेगे ?

बागावत ! सम्राट्का पक्ष लेकर युद्ध करनेका नाम
नहीं है । विद्रोह किया है आपने । हो सकेगा, तो मैं उर
दण्ड दूँगा ।

यह गायस्ताखीं—

(शायस्ताखा और मीरजुमलाका तलवार र्नीचना और “ सबरदार
काफिर ! ” कहना ।)

शायस्ता०—जहाँपनाह, हुक्म हो !

(औरगजेवका इशारेसे मना करना ।)

जसमन्त—अच्छी जोटी मिली है—मीर जुमला और शाय
स्ताखीं—मन्त्री और सेनापति । दोनों नमकहराम है । जैसा मालिक
वैसे नौकर ।

शायस्ता०—देखिए तो इस काफिरकी मजाल जहाँपनाह—मि
हिन्दोस्तानके बादशाहके सामने—

जसमन्त—कौन भारतका सम्राट् है ?

शायस्ता०—हिन्दोस्तानके बादशाह गाजी आलमगीर !

(बुर्का ढाले हुए जहानाराका प्रवेश ।)

जहानारा—झूठ बात है ।—हिन्दोस्तानका बादशाह औरगजेव
नहीं है । हिन्दोस्तानके बादशाह शाहजहाँ हैं ।

मीरजुमला—कौन है यह औरत ?

जहानारा—कौन है यह औरत ? यह औरत है, बादशाह
शाहजहाँकी लडकी जहानारा । (बुर्का उलट कर)—क्यों औरगजेव
तुम्हारा चेहरा एकाएक जर्द क्यों पड गया ?

औरग०—बहन, तुम यहाँ कहीं ?

जहानारा—मैं यहाँ क्यों आई—यह बात औरगजेव, आज
इस तस्तपर मजेसे बैठकर इन्सानकी आजाजमे पूछनेकी ताप
तुममे है ? औरगजेव, मैं यहाँ आई हूँ बादशाहसे बग़ायत करनेके
तुम्हारे जुर्मकी नातिश करने ।

औरग०—किससे ?

जहानारा—मुदासे ! खुदा नहीं है, यह तुमने सोच रक्खा है, औरगजेव ?

औरग०—मैं यहाँ बैठकर उसी मुदाकी फकीरी कर रहा हूँ—

जहानारा—चुप रहो ! मुदाका पाकनाम अपनी जमानत न लो ! जमानत जल जायगी ! मिजली और तूकान, मृचाल और बाढ, आग और मरी !—तुम लाया वेगुनाह औरत-मर्दोंके घर उटा-पुडाकर तोड़-फाटकर बहानकर जलाकर त्राह करके चले जाने हो । सिर्फ ऐसे ही लोगोंका कुट नहीं कर सकते !

औरग०—महम्मद, इस पागल औरतको यहाँसे ले जाओ । यह दरवार है, पागलपाना नहीं है । महम्मद !

जहाना०—देखूँ, इस दरवारमें किसकी मजाल है कि बादशाह शाहजहाँकी लडकीके बदनमें हाथ लगाये ।—यह चाहे औरगजेवका लडका हो और चाहे, खुद गैतान ही हो ।

औरग०—महम्मद, ले जाओ ।

महम्मद—मारु कीनिए अब्बाजान । मेरी इतनी मजाल नहीं ।

जमरन्त—बादशाहजादीके साथ किये हुए ऐमे वर्तानको हम नहीं सह सकत ।

और सर—कभी नहीं ।

औरग०—मच है । गुसेमें कैसा अधा हो गया था कि अपनी बहन—बादशाह शाहजहाँकी बेटीसे ऐसा वर्तान करनेका हुकम दे रहा था । बहन, महलमें जाओ । इस आम दरवारमें, सैरुडों बुरी नजरोके सामने खडा होना मुनासिब नहीं—बादशाह शाहजहाँकी लडकीको यह नहीं सोइता । तुम्हारी जगह महलसय

यह शायस्ताखीं—

(शायस्ताखीं और मीरजुमलाका तल्वार खींचना और “ रावरदार काफिर ! ” कहना ।)

शायस्ता०—जहाँपनाह, हुक्म हो !

(औरगजेबका इशारेसे मना करना ।),

जसयन्त—अच्छी जोटी मिली है—मीर जुमला और शायस्ताखीं—मन्त्री और सेनापति । दोनों नमकहराम हैं । जैसा मालिक, वैसे नौकर ।

शायस्ता०—देखिए तो उस काफिरकी मजाल जहाँपनाह—कि हिन्दोस्तानके बादशाहके सामने—

जसयन्त—कौन भारतका सम्राट् है ?

शायस्ता०—हिन्दोस्तानके बादशाह गाजी आल्मगीर !

(बुर्का ढाले हुए जहानारामा पवेश ।)

जहानारा—झूठ बात है ।—हिन्दोस्तानका बादशाह औरगजेब नहीं है । हिन्दोस्तानके बादशाह शाहशाह गहाजहाँ हैं ।

मीरजुमला—कौन है यह औरत ?

जहानारा—कौन है यह औरत ? यह औरत है, बादशाह शाहजहाँकी लडकी जहानारा । (बुर्का उलट कर)—क्या औरगजेब, तुम्हारा चेहरा एकाएक जर्द म्यो पड गया ?

औरग०—बहन, तुम यहाँ कहीं ?

जहानारा—मैं यहाँ क्यों आई—यह बात औरगजेब, आठ डम तलतपर मजेसे बैठकर इन्सानकी आजाजमे पृछनेकी ताव तुममे है ? औरगजेब, मैं यहाँ आई हूँ बादशाहसे बगानत करनेके तुम्हारे जुर्मकी नालिश करने ।

आई। मैं अपने बूढ़े बापके लिए ही जेबकी शर्म-हया और पर्दे-की इज्जतको लात मारकर आई हूँ। मुनो।

सब—फर्माइए।

जहानारा—मैं एक दफा आमने-सामने खड़े होकर तुमसे पूछने आई हूँ कि तुम अपने उम्र मर्यादा, रहमदिल, गरीबपरकर बादशाह शाहजहाँको चाहते हो ? या, इस तगाजाज, बापसे बगामत करनेवाले, लुटरे, शैतान औरगजेबको चाहते हो ?—याद रखो, अभी धरम दुनियासे उठ नहीं गया। अभी चाँद और सूरज निकलते हैं। अभी बाप बेटेका रिश्ता माना जाता है। आन क्या एक ही दिनमें, एक ही आदमीके पापसे खुदाका बनाया कायदा उलट जायगा ? यह नहीं हो सकता। ताकतको क्या इतना घमड हो गया है कि उसकी फतहयारीका डका परस्तिशकी जगहको पाक अमनको लूट लेगा ? अधरमकी क्या ऐसी मजाल हो गई है कि वह नैशेरुदोरु मोह-व्रत-रहम-अदबकी छानीके ऊपरसे अपनी गाडीके गूलमे तर पहिये चलाता चला जायगा ?—बोले।—तुम औरगजेबसे डरते हो ? औरगजेब क्या है ! उमके टोने हाथोमे कितनी ताकत है ! तुम्हें उसकी ताकत हो। तुम चाहो तो उमे तल्लपर बैठा सकते हो, और चाहो तो उसे तल्लमे उताकर कीचडमे लुटा सकते हो। तुम अगर बादशाह शाहजहाँको अब भी चाहते हो, शेरको बूढ़ा समझकर उसे लात मारना नहीं चाहते तुम अगर इन्सान हो, तो मिल्कर बलद आजाजस कहो “जय बादशाह शाहजहाँकी जय देखोगे, औरगजेब खौफके मारे आप ही तल्ल छोड देगा।

सब—जय बादशाह शाहजहाँकी जय।

जहानारा—औरगजेब, यह मैं जानती हूँ। लेकिन जब भारी भू-चालम इमारते गिर पड़ती हैं—महल्मरारों चूर चूर हो जाती हैं—तब जिन औरतोंको कभी मूरज-चोंदने भी नहीं देगा, वे भी बिना किसी लिहाजके खुली सड़कपर आकर खड़ी हो जाती हैं। आज हिन्दोस्तानकी वही हालत है। आज एक भारी जुल्मसे एक सल्तनतकी इमारत उल्ट-पुलट गई है। इस वक्त यह पहलेका कायदा नहीं चल सकता। आज जिम वेइन्साफी, जिस उथल-पुथल, जिस भारी जुल्म और शेतनतका तमाशा हिन्दोस्तानमें हो रहा है, वह शायद कभी नहीं हुआ। इतना बड़ा गुनाह, इतना बड़ा फरेव, आज बग्मके नामपर चल रहा है। और ये भेटे आँखे बंद किये वही देग रही है। हिन्दोस्तानके आदमी क्या आज सिर्फ चात्रुकी चोटपर चलनेहीके आदी हो गये हैं ? बुरी चालके बहामे क्या इन्साफ, ईमान, इन्सानियत—इन्सानके ऊँचे दर्जेके गयालात—सब बह गये ? इस वक्त क्या खुदगर्जीफा ही राज है ? क्या उसे ही सबने अपना वरम-करम मान लिया है ? क्या यही 'मुनासिब' है ? सिपह-सालारो, वजीरो, मुसाहबों, मैं यह जानना चाहती हूँ कि तुमने किस बलपर शाहशाह शाहजहाँकी जिन्दगीमें ही उनके तरतपर उनके नालायक बेटे औरगजेबको ठिठला दिया है ?

औरग०—मेरी बहन अगर यहाँसे नहीं जाना चाहती, तो आप सब लोग बाहर चले जाइए। बादशाहजादीकी इज्जत बचाइए।

(सब बाहर जाना चाहते थे ।)

जहानारा—ठहरो। मेरा हुक्म है, ठहरो। मैं यहाँ तुम्हारे पास रहने आई हूँ। मैं अपना कोई दुख भी तुम्हें सुनाने नहीं

मैं उस तन्तपर बैठा हूँ आन—बादशाहके नामपर—लेकिन यह भी बहुत दिनोंके लिए नहीं। गजमे अमन-चैन कायम करके, दाराने त्रेमिलसिले कामोंको मिलसिलेमे ठीक और सहल करके, फिर आप जिसे फटे उसे बादशाहत देकर मैं मक्के जाना चाहता हूँ। यहाँ ठि रहने पर भी मेरा खयाल उधर ही है—वह मेरे जागतका खयाल और सोतेका खयाल है—मैं उसी पाक जगहके खयालमें डूबा रहता हूँ। आप लोग अगर यही चाहें, तो मैं आज ही सन्तनतकी निम्मेदारी छोड़कर मक्के चला जाऊँ। यह तो मेरे लिए बड़ी खुशकिस्मती है। मेरे लिए आप लोग कुछ फिकर न करें। आप लोग अपनी तरफ खयाल करके कहिए, जुल्म चाहते हैं या अमन ? कहिए। मैं आप लोगोंकी मर्जीके तिलानु बादशाहत करना पसन्द नहीं करता, जोर आपकी मर्जा होने पर भी यहाँ खड़े खड़े दाराने मनमाने जुल्मको देग न सकूँगा। कहिए, आप लोगोकी क्या मर्जी है ?—चलो महम्मद, मक्के चलनेके लिए तैयार हो जाओ।—बोलिए, आप लोगोकी क्या मर्जी है ?

मय—नय, बादशाह औरगजेरकी नय।

औरग०—अच्छी बात है, आप लोगोका इगदा माटम हो गया।

अब आप लोग बाहर जायँ। मेरी ग्रहन—शाहजहाँ बादशाहकी बेटी—की बंडजती होना ठीक नहीं।

(औरगजेर और जहानाराके सिवा मरगा जाना ।)

जहानारा—औरगजेर !

औरग०—ग्रहन !

जहानारा—मृत !—मुझमे बडाई ।

रही रहा जाता ।

जहानारा—अच्छा तो—

औरग०—(सिंहासनसे उतरकर) अच्छी बात है । मैंने तख्त छोड़ दिया । मुसाहबो, अब्याजान बीमार हैं और सन्तनत का काम नहीं कर सकते । अगर वह कर सकनेके कामिल होते, तो दमिखनसे मेरे यहाँ आनेकी जरूरत नहीं थी । मैंने बादशाह शाहजहाँके हाथसे सन्तनतका काम नहीं लिया—दाराके हाथसे लिया है । अब्या पहलेकी तरह सुरसे आरामके साथ आगरेके महल्में हैं । आप लोग अगर यह चाहते हो कि दारा बादशाह हो, तो कहिए, मैं उनको बुलाये भेजता हूँ । दारा क्यों अगर महाराजा जसजन्तसिंह इस तरतपर बैठना चाहे, अगर वे या महाराजा जयसिंह या ओर कोई सन्तनतके कामकी जिम्मेदारी लेनेको तैयार हो, तो मुझे कुछ उज्र नहीं है । एक तरफ दारा, एक तरफ शुजा और एक तरफ मुराद है । इन दुश्मनोको सिरपर रखकर कोई तरतपर बैठना चाहे बैठे । मुझे यकीन था कि आप लोगोंकी राय और कहनेसे मैं यहाँ तख्तपर बैठा हूँ । आप लोग यह न समझें कि तख्त मेरे लिए इनाम है । यह मेरे लिए एक तरहकी सजा है । मैं इस वक्त तख्तपर नहीं, बारूदके ढेरपर बैठा हूँ । इसके सिवा इसी तरतकी वजहसे मैं मक्का जानेका सवाप नहीं हासिल कर पाता । आप लोग अगर चाहे कि दारा इस तरतपर बैठे, हिंदोस्तानमें राजाके बिना फिर ऊधम मचे—गरमका नास हो, तो मैं अभी मक्के शरीफका मफर करता हूँ । वह तो मेरे लिए बड़े सुखकी बात है । बोलो—

(सबका चुप रहना ।)

औरग०—यह लो, मैंने अपना ताज तख्तके आगे रख दिया ।

तीसरा अंक ।



पहला दृश्य ।

स्थान—रोजुवाम औरगजेवका डेग ।

समय—रात्रि ।

(औरगजेव एक चिरी लिपे दख रहे हे ।)

औरग०—किस्त । हाथीकी चाल । अन्ध—नहीं । उठती कि-
स्तसे मेरी वाजी जाती रहेगी । लेकिन—ये—ऊँ ।—अच्छ
यह हाथीकी किस्त—तथा रहेगी । उसके बाद यह किस्त । यह
प्यादा—उमके बाद यह किस्त ।—रुहों नाओगे ।—मात ।
(उत्साहके साथ) मात ! (दहलना)

[मीरजुमलाका प्रवेश ।]

औरग०—बजीर माह्न, हम इस नगमें जीत गये ।

मीरजु०—जहोपनाह कैसे ?

औरग०—पहले आप तोपे चलांगे । उसके बाद मैं हाथियोंको
लेकर उस चौकनी फौजपर त्त पड़ंगा । उमके बाद महम्मदकी
धुडसमार फौज हमला करगी । इन्हीं तीन किस्तोंसे दुम्न मान
हो जायगा ।

मीरजु०—और जसयन्तमिह !

औरग०—उमपर मुझे अभी त्तवार नहीं है । उमे अपनी
आँखोंके मामने ही रखना । शूनामी फौजके
भीचमें, निममें, । मे और मह-

तब तक ताज्जुबसे चुप थी, तुम्हारी चालवाजीका तमाशा देख रही थी, जब होश आया तो देखा, तुम बाजी मार ले गये।—खून !

औरग०—मैं वादा करता हूँ, अठाहकी कसम खाता हूँ; जबतक मैं बादशाह हूँ तब तक तुमको और अघ्वाफो किसी बातकी कमी न होने पायेगी ।

जहानारा—फिर कहती हूँ—खून !

तीसरा अंक ।



पहला दृश्य ।

स्थान—सजुवाम औरगजेवका डेरा ।

समय—रात्रि ।

(औरगजेव एक चिन्नी लिये देख रहे हैं ।)

औरग०—फिस्त । हाथीकी चाठ । अच्छा—नहीं । उठती किस्तमे मेरी जानी जाती रहेगी । लेकिन—देखें—ऊहूँ !—अन्ना यह हाथीकी फिस्त—दवा लेगी । उसके बाद यह फिस्त । यह प्यादा—उसके बाद यह फिस्त !—रुहों जाओगे !—मात !
(उत्साहके साथ) मात ! (टहलना)

[मीरजुमलाका प्रवेश ।]

औरग०—वजीर साहब, हम इस जगमे जात गये ।

मीरजु०—जहाँपनाह कैमे ?

औरग०—पहले आप तोपे चल्यंगे । उसके बाद में हाथियोंको लेकर उस चौकनी फौजपर दृष्ट पहुँगा । उसके बाद, महम्मदकी घुडसवार फौज हमला करेगी । इन्हीं तीन फिस्तोंमे दुस्मन मात हो जायगा ।

मीरजु०—और जमयन्तर्मिह ?

औरग०—उसपर मुझे अभी एतवार नहीं है । उसे अपनी आँखोंके सामने ही गवना होगा—हमारी और शुजाकी फौजोंके बीचमे, जिसमे यह हमें कुछ नुकसान न पहुँचा सके । मैं और मर-

ममद, दोनो उसके डधर उधर रहेंगे । दुश्मनोका हमला होगा गस्त-
कर जसवन्तसिंहकी राजपूत-फौजके ऊपर । वे लडते खूब हैं । अगर
उसमें कोताही करेगे, तो पीछे तुम्हारी तोपोंकी बाढसे काम लिया
जायगा । हमे फतह जरूर मिलेगी ।—कल सबेरे तैयार रहना ।—
इस वक्त ज सकते हो ।

मीरजु०—जो हुकम । (प्रस्थान ।)

औरग०—जसवन्तसिंह ।—यह राखी इम्तिहान है ।

[महम्मदका प्रवेश ।]

औरग०—महम्मद, तुम्हारी जगह है सामने, जसवन्तसिंहकी
दाहिनी तरफ । तुम मगके पीछे हमला करना । सिर्फ तैयार रहना ।
यह देखो नकशा ।

(महम्मद देखाता है ।)

औरग०—समझे ?

महम्मद—हाँ अच्चाजान ।

औरग०—अच्छा जाओ ।—कल तडके ।

[महम्मदका प्रस्थान ।]

औरग०—शुजाकी एक लाख फौज गँवार है । जान पडता
है, ज्यादाह तरकलीफ न उठानी पडेगी । एकदफा हलचल डाल देनेसे
ही काम हो जायगा—यह लो, महाराज जसवन्तसिंह आगये ।

[दिलदारके साथ जसवन्तसिंहका प्रवेश और कोर्निश करना]

औरग०—मेने आपको बुला भेजा है । मेने खून मोचकर आप
को मामने ही रखना मुनामित्र ममदा है ।

जसवन्त—मुझे ?

औरग०—क्यों ! इममें कुछ उज्र है ?

जसन्त—नहीं, मुझे कुछ अपत्ति नहीं है ।

औरग०—आप कुछ डर-डर कर रहे हैं ।

जसन्त—ग़ाहजादा महम्मदके आगे रहनेकी बात थी ।

औरग०—मैंने राय बदल दी है । मैं आपके दाहिने रहेगा ।

जसन्त—और मीरजुमला ।

औरग०—आपके पीछे । मैं आपकी दाईं तरफ रहूँगा ।

जसन्त—ओ समझ गया । जहाँपनाह मुझे सन्देहकी दृष्टिसे देखते हैं ।

औरग०—महाराज खुद होशियार हैं । महाराजके साथ होशियारीकी चाल चलना बेकार है । महाराजको मैं साब लया हूँ, उसका समझ यही है कि मेरी गेरहाजिरमे आप आगेमे बल्ला न करा दें ।—आप शायद यह अच्छी तरह जानते होंगे ।

जसन्त—नहीं, इतना मैंने नहीं मोचा था । जहाँपनाह, मुझे अपने चतुर होनेका घमड था । किन्तु मैं देखता हूँ, इस बातमें मे जहाँपनाहके आगे बन्ना ही है ।

औरग०—अब आपका इरादा क्या है ?

जसन्त—जहाँपनाह, राजपूत लोग विश्वासघात करना नहीं जानते । परन्तु आप लोग—कमसे कम आप—उन्हें विश्वासघातकी ग़हपर चलानेकी चेष्टा कर रहे हैं । मगर जहाँपनाह, सामान । हम राजपूत जातिको अपना शत्रु बनाकर मिगाडिएगा नहीं । मित्रतामें राजपूतके बराबर कोई मित्र नहीं और शत्रुतामें राजपूत जैसा भयकर शत्रु भी कोई नहीं है ।—सामधान ।

औरग०—राजासाहब । औरगजेबके सामने भौंहामें बल

टालनेसे कोई फायदा नहीं। जाइए। मेरा यही हुक्म है। इसीके मुताबिक काम कीजिएगा। नहीं तो—आप जानते हैं औरगजेबको!

जसवन्त—जानता हूँ। और आप भी जानते हैं जसवन्तसिंहको। मैं किमीका नौकर या ताबेदार नहीं हूँ। मैं इम आज्ञाका पालन नहीं करूँगा।

औरग०—राजासाहब, यकीन कीजिएगा, औरगजेब कभी किसीको माफ नहीं करता। समझ-बूझकर काम कीजिएगा।

जसवन्त—और आप भी निश्चय जानिएगा कि जसवन्तसिंह कभी किसीसे नहीं डरता। समझ-बूझकर काम कीजिएगा।

औरग०—यह भी क्या मुमकिन है।—जसवन्तसिंह।

जसवन्त—औरगजेब।

औरग०—अगर मैं तुम्हे इसी ठम कैद कर लूँ, तुम्हे कौन बचायेगा ?

जसवन्त—यह तलवार। समझ लें, इम दुर्दिनमें भी महाराज जसवन्तसिंहके एक इशारेसे तीस हजार राजपूतोंकी तलवार एक साग मूर्यकी किरणोंमें चमक उठती है और इम गये गुजरे समयमें भी गजपूत—गजपूत ही हैं। (प्रस्थान।)

औरग०—निशाना चूक गया। जरा आगे बढ़ गया। इस राजपूतोंकी कौमको मैं अच्छी तरह पहचान नहीं सका। उनमें इतनी शान है। इतना घमट है। नहीं पहचान सका।

दिलदार—पहचानेंगे कैसे जहाँपनाह। आप चालत्राजीकी दुनियांमें ही रहते हैं। आप देखते आ रहे हैं सिर्फ वोखेवाजी, ख्यामद, नमकहरामी। उन्हें काबू करना आपके बायें हाथका खेल

हैं । लेकिन यह एक जुदा ही दुगकी दुनिया है । इस दुनियाके लोग जानसे बढ़कर जानको ममजते हैं ।

औरग०—हैं ।—देखो, आ भी अगर कुछ लगन कर सक्के । लेकिन जान पड़ता है अब मर्न गइयन हा गया है—हिकमत काम नहीं कर सकती । (प्रस्थान ।)

दिलदार—खिलदार ! तुम घुंमे पे मुई हाकर—अब कहीं कुल्हाटी होकर न निकग । मुझे यही डर है । पहले सजक लेनेवाला । उसके बाद ममखरा । उसके बाद राज-कानके टगाका जानकार । उसके बाद आयद दानिशमन्त (दार्शनिक)—उमके बाद ?

[बात करते करते औरगजेर और मीरउमलाकी फिर प्रवेश ।]

औरग०—मिर्फ यह दंगते रहना कि कुछ नुरुमान न पहुँचा सके ।

मीर०—जो हुक्म ।

औरग०—उमकी आँखें बहुत सुख्य हो गईं हैं । एकदम जानका मौफ ही नहीं है । राजपूतोंकी कौम ही ऐसी है ।

मीर०—मैंने देगा है जहाँपनाह, एक तोपमे भी बढ़कर एक राजपूत मौफनाक होना है ।

औरग०—देखना, गूर होशियार रहना ।

मीर०—जो हुक्म ।

औरग०—चरा महम्मदका मर पाम भेज देना—नहीं, मे ही उमके टेरेमे जाता है । (प्रस्थान ।)

मीर०—इम जगमे औरगजेर केम प्रराये हुए हैं, केसे पहले-की किमी जगमे नहीं प्रराये ।—भाई-भाईकी लडाई है—इसी-के आयद यह बात है ।—ओ ! भाई-भाईका झगला—कैसा दुदरती कानूनक खिलाफ काम है । केसे कटे पीका काम है !

दिल०—और कैसा जोश दिलाने वाञ्छ है। यह नगा सर नशोमे बढ़कर है। वजीर साहब, यह किसी तरह मेरी समझमें नहीं आता कि दुश्मनी बढ़ानेके लिए इन्मानने क्यों इतने मजहब बनाये—जब घरहीमें ऐसे बड़े दुश्मन मौजूद है। क्योंकि भाईके बराबर दुश्मन कोई नहीं है।

मीर०—क्या ?

दिल०—यह देखिए वजीरसाहब, हिन्दू और मुसलमान, इनका एक दूसरेसे क्या मेल मिलता है ? पहले खुदाके दिए हुए चेहरेको ही लीजिए, उसे रींच-खोचकर जहाँतक बढ़ला गया वहाँ तक बदल टाला। मुसलमान रखते हैं दाढी सामने,—हिन्दू रखते हैं चोटी पीछे (वह भी सामने न रखेंगे)। मुसलमान पच्छिमको मुँह करके नमाज पढ़ते हैं, हिन्दू लोग पूरबको मुँह करके पूजा-पाठ करते हैं। ये लोग नहीं मारते, ये लोग मारते हैं। ये दाहिनी तरफसे लिखते हैं, ये बाई तरफमें लिखते हैं।—लिखते हैं कि नहीं ?

मीर०—लिखते हैं।

दिल०—तब भी यह कहना पड़ेगा कि हिन्दू लोग मुसलमानोंकी अमलदारीमें एक तरह सुगसे है। ये और मत्र कुछ मान सकते हैं, लेकिन अपने किसी भाईकी हुक्मतको नहीं मान सकते।

(भीरजुमलाका हास्य ।)

दिल०—(जाते जाते) क्या ठीक है न ?

भीर०—(जाते जाते) हाँ ठीक है।

दूसरा दृश्य ।

स्थान—तेजुवामें शुजाका डेरा ।

समय—सन्ध्या ।

[शुजा एक नकशा देख रहे है । पियारा फूलोंकी माला हाथमें लिये हुए गाती हुई प्रवेश करती है ।]

पियाराका गान ।

गजल ।

सुवहसे मैंने ये बंटे बंटे, बनाई माला है जान मेरी ।
 पिन्हाऊँ तेरे गलेमें आजा, सुहाई माला है जान मेरी ॥
 सुवहसे मैंने नहीं किया कुछ, लगा हुआ जी इसीमें था वस ।
 रकुल तले बैठकर निराले, बनाई माला है जान मेरी ॥
 सुना रहा तान या पपीहा, कर्हा छिपा डालियोंमें बैठा ।
 उसीमें होकर मगन वहींपर, बनाई माला है जान मेरी ॥
 हवासे हिलती थीं डालियाँ सत्र, खुशीसे ज्यो ब्रूमने लगी थीं ।
 वही खुशी ले यहाँ हूँ आई, बनाई माला है जान मेरी ॥
 सुनहकी जैसे हँसी छिटककर, सुनहली रगत पनी चमनमें ।
 उसीमें मैंने निहाल होकर, बनाई माला है जान मेरी ॥
 न सिर्फ है फूल इसमें प्यारे, हवाका गाना चमनका खिलना,
 खुशी सुनहकी मिलाके मैंने, बनाई माला है जान मेरी ॥
 सभीसे बढकर हँसी तुम्हारी, भिली है इसमें, इसीसे इनको-
 गलेमें पहनो, तुम्हारे कारन बनाई माला है जान मेरी ॥

(पियारा वह माला शुजाके गलेमें डालती है)

शुजा—(हसकर) यह क्या पियारा मेरे लिए जैसा है ? मैंने तो अभी फतहयारी नहीं हासिल की ।

पियारा—इससे क्या होता है ! मरे नजदीक तुम मदा फतहयार हो । तुम्हारी मोह-बतके कैदखानेमें मैं कैद हूँ । तुम मेरे माफिक हो, मैं तुम्हारी जर-खरीद लोडी हूँ ।—क्या दूका है ? (घुड़न देखा ।)

शुजा—यह तो तुमने एक बटे मजेका नया ढग निकाला।—
अच्छा जाओ कैदी, मैंने तुमको गिर्हाई दी।

पियारा—मैं गिर्हाई नहीं चाहती, मुझे यह गुलामी ही पसन्द है।

शुजा—सुनो। मैं एक मोचम पटा हूँ।

पियारा—वह साच है क्या?—देखूँ अगर मैं उसकी कुछ तरकीब
कर सकूँ।

शुजा—(युद्धका नक्शा दिखाकर) देखो पियारा, यहाँपर मीरजुम-
लाकी तोपें हैं, यहाँपर महम्मदके पाँच हजार सवार हैं, और इस
जगहपर खुद औरगजेव है।

पियारा—कहाँ? मैं तो सिर्फ एक कागज देख रही हूँ। ओग तो
कुछ भी नहीं देख पड़ता।

शुजा—इस वक्त इसी तरह है। लेकिन कल लडाईके वक्त कौन
कहाँपर रहेगा, यह कहा नहीं जा सकता।

पियारा—कुछ कहा नहीं जा सकता।

शुजा—औरगजेवका दस्तर यह है कि जैसे ही उसकी तरफ
तोपके गोले बरमाये जाते हैं, ठीक वैसे ही वह घोंडा दौडाकर आकर
हमला करता है।

पियारा—हाँ! तब तो यह मामूली या सहल बात नहीं है।

शुजा—तुम कुछ नहीं समझती।

पियारा—जान गये।—कैसे जान गये?—हाँ—प्रताओ न किस
तरह जान गये? ताजजुन है, पिच्छुल ठीक जान गये।

शुजा—मेरी फौज कसबत नहीं जानती। अगर जसबतमिह-

को मिला सकूँ—एक दफा खिरकर दूगूँगा । लेकिन—अच्छा तुम क्या कहती हो ?

पियारा—मैन तुममे कहना सुनना छोट दिया है ।

शुजा—क्यों ?

पियारा—क्यों ! तुमसे कुछ कहो, तो तुम उसे कभी सुनते नहीं । मैं तुमको अच्छी तरह पहचानती हूँ । तुम जो ठान लेते हो वह ठान लेते हो । मुझसे मेरी राय पूछते जरूर हो लेकिन अपने खिलाफ राय सुनते ही चिढ़ जाते हो ।

शुजा—वह—हाँ—जो चाहे समझो ।

पियारा—इमीसे मैं पतिव्रता हिन्दू औरतकी तरह हूँ—हाँ करके टाल देती हूँ ।

शुजा—सच है, कसूर मेरा ही है । मैं मलाह मोंगता जरूर हूँ, मगर ठीक मलाह न होनेसे चिढ़ जाता हूँ ।—तुमने ठीक कहा । लेकिन अब सुधारनेकी कोई तदनीर नहीं है ।

पियारा—नहीं । सुधारनेकी कोई तदनीर होती, तो मैं तुम्हें सुधारती । इसीमे मैं इमका जतन नहीं करनी । मोंनसे गाना गाती हूँ ।

शुजा—गाना ही गाओ । तुम्हारा गाना एक तरहकी शराब है । सेंकडो फिन्को और तक्रलीफोंको दूर कर देता है । कडी गारदा-तोंको दुनियामे उटा ले जाता है । तब मुझ जान पडता है, जैसे एक सुरकी झनकार मुझे घेर हुए है । यह आममान, यह दुनिया, कुछ नहीं देख पडता । गाओ—कल लडाईं हागी । बहुत देर है । जो होना है वही होगा । गाओ ।

पियारा—तो यह गाना सुननेके लिए पहले इम पूर चाँदकी

चौदनीमें अपनी तबियतको नहला लो । अपनी स्वाहिशके फूलोंपर मुहव्वतका चदन छिडक लो—उसके बाद मैं गाना गाऊँ—और तुम अपने वे फूल मेरे पैरोपर चढाओ ।

शुजा—हा ! हा ! हा ! तुमने खूब कहा—हालों कि मैं तुम्हारी इस मिसालका ठीक तौरसे रस नहीं ले सका ।

पियारा—चुप । मैं गाना गाऊँ, तुम सुनो । पहले इस जगह पर सहारा लेकर—इस तरह बैठो । उसके बाद, हाथको इस जगह इस तरह रक्खो । उसके बाद, अँग्वे मूँटो—जैसे—ईसाई लोग इबादतके वक्त अँग्वे मूँदते हैं—हालों कि मुँहसे कहते हैं कि “या खुदा, हम अँधेरेसे रोगनीमे ले चल”—लेकिन असलमे खुदाने जितनी रोगनी दी है, अँग्वे मूँदकर उससे भी हाथ वो बैठते हैं ।

शुजा—हा ! हा ! हा ! तुम बहुतसी बातें कहती हो, लेकिन जब इन बगला भगतोका ठट्टा उडाती हो, तब वह जैसा मीठा लगता है—क्योंकि मैं कोई धरम ही नहीं मानता ।

पियारा—‘फ़ायदकी’ गलती है । ‘जैसा’ कहने पर उसके साथ जरूर एक ‘जैसा’ कहना चाहिए ।

शुजा—दारा हिन्दू-धरमका तरफदार है—बना हुआ है । आरग-जेव कइर मुसलमान है—उह भी ढोंगी है । मुराद भी मुसलमान है—कइर नहीं है—पर ढोंगी है ।

पियारा—और तुम कोई भी धरम नहीं मानते—तुम भी जने हुए हो ।

शुजा—कैसे ?—मैं किसी धरमका दिखावा नहीं करता । मैं साफ़ साफ़ मीथी तरहसे कहता हूँ कि मैं बादशाह होना चाहता हूँ ।

पियारा—तुम्हारा यही ढोंग है ।

शुजा—ढोंग कैसे है । मैं दाराकी हुकूमन माननेको राजी था । लेकिन औरगजेब और मुग़की हुकूमन नहीं मान सकता । मैं उनका बड़ा भाई हूँ ।

पियारा—ढोंग है—बड़ा भाई होना भी ढोंग है ।

शुजा—कैसे ! मैं पहले पैदा हुआ था ।

पियारा—पहले पैदा होना भी ढोंग है ! और पहले पैदा होनेमें तुम्हारा बहादुरी भी कुछ नहीं है । उसकी बजहमें तुम तरतपर ज्यादा दाना नहीं कर सकते हो ।

शुजा—क्या ?

पियारा—हमारा राजा रहमतउल्ला तुमसे बहुत पहले पैदा हुआ होगा । तो फिर नज़रपर तुमसे बढकर उसका दाना है ।

शुजा—यह तो बादशाहका बेटा नहीं है ।

पियारा—बादशाहका बेटा बननेमें कितनी देर लगती है !

शुजा—हा ! हा ! हा !—तुम इसी तरहकी प्रहम करोगी ! नहीं, तुम गाना गाओ—अगर हो सके तो ।

पियारा—सुनो । लेकिन खूब मन लगाकर सुनो । (गाना)

दुमरी ।

मन बाँध लिया किस बन्धनमें, दिलदार दिलारा सामरिया ।
मैं जा न सकूँ उसे तोड़ कहँ, मुझे कैद किया मुझे मोह लिया ॥ मन०
दिलचस्प छिपी हुई घेड़ी है ये, यह कैद है प्यारी प्रान-पिया ।
चले जानेमें पैर रुके, न बंदे, घिरहाकी विथा कसकावे हिया ॥ मन०
मिलनेकी हँसी गुशी ओर वही एक प्यारमें सब दुख दूर किया ।
इस कैदमें राहत चाहतकी मिलती है मुझे सुख पाये जिया ॥ मन०

नादिरा—फिर औरगजेबमे लडाईं करोगे ?

दारा—करूँगा । जबतक इस तनमे जान है, औरगजेबकी हुकूमत कभी न मानूँगा । लडूँगा । वह मेरे बूटे बापको कंद करके आप तरानपर बैठा है । मैं जबतक अच्चाको छुडा न सकूँगा, लडूँगा ।—नादिरा, सिर क्यों झुका लिया ? मेरा यह इरादा शायद तुमको पसंद नहीं है ।—क्या करूँ—

नादिरा—नहीं प्यारे, तुम्हारी राय ही मेरी राय है । तुम्हारी मर्जी ही मेरी मर्जी है । मगर—

दारा—मगर ?

नादिरा—प्यारे, हमेशा यह खटका, यह सफर, यह भागना किस लिए है ?

दारा—क्या करूँ बताओ, जब मेरे पाँचे पटी हो तब सब सहना ही पड़ेगा ।

नादिरा—मैं अपने ठिण नहीं कहती मालिक । मैं तुम्हारे ही लिए कहती हूँ । जरा आँडेमे अपना चेहरा देवो प्यारे, यह हड्डि-गाका ढोंचा रह गया है । ये सफेद बाल और उदास फीकी नजर—

दारा—आज अगर मेरा यह चेहरा तुम्हे नापसन्द हो, तो मैं क्या कर सकता हूँ !

नादिरा—मैं क्या यही कह रही हूँ !

दारा—औरतोंका सुभाव ही यह है ।—तुम्हारा क्या !—तुम कि मिकारिज, फर्माइज और नालिश कर सकती हो । तुम हम लोगोंके सुखमे रूकावट और दुःखमे बाँझ हो ।

नादिरा—(भरीई हुई आवाजसे) प्यार मचमुच क्या यही है ? (हाथ पकड़ना ।)

दारा—जाआ, इस वक्त तुम्हारा यह मिनमिनाना अच्छा नहीं लगता । (हाथ छुटाकर चल देना ।)

नादिरा—(कुछ देरतक आँसोंमें रुमाल लगाये रहकर विपदाक गभीर स्वरमें) मेरे रहीम—बस अब और नहीं ।—गहीपर पर्वा गिगकर यह खेल ग्वतम कर दो । सन्तनत गॅगर्ड, महलोंके ऐश छोटकर चली आई, राम्तेमे धूप सही, सदीं सही, सोई नहीं, साना नहीं ग्वाया,—इमी तरह ब्रहुनसे दिन गुजारने पड और गते काट नी पटी, सब हँसते हँमत सह लिया, क्योंकि शौहरका प्यार बना हुआ था । लेकिन आज (ग्णठरोध), बस अब नहीं । अब नहीं । सब सह सकती हूँ, मिर्फ यही नहीं सह सकती । (रोती है ।)

[सिपरका प्रवेश ।]

सिपर—अम्मी,—यह क्या ' तुम रो रही हो अम्मीजान ।

नादिरा—नहीं बेटा, मैं रोती नहीं । ओ सिपर ! सिपर !

(रोना ।)

सिपर—(पास आकर नादिराके गलेमें हाथ डालकर आँखोंमें रुमाल हटाता है) अम्मी, रोती क्यों हो ? किसने तुम्हें चोट पहुँचाई है ? मैं उसे कभी माफ न करूँगा—मैं उसे—

(इतना कहकर सिपर नादिराके गलेसे लिपटकर छातीमें सिर रखकर रोता है । नादिरा उसे छातीमें लगा लेती है ।)

[जोहरत-उभिसाका प्रवेश ।]

जोहरत—यह क्या !—अम्मी रो क्यों रही हैं सिपर ?

नादिरा—ना जोहरत, मैं रोती नहीं हूँ ।

जोहरत—अम्मी, तुम्हारी आँखोंमें आँसू तो मैंने कभी नहीं देखे । चाँदनीकी तरह हँसी हमेशा तुम्हारे होठोंमें ब्रमी रहती थी ।

भूषणी तकलीफोंमें, नींद न आनेकी वचैनीमें—बुरे दिनोंमें सधे दोस्तकी तरह हँसी तुम्हारे होठोंमें लगी ही रहती थी । आज यह क्या है अम्मी ?

नादिरा—यह मद्रमा जमानसे कहा नहीं जा सकता जोहरत, आन मेरे खुदाने मुझमें मुँह फेर लिया ।

[दाराका फिर प्रवेश ।]

दारा—नादिरा, मुझे माफ करो ! मुझसे कुम्भूर हुआ । बाहर जाते ही मुझे होश आया । नादिरा—(नादिराका जोरसे रोना ।)

दारा—नादिरा, मैं अपना कुम्भूर कुबूल करता हूँ । माफी माँगता हूँ । तब भी—छि ! नादिरा, अगर तुम जानती, अगर ममत्व सकती कि दिनरात मेरे जिगरमें कैसी आग सुलगा करती है—तो तुम मेरे इस वर्तायसे बुरा न मानती ।

नादिरा—और प्यारे, अगर तुम जानते कि मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ, तो तुम इतने मरत न हो सकते ।

सिपर—(अस्फुट स्वरमें) मैं तुम्हें देखताकी तरह मानता हूँ
(जोहरतका प्रस्थान ।)
अन्ना !

नादिरा—नहीं बेटा, तुम्हारे अघ्वाने मुझे कुछ नहीं कहा । मैं ही जग ज्यादाह तुनुक-मिनाज हूँ—मेरी ही कुम्भूर है ।

[बाँदीका प्रवेश ।]

बाँदी—बाहर एक साहब आपमें मिलनेके लिए खड़े हैं, सुदानन्द !

दारा—कौन है ?

बाँदी—माझम हुआ कि गुजरातके सूबेदार है ।

दारा—सूबेदार आये हैं ?

नादिरा—मैं भीतर जाती हूँ । (प्रस्थान ।)

दारा—उन्हें यहाँ ले आओ सिपर ।

(बाँदीके साथ सिपरका प्रस्थान ।)

दारा—देरूँ, शायद यहाँ सहारा मिल जाय ।

[शाहनवाज और सिपरका प्रवेश ।]

शाहनवाज—शाहजादा साहब, तसलीम ।

दारा—बन्दगी सुल्तानसाहब ।

शाहनवाज—जहाँपनाहने मुझे याद किया है ?

दारा—हाँ सुल्तानसाहब, मैंने आपसे मिलनेकी राहिश की थी ।

शाहन०—क्या हुकम है ?

दारा—हुकम ! सुल्तान साहब वह दिन अब नहीं रहा । आज आजिजी करने, भीख मँगने आया हूँ । हुकम देगा अब— औरगजेब ।

शाहन०—औरगजेब ! उमका हुकम मेरे लिए नहीं है ।

दारा—क्यों सुल्तान साहब, आज तो औरगजेब हिन्दोस्तानका बादशाह है ।

शाहन०—हिन्दोस्तानका बादशाह औरगजेब ! जो फकीरी और रिआया-परपरीका चेहरा लगाकर बड़े बापके गिलाफ बगावत करता है, मोहव्यतका चेहरा लगाकर भाईको कैद करता है, दीनका चेहरा लगाकर तरतपर बैठता है—वह बादशाह है ?— मैं एक अन्धे-दृष्टे-अपाहिजको उम तरतपर बैठाकर उसे बादशाह मानकर कोर्निश करनेको नैयार हूँ, लेकिन औरगजेबको नहीं ।

दारा—यह स्या सुल्तानसाहब ! औरगजेब आपका दामाद है ।

शाहन०—ओरगज़र अगर मेरा दामाद न होकर मेरा बेटा होता और यह बेटा अफ़ला ही होगा, तो भी मैं उसे ठाड देता । अबरम और बेईमानीको जिदगी रहते मैं कभी कुबूल नहीं कर सकता ।

दारा—तब आपने क्या ते किया है ?

शाहन०—मैं शाहजादा ताराकी तरफसे लड़ूंगा । पहलेहीसे उसकी तैयारी कर रहा हूँ । इस थोड़ीसी फौजको लेकर औरगज़ेवसे लड़ सकना ग़ैर मुमकिन है, इसीसे और फौज जमा कर रहा हूँ ।

दारा—किस तरह ?

शाहन०—महाराज जमरन्तसिंहसे मदद माँग मेगी हूँ ।

दारा—उन्होंने मन्ट ठना मज़ूर कर लिया है ?

शाहन०—कर लिया है ।—कोई डर नहीं है शाहजादा साहब,

आइए—आप आज मेरे मेहमान हैं । आप बादशाहके बड़े बेटे हैं । आप उनके पसंद किये हुए त्राग्रि-मुल्क हैं । मैं एक बूढ़ा आदमी होनेपर भी शाही ग़ान्दानका इमानदार ग़ान्मि हूँ । बूढ़े बादशाहके लिए मैं जग करूँगा । फतह न मिलेगी, जान तो दे सकूँगा ! बूढ़ा हुआ हूँ । एक सत्राय करके आरुघत तो बना हूँ ।

दारा—तो आप मुझे सहाय देते हैं ?

शाहन०—सहारा शाहजादा, आजसे मेरा घरदार सत्र आपका है । मैं शाहजादेका गुलाम हूँ ।

दारा—आप महामा हैं ।

शाहन०—शाहजादा साहब, मैं महामा नहीं, एक मामूली आदमी हूँ । और आज जो मैं कर रहा हूँ, उसे मैं कोई ग़ैर मामूली काम नहीं समझता । शाहजादा साहब, मेरी इतनी उमर अर्द्ध है

—मैं जोर देकर कह सकता हूँ कि जानकर मैंने कभी कोई अपरम नहीं किया। लेकिन साथ ही अच्छा काम भी ज्यादा नहीं किया। आज अगर मौका हाथ लगा है, तो एक अच्छे कामको क्यों जाने दूँ ? [दोनोंका प्रस्थान ।]

[जोहरत-उम्रिसाका फिर प्रवेश ।]

जोहरत—मैं इतनी नाचीज, निकम्मी और नाफाम हूँ। अत्रा-के किसी काम नहीं आती सिर्फ एक बोझ हूँ।—हायरे निकम्मी और गतोंकी जात। मा-त्रापत्नी यह हालत देखती हूँ, पर कुछ कर नहीं सकती। बीच बीचमें सिर्फ गर्म आँसू बहाती हूँ।—लेकिन मैं चाहें जो हो, कुछ करूँगी कुछ—जो पहाडकी चोटीसे कूदनेकी तरह डिलेरीका और कल्लकी तरह खौफनाक काम होगा। देवू।

चौथा दृश्य ।

स्थान—काश्मीर । राजा पृथ्वीसिंहका आरामबाग ।

समय—सन्ध्या ।

[सुलेमान अकेला टहल रहा है ।]

सुलेमान—इलाहाबादसे भागकर आखिरको इस दूर पहाडी मुल्क काश्मीरमें आना पटा। अब्बाको मदद देनेके लिए निकला। कुछ न कर सका।—यह मुक बडा ही खूबसूरत और अच्छा है।—जैमें एक जमा हुआ गाना—एक मुसविरका खीचा हुआ रगान, एक खुमारीसे भरा हुआ हुस्न—है। गोया बहिस्तकी एक हूर आसमानमे उतर आकर, मैर करनेसे बकर, पैर फैलाकर बर्फके पहाड़ (हिमालय) का सहारा लेकर, बार्ट हथेलीपर गाल रग्यकर, नीचे नका तरफ तार रही है।—यह गानेकी आवाज कैसी सुन

पडती है ।

(दूरपर गाना सुन पडता है ।)

मुलेमान—यह गानेकी आवाज तो प्रीरे प्रीरे प्रीरे पास ही आती जाती है ।—ये एक मनी हुई नाचपर प्रैठी हुई कर्ट औरतें खुद डोंट चलाती गाना हुई इतर ही आ रही हैं ।—कैसा अच्छा, कैसा भीठा गाना है !

[एक सन हुए बचरेपर शृंगार किये हुए स्त्रियाका प्रथम और गाना ।]

विभाग—तिताला ।

समय सब यों ही बीता जाय ।

आवेगा संग कौन हमारे, आधे सो आजाय ॥ समय० ॥

छोटा रजरा सजा हमारा, हिलता डुलता जाय ।

जुही चमेलीके द्वारोंका हिलना रहा लुभाय ॥ समय० ॥

फहराती रेशमी पताका धीमी हवा सुहाय ।

नादिया भीतर बालम रजरा हिलता डुलता जाय ॥ समय० ॥

प्रेमी नये मुसाफिर सारे नये प्रेमको पाय ।

मगन उसीमे लगन लगाये हिये न प्रेम समाय ॥ समय० ॥

मुहमें हँसी लसी आँसोंमें रही गुमारी जाय ।

गहते जाते प्रेम पथमे दुनिया दूर बहाय ॥ समय० ॥

आकाश देखिए सन्ध्याकाल सुहाय ।

लाली अनुराग सरीस्री जमीं रही समाय ॥ समय० ॥

स्वप्नसा उधर बाद वह देख पडे छवि छाया ।

नादिया लहराती कलधुनि रही सुनाय ॥ समय० ॥

सुबध पवनमें बसी धुनि सरसाय ।

लगाय ॥ समय० ॥

—मैं जोर देकर कह सकता हूँ कि जानकर मैंने कभी कोई अरम नहीं किया। लेकिन साथ ही अच्छा काम भी ज्यादा नहीं किये। आज अगर मौफा हाथ लगा है, तो एक अच्छे कामको क्यों जाने दूँ ? [दोनोंका प्रस्थान ।]

[जोहरत-उनिष्ठाना फिर प्रवेश ।]

जोहरत—मैं इतनी नाचीज निकम्मी और नाकाम हूँ ! अन्नाको किसी काम नहीं आती सिर्फ एक बोज्र हूँ !—हायरे निकम्मी औरतोंकी जात ! मा-बापकी यह हालत देखती हूँ, पर कुछ कर नहीं सकती। बीच बीचमें सिर्फ गर्म आँसू बहाती हूँ।—लेकिन मैं चाह जो हो, कुछ करूँगी, कुछ—जो पहाटकी चोटीसे कूदनेकी तरह डिलेरिका और कल्लकी तरह गौफनाक काम होगा। देखूँ।

चौथा दृश्य ।

स्थान—काश्मीर । राजा पृथ्वीसिंहका आरामवाग ।

समय—सन्ध्या ।

[सुल्तान अकेला टहल रहा है ।]

सुल्तान—इलाहाबादमें भागकर आखिरको इस दूर पहाड़ी मुक्त काश्मीरमें आना पडा। अब्याको मन्द देनेके लिए निकला। कुछ न कर सका।—यह मुक्त बड़ा ही रूतमूरन और अच्छा है।—जैसे एक जमा हुआ गाना—एक मुमत्रिकका रींचा हुआ राग, एक नुमारीम भग हुआ हुम्न—है। गोया वहिस्तकी एक हूर आसमानमें उतर आकर, मेर करनेसे बकरा पेर फैलाकर वर्षक पहाड (हिमालय) का सतांग देकर बरद हथेलीपर गाल रगकर नीचे गमानकी तरफ तार रही है।—यह मानेकी आज्ञा कैसी सुन

पटती है ।

(दूरपर गाना सुन पडता है ।)

सुलेमान—यह गानेकी आवाज तो धीरे धीरे धीरे पाम ही आती जाती है ।—ये एक मनी हुई नाचपर मठी हुई रुई औरतें खुद डाँट चलाती गाती रुई डगर ही आ रही है ।—कैसा अच्छा, कैसा मीठा गाना है !

[एक सन हुए बचरेपर गगार किये हुए बियाका प्रवेश और गाना ।]

निदान—तिनाला ।

समय सब यों ही बीता जाय ।

आवेगा संग कौन हमारे, आवे सो आजाय ॥ समय० ॥

छोटा बजरा सजा हमारा, हिलता डुलता जाय ।

जुही चमेलीके हारोंका हिलना रहा लुभाय ॥ समय० ॥

फहराती रेशमी पताका घीमी हवा सुहाय ।

नदिया भीतर गालम बजरा हिलता डुलता जाय ॥ समय० ॥

प्रेमी नये मुसाफिर सारे नये प्रेमको पाय ।

मगन उसीमे लगन लगाये हिये न प्रेम समाय ॥ समय० ॥

मुँहमें हँसी लसी जासोमे रही खुमारी छाय ।

बहते जाते प्रेम-पथमे दुनिया दूर बहाय ॥ समय० ॥

पश्चिमका आकाश देखिए सन्ध्याकाल सुहाय ।

यह लाली अनुराग सरीखी जीमें रही समाय ॥ समय० ॥

मधुर स्वप्नसा उधर चाद वह देख पडे छवि छाय ।

उमंग भरी नदिया लहराती कलधुनि रही सुनाय ॥ समय० ॥

सीतल मद सुगंध पवनमे वसी धुनि सरसाय ।

छुटे फुहारा हर्ष-हँसीका लीजे गले लगाय ॥ समय० ॥

१ स्त्री—ये सुन्दर नौजवान, आप कौन है ?

सुले०—मैं दाराशिकोहका लटका सुलेमान हूँ ।

१ स्त्री—ब्रादरशाह शाहजहाँके लडके दाराशिकोह ।—उनके बटे हैं आप ।

सुले०—हाँ, मैं उनका बेटा हूँ ।

१ स्त्री—और मैं कौन हूँ, यह तुमने नहीं पूछा सुलेमान । मैं काश्मीरकी मगहर नाचने-गानेवाली राजाकी प्यारी रडी हूँ । ये मेरी सहेलियाँ हैं ।—आओ, हमारे साथ इस नाचपर ।

सुले०—तुम्हारे साथ ? हाय बदनमीत्र औरत किस लिए ?

१ स्त्री—सुलेमान, तुम इतने नन्हें नादान नहीं हो । तुम हमारे पेशेको तो जानते हो ।

सुले०—जानता हूँ । जानता हूँ, इसीसे तुमपर मुझे इतना तरस है । यह रूप, यह जवानी, क्या पेशेकी चीज है ? रूप तन हैं, मोहब्बत उसकी जान है । ऐ औरत, बेजानके तनको लेकर मैं क्या करूँगा ?

१ स्त्री—क्यों ? हम क्या प्याग-मोहब्बत करना नहीं जानती ?

सुले०—सीखोगी कबमें ब्रताओ ! जिन्होंने हुस्नको बाजारकी चीज बना रक्खा है, जो अपनी हँसी तक खरीदारके हाथ बेचती हैं, वे प्यार करेंगी किम तरह ? प्याग तो सिर्फ देना ही चाहना है—वह सबी (दानी) का ही सुख है—भला उस सुखको तम किस तरह समझ सकोगी मैया !

१ स्त्री—तो हम क्या कभी किसीको प्यार नहीं करती ?

सुले०—करती हो—तुम प्यार करती हो—जरतारी पगडीको, हीरेकी अँगूठीको, कामदार जूतेको हाथीदोतकी छटीको । तुम प्यार कर मरती हो—धुंधराळे बालेको, बडी बडी आँवोको, खूनसूरत

चेहरेको, लाल लाल होठोंको । मेग यह ग्यूरमूरत चेहरा और गोरा रंग देगा है, या मैं वादशाहका पोसा हूँ—यह सुना है, इसीमें शायद आशिक हो गई हो । यह तो प्यार नहीं है । प्यार होना है दो निंगमें ।—जाओ मैया ।

२ बी—गजासाहब आरहे हे ।

१ ती—आज ऐसे बेनक्त '—चलो ।—पे तवान ! तुम इसका फल पाओगे ।

सुले०—क्या खफा होती हो मैया ?—तुम लोगोम मुझे नफरत या दुस्मनी नहीं है । सिर्फ तगम नेहण तगम आना है ।

(गाते गाते श्रियाका प्रस्थान ।)

सुले०—कैसे ता-जुमकी बात है ।—यह दूरोका हुम्न, यह औरोंकी चमक, यह अदा, यह कोयलका गला—इतना ग्यूरसूरत—मगर इतना गदा !

(दहन्ना)

[श्रीनगरके राजा पृथ्वीसिंहका प्रवेश ।]

राजा—शाहजादा, अफसोस !

सुले०—क्या गजामाहब ?

राजा—मैंने तुम्हें रिपतिमें निराश्रय देखकर आश्रय दिया था, और भगमक सुखसे रक्खा था । तुम्हारे लिण मैंने औरगजेवकी सेनामें युद्ध भी किया ।

सुले०—गजामाहब, मैंने कभी इममें इनकार नहीं किया ।

राजा—इम समय भी शायस्ताखों वादशाहकी ओरसे—तुम्हें पकडा देनेके लिए—बहुत कुछ कह सुन रहे थे—लालच दिवा रहे थे । मैं तब भी राजी नहीं हुआ ।

सुले०—मे आपका हमेशा अहसानमद रूँगा ।

राजा—मगर तुम ऐंम ओंठे गोंटे और वदमाश हो, यह मैं न जानता था ।

सुले०—यह म्या राजासाहब ।

राजा—मैंने तुम्हें अपने महलके बाहरके बागमें टहलनेके लिए छोड़ दिया था । तुम वहाँसे भीतर आगमबागमें घुमकर मेरी खैरसे हँसी दिखगी करोगे यह मुझे मादम न था ।

सुले०—गनामाहब, आपको बेग्या हुआ ।

राजा—तुम सुन्दर नौजवान, शाहजादे हो । मगर इसीसे इम—

सुले०—राजासाहब मैं—

राजा—जाओ शाहजादा ! सफाई देना बेकार है ।

(दोनोंका दो ओर प्रस्थान ।)

पाँचवाँ—दृश्य

स्थान—प्रयाग । आरगजेवरा डेरा ।

समय—रात ।

[आरगजेव भबेले ।]

ओरग०—कैसे जीन्दगी आदमी यह राजा जसवतसिंह है । खोजवाने मैदाने-जगमें पिछली रातको मेरी बेगमोंके डेरे तक छटकर एक बाढ़की तरह मेरी फौजके ऊपरमे चला गया !—ताजुब ! जो हो, शुजासे इस लडाईमें जीत गया ।—लेकिन उबर फिर काठी बटा उठ रही है । और एक आँधी आवेगी । शाहनराज और दारा । साथ जसवतसिंह भी है । गतरेकी जगह है । अगर—नहीं, वह न करेगा । इम जयसिंहकी भाफत ही करना होगा ।—यह छो, राजा साहब आही गये ।

[जयसिंहका प्रवेश ।]

जय०—जहोपनाहन मुझे याद किया है ।

औरग०—हाँ, मैं आपकी गलत गलत गलत गलत । आह—ओ
गिहत्तकी गर्मी पड़ रही है ।

जय०—बड़ी गर्मी है ।

औरग०—मेरे बदनमें जैसे जागकी चिनगारियों निकल रही
है ।—आपकी तबीयत तो अच्छी है ?

जय०—जहोपनाहकी महारानीसे बन्दा बहुत अच्छा है ।

औरग०—देगिण राजामाहब में कल मरेर छिछीको गढ़ेंगा,
आप भी मरे माय लौटेग न ।

जय०—जैमी आज्ञा हा—

औरग०—मैं चाहता हूँ आप मेर साथ चले ।

जय०—नो आज्ञा, मैं आठो पहर तैयार हूँ । जहोपनाहकी
आज्ञाका पाठन करनहीमें मुझे आनंद है ।

औरग०—मैं जानता हूँ राजासाहब । आप ऐसा दोस्त इस
दुनियामें मुझिल्लमे मिलेगा । आपका मैं अपना दाहिना हाथ
समझता हूँ ।

(जयसिंहका सलाम करना)

औरग०—राजामाहब, मुझे अफसोसकी बात है कि महाराज
नसरतमिह मेरा डेरा और रसत छूटकर ही चुप नहीं हैं । वे बागो
शाहनराज और दाराके साथ मिल गये हैं ।

जय०—उनकी शूर्यता है ।

औरग०—मैं अपने लिए अफसोस नहीं करता । राजामाहब
ही अपनी शक्ति आप बुला रहे हैं ।

जय०—बड़े दु खकी बात है ।

औरग०—खास कर आप उनके जिगरी दोस्त हैं । आपकी खातिरसे मैंने उनकी गुस्ताखी माफ की है । यहाँ तक कि मैं उनकी इस लूट-भाटका भी माफ करनेके लिए तैयार हूँ—सिर्फ आप लिहाजसे—अगर वे अब भी चुप होकर बैठ जायें ।

जय०—मैं क्या एकदफा उनसे मिलकर कहूँ ?

औरग०—कहनेसे अच्छा होगा । मुझे आपके लिए फिक्र है । वे आपके दोस्त हैं, इसी लिए मैं उन्हें अपना दोस्त बनाना चाहता हूँ । उन्हें सजा देनेमें मुझे बड़ी तकलीफ होगी ।

जय०—अच्छा मैं उनसे मिलकर कहूँगा ।

औरग०—हाँ कहिएगा । और यह भी जता दीजिए कि अगर वे इस लडाईमें किसीकी तरफ न होंगे तो मैं आपकी खातिरसे उनके सब कुम्हर माफ कर दूँगा, और उन्हें गुजरातका सबा तक देनेको तयार हूँ—सिर्फ आपकी खातिरसे ।

जय०—जहाँपनाह उदार है । मैं उन्हें जरूर राजी कर सकूँगा ।

औरग०—देखिए ।—वे आपके दोस्त है । आपका फज है उन्हें बचाना ।

जय०—जरूर ।

औरग०—तो अब आप जाइए राजासाहब । दिछी रवाना होनेकी तैयारी कीजिए ।

जय०—जो आज्ञा ।

(प्रस्थान ।)

औरग०—“ सिर्फ आपकी खातिरसे । ”—हाँग तो बुरा नहीं रचा ! यह राजपूतोंकी कौम बहुत मीधी और जरासी फैयाजी दिग्गनेसे काब्रुंम आ जानेवाली होती है ।— मैं इस फनको भी मस्क

कर रहा हूँ ।—बटा खोफनाक यह मेल है ।—शाहनवान और जसम-
नतसिंह—लेकिन मैं यहाँपर खटका खाता हूँ इस अपने लडके मह-
म्मदसे । उसका चेहरा—(गदन हिलाना) कम मोलता है । मरे
बारेंम बेएतगारीका बीज न जाने किसने उमके जीमे बो दिया है ।
क्या जहानाराने ऐसा किया है ?—वह लो, महम्मद आ ही गया ।

[महम्मदका प्रवेश ।]

महम्मद—अन्ना, आपने मुझे बुला भेजा है ?

औरग०—हाँ । मैं कल दिल्लीको लौट जाता हूँ । तुम शुजाका
पीछा करना । मीरजुमलाको तुम्हारी मददके लिए छोड़े जाता हूँ ।

मह०—जो हुकम अन्ना ।

औरग०—अच्छा जाओ ।—खडे हो । इस बारेंम बुठ कहना है ?

मह०—नहीं अन्ना, आपका हुकम ही काफी है ।

औरग०—तो फिर ?

मह०—मेरी एक अर्ज है अन्नावान ।

औरग०—स्या ?—चुप क्यों हो गये ! कहो बेटा !

मह०—बहुत दिनसे पूछे-पूछे कर रहा हूँ । अब यह शक
अपने दिलमें दबानकर रखना दुःस्वप्न हो गया है । बेअदबी भाक
कीनिपगा ।

औरग०—रहो ।

मह०—अन्ना, बादशाह शाहजहाँ क्या कैद है ?

औरग०—नहीं, कौन कहता है ?

मह०—तो फिर वे कितनेके महलमें क्यों रोक रखे गये हैं ?

औरग०—इसकी जम्मत आपकी है ।

मह०—और छोटे चाचा—उहे भी इस तरह कैद रगनेकी

जग्गत है ?

औरग—हाँ ।

मह०—और बाबाजानकी मौजूदगीमें आपके ताबूतपर बैठनेमें भी जग्गत है ?

औरग०—हाँ बेटा ।

मह०—अब्रा ! (इतना ही बहकर सिर झुका लेना ।)

औरग०—बेटा, सन्तनतके मामले बड़े टेढ़े होने हैं । इस उम्रमें तुम उनको नहीं समझ सोगे । इसकी कौशिश मत करो ।

मह०—अब्राजान, दोखेसे भोले भाईको कैद करना, मोहब्बत करनेवाले बेहरवान बापकी ताबूतमें उतारना और दीनकी दुर्हाल देकर इस ताबूतपर बैठना—इसे अगर राजनीति कहते हैं, तो यह राजनीति मेरे लिए नहीं है ।

औरग०—महम्मद, तुम्हारी तबीयत क्या कुछ खराब है ? जल्द ऐसी बात है !

मह०—(काँपती हुई आवाजमें) नहीं अब्रा, फिलहाल मुझ ऐसा तन्दुरुस्त आदमी शायद हिन्दोस्तानमें और न होगा ।

औरग०—फिर !— (महम्मद चुप रहता है ।)

औरग०—बेटा, मेरे ऊपर तुम्हारे दिलमें जो एतबार था, उस किसने डिगा दिया ?

मह०—सुद आपने ।—अब्राजान, जब तक मुमकिन था, मैं आँख मूँदकर आपपर एतबार करता रहा । लेकिन अब गैरमुमकिन है । शकका जहर मेरी रंगरंगोंमें फैल गया है ।

औरग०—यही तुम्हारी सआदतमदी है !—हो सकता है । चिरागके तले ही अँधेरा होता है ।

मह०—सआदतमदी !—अन्नाजान, सआदतमदी क्या आज मुझे आपसे सीगनी होगी ? सआदतमदी !—आपने अपने बूढ़े बापको केंद्र करके जो तर्गत उठान लिया है, उम्मी तर्गतको मैंने सआदतमदीके खयालसे ही लात मार दी है । सआदतमदी ! अगर मैं सआदतमद न होता, तो आज दिल्लीके तर्गतपर औरगजेय न बैठते, बैठता यही महम्मद ।

औरग०—मो जानत हूँ बेटा ! इसीमे ताजुय कर रहा हूँ ।—उम सआदतमदीको न गैयाना बेटा !

मह०—ना, अय मुमकिन नहीं है । बापका खिहान—सआदतमदी बहुत बड़ी और उदुत ही पाऊ चीन है । लेकिन उससे बढकर भी कोई ऐसी चीज है, जिसके आगे बाप—मा—भाई सब छोड़े होते जाते हैं ।

औरग०—मैं कहता हूँ बेटा, सआदतमदी न गैयाना । देखो, आगे चलकर यह सन्तनत तुम्हारी ही होगी ।

मह०—अब्या, मुझे आप सन्तनतका लालच दिग्वा रहे हैं ? मैं आपसे कह चुका हूँ कि अपने फर्नका खयाल करके मैंने तर्गतानको लात मार दी है । बाबाजान उस खिन यही सन्तनतका लालच दिग्वा रहे ये, आज आप फिर उसी सन्तनतका लालच दिग्वा रहे हे ! हाय ! तुनियामें सन्तनत क्या ऐसी बेशकीमत चीज है ? और तमीन क्या ऐसी सस्ती है ? सन्तनतके लिए तमीजदारीको (निरैकको) लात मार दूँ ? अन्ना, आपने तमीजदारीके खिलाफ जो सन्तनत हासिल की है, वह सन्तनत क्या आकरतमें आपके साथ जायगी ?—लेकिन अगर आप तमीजदारीको न छोडते, तो वह आपके साथ जाती ।

औरग०—महम्मद !

मह०—अब्बा !

औरग०—इसके क्या माने ?

मह०—इसके माने यह है कि मैंने आपके लिए मंत्र गैवा दिया—आज आपको भी अपने भीतर खोजकर नहीं पाता—शायद आपको भी मैंने गैवा दिया । आज मुझ ऐसा कगाल कौन है !—और आपने—आपने यह हिन्दोस्तानकी मलतनत जरूर पाई है !—लेकिन उससे बढकर सन्तनत गैवा दी ।

औरग०—वह सन्तनत कौनसी है ?

मह०—मेरी सआदतमदी !—वह कैसा रतन, वह कैसी दौलत थी—जिसे आपने खो दिया, मो आज आपकी समझमे नहीं आता । जान पडता है, एक दिन समझमे आजायगा । (प्रस्थान ।)

[औरगजेर धीरे धीरे दूसरी ओरसे जाता है ।]

छठा दृश्य

स्थान—जोधपुरका महल ।

समय—दोपहर ।

[जसवन्तसिंह और जयसिंह ।]

जय०—मगर इस रक्तपातमे आपको लाभ ?

जसवन्त०—लाभ ?—लाभ कुछ भी नहीं है ।

जय०—तो इस वृथा रक्तपातकी क्या जरूरत है, जब यह निश्चय है कि इस युद्धमे औरगजेवलीकी जय होगी ?

जसवन्त०—कौन जाने ।

जय०—क्या आपने औरगजेरको किसी युद्धमे हारते देखा है ?

जमरन्त०—नहीं । औरगजेन्द्र गीर पुरुष है, इसमें सन्देह नहीं । उस दिन मैं नर्मदा-युद्धके बीच उसे गोडेपर मगार देखा था । उम् दृश्यको मे डम जीवनमें कभी न भूलूँगा । वह मौन था, उसकी दृष्टि तीक्ष्ण और भौंहोंमें जल पड़े हुए थे । उम्के चारों ओर तीर, गोल्ले, वरस रहे थे, पर उधर उसका ध्यान ही न था । मे उस समय विद्वेषके कारण जल रहा था, मगर मन-ही-मन उमे साधुवाद दिये बिना भी मुझमें नहीं रहा गया ।—औरगजेन्द्र वीर है ।

जय०—फिर ?

जमरन्त०—मैं नर्मदा-युद्धके अपमानका बदला चाहता हूँ ।

जय०—औरगजेन्द्रके ठेरे टूटकर तो आपने उसका बदला चुका लिया ।

जमरन्त०—नहीं, यथेष्ट नहीं हुआ । क्योंकि उस रमदका कमीका पूरा करना औरगजेन्द्रको क्या खलेगा ! अगर छूटकर चला न आता, शुजामें मिल जाता, तो गेजुवाके युद्धमें शुजाकी हार न होती । अथवा आगरमें आकर बादशाह शाहजहाँको कैदसे मुड़ा देता ! तब भी एक बात थी ।—ब्रज भ्रम हो गया ।

जय०—पर इमसे आपको क्या लाभ होता ? बादशाह दारा हों, शुजा हों या औरगजेन्द्र ही हों—आपका क्या !

जमरन्त०—बदला ।—मे उन सत्रको विप-दृष्टि से देखता हूँ । किंतु सत्रमें अधिक विप-दृष्टिमें देखता हूँ—इस शठ औरगजेन्द्रको ।।

जय०—फिर खेजुवाके युद्धमें आपने उनका पक्ष क्यों लिया था ?

जमरन्त०—उस दिन दिल्लीके शाही दरवारमें उसकी सत्र बातोंपर मैंने विवास कर लिया था । उसने एकाएक ऐसा बढिया टोंग रचा, ऐसा स्वार्थत्यागका अभिनय किया, ऐसी हृदयकी दीनता

प्रकट की कि मैं अचम्भेमें आगया। मैंने सोचा, यह क्या! मेरी जमकी वारणा, मेरा प्रकृतिगत विश्वास क्या सब भूल ही है। ऐसे त्यागी, महत्, उदार, वार्मिक, पुरुषको मैंने अपनी कल्पनासे पापा समझ रक्खा था। ऐसा जादू फेर दिया कि सबसे पहले मैं ही "जय औरगजेवकी जय!" कहकर चिड़ा उठा। उसकी उस-दिनकी वह जय—नर्मदाके या खेजुवाके युद्धसे भी अद्भुत है। किन्तु उस दिन खेजुवाकी युद्धभूमिमें फिर असली औरगजेव देख पडा—वही कपटी शठ, कुचत्री औरगजेव नजर आया।

जय०—महाराज, खेजुवाके मैदानमें आपसे रूखा वर्ताप करनेके कारण बादशाहको बडा पठताना है। ऐसा अपराध कभी कभी सबमें हो जाता है। बादशाहको पीछेमें यथार्थ ही पश्चात्ताप हुआ था।

जसन्त०—राजासाहब, आप मुझसे इसपर विश्वास करनेके लिए कहते हैं?

जय०—मगर वह बात जाने दीजिए, बादशाह उसके लिए आपसे क्षमा भी नहीं चाहते और क्षमा-प्रार्थना करवाना भी नहीं चाहते। वे समझते हैं, आपके पिछले आचरणसे उस अन्यायका बदला चुका गया। वे आपकी सहायता नहीं चाहते। वे चाहते हैं कि आप दाराका भी पक्ष न लीजिए और औरगजेवका भी पक्ष न लीजिए। इसके बदलेमें वह आपको गुजरातका सूबा दे देगे। आप एक कल्पित अपमानका बदला लेनेमें अपनी शक्तिका क्षय करके मोल हेंगे—औरगजेवकी शत्रुता। और हाथ समेटे अलग बैठ रहनेसे उसके बदलेमें पाँगे, एक बडा भारी उपजाऊ सूबा गुजरात। छोट लीजिए। अपना सर्वस्व देकर अगर शत्रुता खरीदना चाहते हैं, तो खरीदिए। यह महज रोचगारकी बात है, मिर्फ बेचना-खरीदना है।—देख लीजिए!

जसन्त०—मगर दारा—

नय०—दारा आपके कौन हैं ? वे भी मुसलमान हैं, औरग-
भी मुसलमान है । आप अगर अपने देशके लिए युद्ध करने
तो मैं कुछ कहता ही नहीं । मगर दारा आपके कौन हैं ?
किसके लिए राजपूत जातिका रक्तपात करने जा रहे हैं ?
की ही अगर विजय हो—उमसे आपका क्या लाभ है, आपकी
भूमिका ही क्या लाभ है ?

जस०—तो आइए, हम देशके लिए युद्ध करें । मराठके राणा
सिंह, बीकानेरके राजा, आप, और मैं, ये चारो जने मिलकर
आपके राज्यको एक फ़ैकसे उडा दे सकते हैं—आइए ।

नय०—उसके बाद मम्राट् कौन होगा ?

जस०—क्यो ! राणा राजसिंह ।

नय०—मैं औरगजेवकी अग्नीनता स्वीकार कर सकता हूँ, मगर
मैंहका प्रभुत्व नहीं मान सकता ।

जस०—क्यो राजासाहब ?—वे अपनी जातिके हैं, हम लिए ।

नय०—अप्रश्य । अपनी जातिके दुर्भचन नहीं सहूँगा । मैं किसी
प्रवृत्तिका ढोंग नहीं रचता । ससार मेरे निकट एक बाजार है ।
कम दामोंमें अधिक माल पाऊँगा, वहीं जाऊँगा । औरगजेव
दामोंमें अधिक दे रहा है । इस निश्चित सम्पत्तिको छोटकर मे
धितके लिए प्रयत्न करना नहीं चाहता ।

जस०—हूँ ।—अच्छा राजासाहब, आप जाकर विश्राम करें ।
मैं-समझकर उत्तर दूँगा ।

नय०—अच्छी बात है । सोचकर देखिएगा—यह केवल नमार-
वने-खरीदनेका मामला है । और हम स्वामीन राणा न हो सकें,

राजभक्त प्रजा तो हो सकते हैं ! राजभक्ति भी वर्म है । (प्रशंसा)

जस०—हिन्दू-साम्राज्य, कपिका स्वप्न है । हिन्दुओंका इतना बहुत ही सूखा, त्रिक्कुल ठडा पड गया है । अब उसमें परस्पर जो नही लग सकता । “ स्वावीन राजा न हो सक, राजभक्त प्रजा हो सकते हैं । ” ठीक कहा जयसिंह । किसके लिए युद्ध करे जाऊँ ? दारा मेरा कौन है ?—नर्मदा-युद्धका बदला गजुआके युद्ध से ही लिया है ।—

[महामायाका प्रवेश ।]

महामाया—महाराज, इसको बदला कहते हैं ? मैंने अबत आडमें खडी हुई तुम्हारे इस पौरपहीन—समभार कोटिके पहलूमें ऐसे—आन्दोलनको देख रही थी ।—वाह ! खूब ! अच्छा समझ लिया कि बदला चुका लिया । उसे बदला कहते हैं महाराज और गजेवके पक्षमें होकर उसके डेरें छूटकर भागनेका नाम बदला है ? इसकी अपेक्षा तो वह हार अच्छी थी । यह हारके ऊपर पाप का बोझ है । राजपूत जाति विश्वासघात कर सकती है, यह तुम्हें ही दिखलाया ।

जस०—महामाया छूट करनेके पहलू मैंने और गजेवका पाप छोड दिया था ।

महामाया०—और उसके पीछे उमके डेर छूट लिये ?

जस०—युद्ध करके छूट की है, टकैती नहीं की ।

महा०—इसे युद्ध कहते हैं ?—धिक्कार है ।

जस०—महामाया, उसके सिवा क्या और कोई बात है ? दिनरात तुम्हारी तीगी जितकियों मुननने छिप ही क्या है तुमसे ब्याह किया था ?

- महा०—और नहीं तो व्याह क्यों किया था ?
- जस०—क्यों ! विचित्र प्रश्न है !—लोग व्याह किसलिए
 करते हैं ?
- महा०—हाँ, क्यों ? समोगके लिए ? पिलाम-वासनाको चरितार्थ
 देनेके लिए ? यही बात है ?—यही बात है ?
- जस०—(कुछ श्धर-उधर करके) हँ—एक तरहमे यही कहना
 पड़ेगा ।
- महा०—तो फिर एक वेश्या क्यों नहीं रख ली ?
- जस०—जान पटता है, आँगी आगई ।
- महा०—महाराज जो तुम केवल अपनी पशुप्रवृत्तिको चरितार्थ
 करना चाहते हो, जो कामकी मेजा करना चाहते हो—तो उसका
 नाम कुल्कामिनीका पवित्र अन्त पुर नहीं है—उमका भ्रान वेश्याका
 पवित्र नग्नक है । उही नाओ । तुम रुपया दोगे, वह रूप देगी ।
 उसके पास लालसाके मारे जाओगे और वह तुम्हारे पास
 वैसी पापी पेटकी जालासे । स्वामी और स्त्रीका सम्बन्ध वैसा
 है ।
- जस०—फिर ?
- महा०—स्वामी और स्त्रीका सम्बन्ध प्रेमका सम्बन्ध है । यह
 ऐसा वैसा नहीं है । जो प्रेम प्रियतमको दिन-दिन नजरोसे नहीं
 ता, दिन-दिन और भी प्यारा बनाता जाता है, जो प्रेम अपनी
 को भूल जाता है, और अपने देवताके चरणोंमें अपनी बलि
 है, जो प्रेम प्रातःकालके सूर्यकी किरणोंकी तरह जिसके ऊपर
 है उसीको चमका देता है—उज्वल बना देता है, गगाने जलकी
 जिसके ऊपर पडता है उसीको पवित्र कर देता है, टेपताके नर-

दानकी तरह जिसके ऊपर वरमता है उसीको भाग्यशाली बना है,—यह वही प्रेम है। यह स्थिर, ज्ञान्त और आनन्दमय है क्योंकि यह स्वार्थत्यागहीना रूपान्तर है।

जस०—महामाया, तुम मुझसे क्या वैसा ही प्रेम करती हो

महा०—हाँ। तुम्हारे गौरवको गोदमें लेकर मैं मर सकती उस गौरवके लिए मुझे इतनी चिन्ता, इतना आप्रह है कि गौरवको मलिन होते देखनेके पहले ही मैं चाहती हूँ कि अभी जाऊँ। राजपूत जातिके गौरव—मारवाडके गौरवका तुम्हारे हाथ गला घोटा जाय, इसके पहले ही मैं मरना चाहती हूँ। मैं तुम्हें इतना प्रेम करती हूँ।

जस०—महामाया !—

महा०—आँख उठाकर देखो—यह धूप पडनेसे चमकती हुई परतमाला, दूरपर ये बाटूके ढेर। आँख उठाकर देखो—यह पहाड़ नदी, लहरा रही है, जैसे सौन्दर्य झिलमिला रहा है। आँख उठाकर देखो, देखो—यह नीले रगका आकाश, जैसे वह अपनी नीलम निचोडकर दिखा रहा है। यह उल्लुओका शब्द सुनो। साथ ही साथ सोचो, इस जगहपर एक दिन टैगोंका निवास था। मारवा और मेवाड़, दोनो वीरताके युग्म बालक हैं। महत्त्पके आकाश बृहस्पति और शुक्र ग्रहके समान चमक रहे हैं। धीरे धीरे उस महिमाका महासमारोह मेरे सामनेसे चला जा रहा है। आओ चारोंपोंके बालको, गाओ वही गान।

जस०—महामाया !—

महा०—बोले नहीं। यह इच्छा जब मेरे मनमें मुझे जान पटता है कि यह मेरा पूजाका समय,

रजाओं, मोड़ो नहीं ।

जम०—अबद्व ही इमे कोई मानमिक रोग हा गया है ।

(धारे धीरे प्रस्थान ।)

महा०—मान हो तुम सुन्दर, सौम्य, शान्त,—जो मेरे आंग
आकर लडे हो गये ! (चारणारे बालकोंका प्रवक्ष) गाओ बालको
यही जन्मभूमिका गाना गाओ ।

गजल सोहनी—ताल धमार ।

देश ऐसा खोजनेसे भी न पाओगे कहीं ।

श्रेष्ठ सबसे जन्मभूमि, इसे भुलाओगे नहीं ॥

अन्न वन फूलों-फलोंसे है भरी धरती हरी ।

देशभक्तों, श्रेय भी उत्कर्ष पाओगे यहीं ॥

स्वप्नसे तैयार त्यो स्मृतिले धिरा यह देश है ।

है यही सर्वस्व, इसको तुम गवाँओगे नहीं ॥

चन्द्र-सूर्य-प्रकाश, ऋतुओंका प्रभाव प्रसन्नता ।

हैं कहीं ? ये सुविद्याँ ऐसी न पाओगे कहीं ॥

खेलती ऐस विजलियाँ श्याममेघोमे कहीं ?

पक्षियोंके शब्द ऐसे तुम सुना दोगे कहीं ?

हं पवित्र नदी कहीं इतनी, पहाड विचित्र ही ?

इतने खेत हरेभरे हमको दिखा दोगे कहीं ?

फूल पेड़ोंमें विचित्र प्रकारके फूला करे ।

बोलते पक्षी त्रिविध हरकुजमे रहते यहीं ॥

भाइयोका नेह ऐसा ही मिलेगा किस जगह ?
 प्यार माका बापका ऐसा न पाओगे कहीं ॥
 जननि, तेरे श्री-चरण रखकर हृदयमें अन्तको ।
 मर सकें हम जन्महीनी भूमिके ऊपर यहीं ॥

पियारा—इसमें ताज्जुब क्या है ! मोहब्वतमें पटक लो ग डममें भी बढ़कर सत्तीके काम कर डालते ह । चाहके लिए लो ग दीवारें फोड़ते ह, छतोंमें कूद पड ह, दरिया पेर गये ह, आगमें फोड़ पडे ह, जहर खाकर मर गये ह । यह तो एक महज मामूली बात है । बापको छोड़ दिया । बला भारी काम किया । यह तो सभी करते ह । मैं इसके लिए ताजुब करनेको तैयार नहीं हूँ ।

शुजा—लेकिन—नहीं—यह एक बडा भारी ताज्जुब है । नो चाहे सो हो लेकिन महम्मदने और मेने मिलकर औरगजेबकी फौजको बगालसे मार भगाया है ।

पियारा—इस लडाईके सिया तुम्हारे पास क्या और कोई जिक्र ही नहीं है ? मैं जितना तुम्हे भुला रखना चाहती हूँ, उतना ही तुम उसी बातको छेड़ते हो ।

शुजा—एक तो जगमें यो ही बडा भारी मना है और इसके सिया—
[वादीका प्रवेश ।]

वाँदी—जहाँपनाह, एक फकीर हाजिर होना चाहता है ।

पियारा—कैसा फकीर है—लगी दाटी है ?

वाँदी—हो सरकार । यह कहता है रडी जग्गत ह, अभी मिलना चाहता हूँ ।

शुजा—अच्छा, यहीं ले आ ।—पियारा, तुम भीतर जाओ ।

पियारा—अच्छी बात है, तुम मुझे भगाये देते हो ।—अच्छा मैं जाती हूँ ।
(प्रस्थान ।)

शुजा—जा, उसे यहाँ भेज द ।
(वाँदीका प्रस्थान ।)

शुजा—पियारा एक हँसीका पुहारा—एक बे-मत-ग्यकी बातोंका दरिया है । इसी तरह यह मुझे जगकी फिनासे

ती है—

[दिलगिरक पवेश।]

दिलगिरक—शाहजादा साहब, तमलीम । आपके नामका एक खत है—(पत्र देता ।)

शुजा—(पत्र लेकर गोप्य पढ़कर) यह क्या ! तुम जहाँमें आयें हो ?

दिल०—क्या गतमें तमस्तगत नहीं है शाहजंग साहब—
चेहरा देखनेसे ही शाहजादेकी अहमदकी पता चलता है । खूब चाल चली ।—

शुजा—क्या चाल ?

दिल०—शाहजादेने शुजाकी लडकीसे शादी करके—आ—
गुन तदवीर की है । मामनेसे तीर मारनेकी वनिस्वत पीछी तरफसे—
ओ ! औरगजेप्रका वेटा ही तो टहग ।

शुजा—पीछेसे तीर मारेगा कौन ?

दिल०—डर क्या है—मैं क्या यह बात सुन्तान शुजासे कहन जाता हूँ ! यह खत उन्हें कही भूलकर दिखा न दीनिगा शाहजादासाहब—

शुजा—अरे वाह, मैं ही तो सुल्तान शुजा हूँ । मुहम्मद तो मेरा दामाद है !

दिल०—हो !—चेहरा तो आपका अच्छे नौजवानक एसा है ।
सुनिए—ज्यादह चालाकी न करिएगा । आप अगर मुहम्मद है तो
मैं जो कह रहा हूँ सो ठीक समझ ही रहे होंगे ।
शुजा है, तो जो मैं कह रहा हूँ उसका एक हर्फ

शुजा—अच्छा तुम इस वक्त जाओ । इमकी

करता हूँ—तुम जाकर आराम करो, जाओ ।

दिल०—जो हुकम—(प्रस्थान ।)

शुजा—यह तो पटी उल्झनका मामला दरपेश है । बाहरी दुश्मनोंके मारे ही नाकम टम है । उसके ऊपर औरगजेब, तुमने घरमें भी दुश्मन लगा दिये हैं । लेकिन जाओगे कहाँ । अभी हाँ हाँ हाँ तदवीर करता हूँ । तकदीरसे यह गत मेरे हाथ पड गया ।—यह महम्मद आरहा है ।

[महम्मदका प्रवेश ।]

शुजा—महम्मद !—पटो यह गत ।

मह०—(पटककर) यह क्या ! यह क्या ! यह किसका गत है ?

शुजा—तुम्हारे वालिदका । दस्तपत नहीं देगत ? तुमने सुनाका गयाह करके उसे गत लिया । कि तुमने अपने बापकी जो मुखा-ल्फतकी है उसका ऐजम अपने समुर—यानी मुजको गोवा देकर औरगजेबको गुज करोगे ।

मह०—मैंने अब्बाको कोई गत ही नहीं लिया । यह जायी गत है ।

शुजा—मुझे यकीन नहीं आता । मैं पतवार नहीं कर सकूँ । तुम आज इसी घडी मेरे घरसे चले जाओ ।

मह०—यह क्या !—कहाँ जाऊँ ?

शुजा—अपन बापके पाम ।

मह०—लेकिन मैं कसम खाता हूँ—

शुजा—नहीं बहुत हा चुका ।—मैं मल्लनकी लटकी—
जीतूँ, यह अलग बात है । अपने घरमें दुश्मनको—
पको—पाल नहीं सकता ।

मह०—मे—

शुजा—मैं कुछ सुनना नहीं चाहता । जाओ, अभी जाओ ।

(महम्मदका प्रस्थान ।)

शुजा—हाथोहाथ तदवीर कर दी । औरगजेब्रने बड़ी भारी चाल खेली थी—मगर जायगा कहीं !—वह लो, पियारा फिर आगई !

[पियाराका प्रवेश ।]

शुजा—पियारा ! पकड लिया ।

पियारा—किसे ?

शुजा—महम्मदको । साहबजादेने मुझपर फदा डाला था । तुमसे मैं अभी कह रहा था न कि यह बटे खटकेकी बात है !—इस वक्त सब हाल खुल गया । पानीकी तरह साफ हो गया ।—उसे घरसे निकाल दिया है ।

पियारा—किसे ?

शुजा—महम्मदको ।

पियारा—यह क्यों !

शुजा—बाहर दुश्मन, घरमें दुश्मन,—शात्रास भैया—गूब अहमन्दी की थी ।—मगर चाल चल न सकी । मैंने पकड लिया ।—यह देखो खत ।

पियारा—(पत्र पढकर) तुम्हारा डिमाग खराब हो गया है । हकीमको दिग्माओ ।

शुजा—क्यों ?

पियारा—यह जाली—झूठा खत है । समझ नहीं सके ? जेबका फरेज । इतना भी नहीं समझ सकते ?

शुजा—नहीं, यह अच्छी तरह समझमें नहीं आता ।

पियारा—यही अरु लेकर तुम चले हो औरगंजके निरुतः
 हीके धोखे कपाम खागये । मुझसे एकदफा पूरा भी नहीं दूना
 को निकाल दिया । चलो, अब चकर लटकी हो अरुदको
 समझाये ।

शुजा—यह गत जाली है ?—पेसी मत !—क्यों नरु नरु
 तुमने नहीं कहा था ।—खैर, होशियाग रहना अच्छी हो बात है ।

पियारा—इसीसे दामादको निकाल दिया ?

शुजा—बेशक, बड़ी भारी मूढ हो गई, यही करना चाहिये ।
 और, सुनो, एक तदगीर करता हूँ । लटकीको ठमस साथ दिय देना
 हूँ और मुनासिर तोरमे दहेज भी दे देना हूँ । दूना लटकीको उस-
 की सुसराल भेजता हूँ । इमें कुठ पैर नहीं है । इर क्या है—
 चलो, दामादको यही चल कर समझाये । यही कहकर उस विदा
 कर दे ।

पियारा—लेकिन विदा क्यों कर दोगे ?

शुजा—वक्त खराब है । होशियाग रहना अच्छा है । ममझाये
 नहीं हो ।—चलो, चकर ममझाये । (दामाद जाने दे ।)

दूसरा दृश्य ।

स्थान—जिहनगर्कि घरम दाराऊ रहनेका कमरा ।

समय—रात ।

[सिपर और जाहरत खड़े हैं ।]

जोहरत—सिपर !

सिपर—क्या ?

जोहरत—देखते हो ?

सिपर—क्या ?

जोहरत—कि हम लोग यों जगली जानवरोकी तरह एक जगलसे दूसरे जगलमे मारे मारे फिरते हैं, रास्तेके कगालकी तरह एक आदमीके दरवाजेपर लात ग्वाकर दूसरेके दरवाजे पेट मारनेके लिए जाते हैं ।—देखते हो ?

सिपर—देखता हूँ । लेकिन चारा क्या है ?

जोहरत—चारा क्या है ? मर्द हो तुम ।—वेधडक कह रहे हैं कि चारा क्या है ? मैं अगर मर्द होती, तो इसकी तदवीर करती ।

सिपर—क्या तदवीर करती ?

जोहरत—(छुरा निफालकर) यही छुरा लेकर लुटेरे दगाबाँ औरगजेवकी छातीमे घुसेड देती ।

सिपर—खून ! ! !

जोहरत—हाँ खून, चाँक पटे ?—खून । लो यह छुरा, दिखा जाओ । तुम बच्चे हो, तुमपर किसीको शक न होगा—जाओ ।

सिपर—रूभी नहीं । खून नहीं करूँगा ।

जोहरत—टरपोक ! देखते हो—मों मर रही है ! देखते हो—अब्बाजान पागल हो गय है । बैठे बैठे यह सब देख रहे हो ?

सिपर—क्या करूँ ?

जोहरत—टरपोक ! वुजदिल !

सिपर—मैं वुजदिल नहीं हूँ जोहरत ! मैं मैदाने जगमे अब्बाजान पास हाथीपर बैठकर लडा हूँ । मुझे जान जानेका डर नहीं है लेकिन खून नहीं करूँगा ।

जोहरत—अच्छी बात है ।

(प्रस्थान ।)

सिपर—बहन, यह गुस्ता बेकार है । कोई चारा नहीं है ।
(प्रस्थान ।)

~~तीसरा-दृश्य~~

स्थान—नादिराका कमरा ।

समय—रात ।

[पलगपर नादिरा पडी है । पास दारा है ।

दूसरी तरफ सिपर और जोहरत हैं ।]

दारा—नादिरा, दुनियाने मुझे छोड दिया है—सुदाने मुझे छोड दिया है । सिर्फ तुमने अबतक मेरा साथ नहीं छोडा था । तुम भी मुझे छोड चली !

नादिरा—मेरे लिए तुमने बहुत मुसीबते शेली हैं प्यारे !—
और—

दारा—नादिरा, दुखकी जलनसे पागल होकर मैंने तुमको गहन सग्न सग्न वाते सुनाई हैं ।—

नादिरा—प्यारे, मुसीबतमें तुम्हारा साथ देना ही मेरे लिए बटे फगकी बात है । उसीकी याद साथ लेकर मैं दूसरी दुनियाको जाती हूँ—सिपर—बेटा ! बेटी जोहरत ! मे जाती हूँ—

सिपर—तुम कहाँ जाती हो अम्मी !

नादिरा—कहाँ जाती हूँ, यह मैं नहीं जानती । मगर जिस जगह जाती हूँ वहाँ शायद कोई रज या मुसीबत नहीं है—भूख-प्यासकी तकलीफ नहीं है—दुख-दर्द-बीमारी नहीं है—लडाई-झगडा और टाट नहीं है ।

सिपर—तो हम भी वहाँ चेंगे अम्मी—चलो अब्बा, अब

नहा सहा जाता ।

नादिरा—अब तुम्हें कोई तकलीफ नहीं उठानी पड़ेगी बेटा ।
तुम जिहनखोंके घरमें आगये हो । अब कुछ दुख न मिलेगा ।

सिपर—यह जिहनखाँ मौन है अब्बा ?

दारा—मेरा एक पुराना दोस्त ।

नादिरा—तुम्हारे अब्बाने दो मर्तवा उसकी जान बचाई है । यह तुम्हारी तकलीफें रफा कर देगा और मदद देगा ।

सिपर—लेकिन मैं उसे कभी धार न कर सकूँगा ।

दारा—क्यों सिपर ?

सिपर—उसका चेहरा—उसकी नजर नेकीका नमना नहीं है । अभी वह अपने एक नौकरसे न जाने क्या फुसफुस कह रहा था— और मेरी तरफ ऐसी चोरनी सी नजरसे देख रहा था कि मुझे खौफ मालूम हुआ—मुझे बटा ही खौफ मालूम हुआ अम्मी ! मैं दौटकर तुम्हारे पास चला आया ।

दारा—सिपर सच कहता है नादिरा ! मैंने जिहनके चेहरेपर एक तरहकी ऐयारीकी झलक देखी है, उसकी आँखोंमें एक खूनी चमक देखी है । उसकी वीमी आवाजसे कभी कभी जान पड़ता है कि यह एक छुरेपर धार रग रहा है । उस दिन जब यह मेरे पैरोंपर गिरकर अपनी जान बचानेके लिए गिडगिडा रहा था तब वह चेहरा और ही था, और आजका चेहरा और ही है । यह नजर, यह आवाज, यह ढग—बिल्कुल नया है ।

नादिरा—तब भी तुमने दो मर्तवा उसकी जान बचाई है । यह इंसान ही तो है, सँप तो नहीं है ।

दारा—इन्सानका एतवार मुझे नहीं रहा नादिरा ! मैंने देखा

है कि इन्सान सँपमे भी बढ़कर चहरीला और पाजी है । मगर कभी कभी—क्यों नादिरा, बहुत तकलीफ हो रही है ?

नादिरा—नहीं, कुछ नहीं । मे तुम्हारे पास हूँ । तुम्हारी मोह-
व्यतआमेज नजरमे मेरी मत्र तकलीफ मिटी जाती है । लेकिन अब
देर नहीं है—तुम्हारे हाथमे मिपरको मोपे जाती हूँ—तेगना !—
उधे सुलेमानसे—मुलाकान न हो मकी !—खुदा !—(मृत्यु)
दारा—नादिरा ! नाटिंग !—नहीं, सब ठटा हो गया—चली
गई ।

मिपर—अम्मी—अम्मी !

दारा—चिराग गुल हो गया ।

(जोहरत दोना हाथोंसे कलेजा धामर एकटक ऊपरकी तरफ देखती है ।)

[चार सिपाहियोंके साथ जिहनखाना प्रवेश ।]

दारा—कौन हो तुम ? इम वक्त इस जगहको नापाक करने
आय हो ?

जिहन०—गिरफ्तार कर लो ।

दारा—क्या ? मुझे गिरफ्तार करोगे जिहनखों ?

सिपर—(दीवारसे तलवार उतार कर) किसकी मजाल है ?

दारा—मिपर तलवार रख दो !—यह बहुत ही पाक उड़ी है,
यह बहुत ही पाक जगह है ! अभीतक नादिराकी रूह यहाँ मौजूद
है—तुनियाके सुख-दुखमे प्रिदा होनेके पहले यह सबको नजर
भर देग लेना चाहती है ! अभीतक बहिश्तमे डूरे उसे यहाँ न
जानेके लिए आकर नहीं पहुँची ! उमे सदमा न पहुँचाओ—उसे
परेधान न करो—मझे गिरफ्तार करना चाहते हो जिहनखों ?

जिहन०—हैं शाहजादा साहब !

दारा—जान पड़ता है, और गजेबके हुकमसे !

जिहन०—हैं शाहजादा साहब !—

दारा—नादिरा, तुम सुन तो नहीं रही हो ! सुन पाओगी तो नफरतसे तुम्हारी लाश काँप उठेगी ! तुम्हें खुदापर बड़ा भरोसा था !

जिहन०—इन्हें गिरफ्तार कर लो । अगर ये रुकावट टाले, तो तलवारसे काम लेनेसे भी मत चूको ।

दारा०—मैं रुकावट नहीं डालता । मुझे वॉधो । मुझे कुछ भी ताज्जुब नहीं है । मैं इसी तरहके किसी सुलककी उम्मेद कर रहा था । और कोई होता तो शायद और तरहके सुलकका उम्मेदवार होता । और होता तो शायद सोचता कि यह कितनी बड़ी नमकहरामी है, जिसे मैंने दो टफा बचाया है वही मुझे पहले अपने पास रखकर पीछे बोखा दे,—यह कितना बड़ा पाजीपन है ! लेकिन मैं यह नहीं सोचता । मैं जानता हूँ कि दुनियाके सब अच्छे खयालात गुनाहके खौफसे जमीनमें सिर टाले फूट फूट कर रो रहे हैं—ऊपरकी तरफ आँख उठाकर देखनेकी भी वे हिम्मत नहीं कर सकते । मैं जानता हूँ, इस वक्त दुनियाका वरम है खुदगर्जी, ढग है फरेब, पूजा है खुशामद, फर्ज है जुआचेरी । ऊँचे खयालात अब बहुत पुराने हो गये हैं । शाइस्तगी (सभ्यता) की रोशनीसे वरमका अँपेरा दूर हो गया है । वह पुराना वरम जो कुछ बाकी है, सो शायद किसानोंकी झोपड़ियोंमें, कोल भील वगैरह पहाड़ी कौमोंके गअरपनमें है ।
हैं जिहनखौं, मुझे गिरफ्तार करो ।

सिपर—तो मुझे भी गिरफ्तार करो ।

जिहन०—तुमको भी न छोड़गा शाहजादा साहब, बादशाह सलामतसे खूब इनाम पाऊँगा ।

दारा—पाओगे क्यों नहीं ! इतनी बड़ी नमरुहरामीकी कीमत न पाओगे ? यह भी कही हो सकता है !—खूब दौलत पाओगे । मैं तुम्हारे उस खुश चेहरेको अभीसे देख रहा हूँ । कैसी सुशीली बात है !—खूब दौलत पाओगे । जत्र मरना, अपने साथ लेते जाना ।

जिहन०—देर काहेकी है—गिरफ्तार करो ।

दारा—गिरफ्तार करो ।—नहीं, यहाँ नहीं ! बाहर चलो ! इस बहिश्तको दोजख मत बनाओ ! इतना बड़ा जुदरती कानूनके खिलाफ काम यहाँ !—ऐ जमीन !—तू इतना सह सकती है ! चुपचाप सह रही है !—गुदा ! तुम दोनो हाथोंको समेटे यह सत्र देख रहे हो !—चलो, जिहनखों बाहर चलो ।

(सत्र जाना चाहते हैं ।)

दाग—ठहरो, एक बात कह जाऊँ, जिहनखों, मानोगे ? जिहनखों—इस देरीकी लाशको लाहौर भेज देना ! वहीं शाहीगान्दानके कप्रिस्तानमे इसे गडगा देना । ऐसा कर सकोगे ? मेने दो मर्तबा तुम्हारी जान बचाई है, इसीसे यह भीख तुमसे माँग रहा हूँ । नहीं तो इतनेके लिए भी तुमसे नहीं कह सकता ।—मेरा कहा करोगे ?

जिहन०—जो हुकम शाहजादा साहब ! यह काम न करूँगा तो मालिक औरगजेब नाराज होंगे ।

दारा—तुम्हारे मालिक औरगजेब !—हूँ—मुझे कुछ भी खज नहीं है !—चलो—(फिरकर) नादिरा !—

(इतना कहकर दारा फिरकर सहसा नादिराकी लाशके पास घुटने टेकते और दोनों हाथोंसे मुँह ढक लेते हैं ।)

दारा—(उठकर) चलो जिहनगर्वो ।

(मयका बाहर चलना । सिपरका नाटिराकी लाशपर गिरकर रोना ।)

दारा—(हसे स्वरसे) सिपर !

(भयसे सिपरका चुप हो जाना । मयका बाहर जाना ।)

चौथा दृश्य ।

स्थान—जोधपुरका महल ।

समय—सन्ध्या ।

[जसवन्तसिंह और महामाया ।]

महा०—महाराज, अभागे दारासे कृतघ्नता करनेके पुरस्कारमें गुजरातका मूवा पाकर सन्तुष्ट तो है न !

जस०—महामाया, उसमे मेरा क्या अपराध है ?

महा०—ना । अपराध क्या है ?—यह तुम्हारा बड़ा भारी सम्मान है, बड़ा भारी गौरव है ।

जस०—गौरव न सही, लेकिन इसमे अन्याय भी मुझे कुछ नहीं देख पड़ता । दाराकी सहायता करना या न करना मेरी इच्छाकी बात है । दारा मेरे कौन हैं ?

महामाया—और कोई नहीं केवल प्रभु ।

जस०—प्रभु ! किसी समय ये, आज कोई नहीं है ।

महा०—सच तो है ! दारा आज भाग्यचक्रके फेरमे नीचे पड़े हैं, भाग्यकी लाञ्छना और विकार मह रहे हैं आज उनके साथ तुम्हारा सम्बन्ध क्या है ! दारा उस समय तुम्हारे स्वामी थे—जब वे पुरस्कार दे सकते थे, बँत मार सकते थे ।

जस०—मुझे ।

महा०—हाय महाराज ! ' थे ' इसका क्या कुछ मूल्य ही नहीं है ? वीते समयको क्या एकदम मिटा सकते हो ? ' वर्तमान ' मे क्या उमे एकदम अलग कर सकते हा ? एक दिन जो तुम्हारे दयालु प्रभु थे, उनका आन तुम्हारे निकट क्या कुछ मूल्य ही नहीं है ?—
प्रिफार है ।

जस०—महामाया, तुम्हाग मेरे साथ तर्क करनेका—जवान लडानेका—समय नहीं है । मैं जो उचित समझता हूँ, वही कर रहा हूँ । मैं तुमसे उपदेश नहीं चाहता ।

महा०—उपदेश क्या चाहोगे ? युद्धमे हारकर लौट आकर, विश्वासघातक होकर लौट आकर, वृत्तन होकर लौट आकर—तुम चाहते हो मेरी भक्ति !—क्यों ?—

जस०—यह मैं क्या तुमसे कुछ उचितसे बहुत अधिक चाहता हूँ महामाया ?

महा०—नहीं, तुम्हारा यह दावा मपूर्ण रूपसे स्वाभाविक है ! क्षत्रिय गीर हो तुम—तुमने मारी क्षत्रियजातिका अपमान किया है ! तुम नहीं जानते, नाग राजपूताना आन तुमको धिक्कार रहा है ! गेग कहते हैं कि औगजेयका समुर शाहनयान दाराकी ओर होकर अपने तामादमे लडा, उमने प्रसन्नतापूर्वक मृत्युको गलेसे लगाया ओर तुम दाराको आगा देकर पीछेसे कायरोकी तरह अलग हटकर खटे हो गये !—हाय स्वर्ग ! क्या कहें, तुम्हारे इस अपमानसे मेरी नस नसमें जैसे आगती लहने दौड रही हे, पर वह अपमान तुम्हें स्पर्श भी नहीं करता ! बेशक आश्चर्यकी बात है ।—

जस०—महामाया—

महा०—बस !—जाओ अपने नये प्रभु औरगजेन्द्रक पास जाओ । (क्रोधसे प्रस्थान ।)

जस०—अच्छा !—यही होगा । इतना अपमान !—अच्छा, यही होगा । (प्रस्थान ।)

पाँचवाँ दृश्य । दूकान की

स्थान—आगरेके किलेका शाही महल ।

समय—रात्रि ।

[शाहजहाँ और जहानारा ।]

शाह०—अत्र और क्या खबर है बेटी अत्र और क्या बाकी है ?—मेरा दारा शिकस्त खाकर इधर उधर भागा भागा फिर रहा है । सुजाने जगली आरामानके राजाके यहाँ जाकर पनाह ली है । मुराद गालियरके किलेमें कैद है । और क्या खुरी खबर दे सकती हो बेटी ?

जहा०—अब्बा, यह मेरी वदनसीत्री है कि मैं ही रोज रोज खुरी खबरे लेकर आपके पास आती हूँ । लेकिन क्या करूँ अब्बा, वदनसीत्री अफेली नहीं आती ।

शाह०—कहो । और क्या खबर है ?

जहा०—अब्बा, भैया दारा गिरफ्तार हो गये ।

शाह०—गिरफ्तार हो गया ?—कैसे गिरफ्तार हो गया ?

जहा०—जिहनखोंने वोखा देकर गिरफ्तार करा दिया ।

शाह०—जिहनखों !—जिहनखों !—क्या कहती है जहाँ-नारा, जिहनखोंने ?

जहा०—हाँ अन्ना !

शाह०—क्यामतका दिन क्या बहुत जल्द आनेवाला है ?

जहा०—सुना, परमो दारा और उनके प्रेते सिपरको एक बूटे हाथीकी नगी पीठपर बैठाकर दिछीभरमे पुमाया गया है। वे मैले सादे रूपडे पहने थे। उनकी हालत देखकर कोई ऐसा न था, जो रो न दिया हो।

शाह०—तो भी उनमेमे कोई दाराको छुडानेके लिए नहीं दौडा। सिर्फ काठके पुतलोकी तरह रगटे गबडे सब लोग दंगते ही रहे। वे सत्र क्या पत्थरके पने हुए थे !

जहा०—नहीं, पत्थर भी गरम हो उठता है। वे कीचट हैं। औरगजेवकी गोठियों और बन्दूकोका खौफ सत्रपर गालिब है। मानो किसी चादूगरने उनपर जादू डाल रक्खा है। कोई भी सिर उठानेकी हिम्मत नहीं करता। गेते हैं—सो भी छिपकर—कहीं औरगजेव देख न ले।

शाह०—उसके बाद ?

जहा०—उसके बाद औरगजेवने गिनरागादमे, एक गद और तग मकानमे दाराको कैद कर रक्खा है।

शाह०—और सिपर और जोहरत ?

जहा०—सिपरने अपने चापका साथ नहीं छोडा। जोहरत उस यक्त औरगजेवके महलमे है।

शाह०—तू जानती है, औरगजेवने दाराको क्या कैद कर रक्खा है ? वह उसमे क्या सुलूक करेगा ?

जहा०—क्या करेगा, सो नहीं जानती। लेकिन—लेकिन—

शाह०—क्या जहानारा, कौप क्या उठी।

महा०—बस !—जाओ अपने नये प्रभु औरगजेबके पास जाओ ।
(क्रोधसे प्रस्थान ।)

जस०—अच्छा !—यही होगा । इतना अपमान !—अच्छा यही होगा ।
(प्रस्थान ।)

पाँचवाँ दृश्य ।

स्थान—आगरेके किलेका शाही महल ।

समय—रात्रि ।

[शाहजहाँ और जहानारा ।]

शाह०—अब और क्या बुरी खबर है बेटी, अब और क्या बानी है ?—मेरा दारा शिकस्त खाकर इधर उधर भागा भागा फिर रहा है । सुजाने जगली आरामानके राजाके यहाँ जाकर पनाह ली है । मुराद गालियरके किलेमे कैद है । और क्या बुरी खबर दे सकती हो बेटी ?

जहा०—अब्या, यह मेरी बदनसीबी है कि मैं ही रोज रोज बुरी खबरे लेकर आपके पास आती हूँ । लेकिन क्या करें अब्या, बदनसीबी अकेली नहीं आती ।

शाह०—कहो । और क्या खबर है ?

जहा०—अब्या, भैया दारा गिरफ्तार हो गये ।

शाह०—गिरफ्तार हो गया ?—कैसे गिरफ्तार हो गया ?

जहा०—जिहनखेनि धोखा देकर गिरफ्तार करा दिया ।

शाह०—जिहनखेनी !—जिहनखेनी !—क्या कहती है जहाँनारा, जिहनखेनि ?

जहा०—नहीं, कोई नहीं है ।—आप उधर क्या देग गे हे
अत्राजान ।—

शाह०—कूद पड़ें ?

जहा०—यह क्या अत्रा ।

शाह०—देखूँ, शायद दाराको बचा सकूँ । ये लोग उमे कल्ट
करनेका लिये जा रहे हैं और मैं यहाँ औरतोंकी तरह पचोकी
तरह लचार हूँ । अखिरके आगे यह सत्र देखकर भी खाता पीता,
सोता और अतक निन्दा हूँ । उसके लिये कुछ नहीं करता ।—
कूद पड़ें ।

जहा०—यह क्या अत्रा । यहाँस कूदनेपर यह तय है कि
जान नहीं बच सकती ।

शाह०—मर जाऊँगा तो उसमे क्या । देखूँ अगर बचा सकूँ—
बचा सकूँ ।

जहाँ०—अत्रा । आप क्या अपने आपमे नहीं हे ? मरकर
दाराकी जान आप कैसे बचा सकेंगे ?

शाह०—ठीक है । ठीक है । मैं मरकर दाराको कैसे बचा
सकूँगा ? ठीक कहती है । फिर—फिर ।—अच्छा—जरा तू यहाँ
औरगजेप्रसो ले आ सकती है ?

जहा०—नहीं अत्रा, यह नहीं आयेगा । नहीं तो मैं औरत
होकर भी एक मर्तवा उससे लडकर देखती । उस दिन मैंने दरवारमें
खबर खटे होकर उसका मुकाबिला किया था, मगर कुछ कर नहीं
सकी । इमी मववसे उस दिनसे मेरे बाहर जाने-आनेपर भी मरत
निगगनी रखी जाती हैं । नहीं तो एक दफा उसमे लडाई करके
जरूर देखती ।

जहाँ०—अगर वही तो अब्बा ?

शाह०—क्या ! क्या जहानारा !—मुँह क्यों ढक लिया ! वह भी क्या मुमकिन है !—भाई भाईको कल्ल करेगा !

जहाँ०—चुप ।—उह किमके पैगेंकी आहट है ! सुन फिर उसने ।—अब्बा आपने यह क्या किया ! क्या किया !

शाह०—क्या किया !

जहाँ०—वह बात कह टाली !—अब बचनेकी कोई सुन नहीं रही ।

शाह०—क्यों ?

जहाँ०—शायद औरगजेव दाराका खून न करता । शायद इतने बड़े गुनाहकी और बेरहमीकी बात उसे सूझती ही नहीं । लेकिन वह बात आपने उसे सुझा दी !—क्या किया ! क्या किया ! सब सत्यानाश कर दिया !

शाह०—औरगजेव तो यहाँ नहीं है । किसने सुन लिया ?

जहाँ०—उह नहीं है, लेकिन यह दीवार तो है, हवा तो है, चिराग तो है । आज सब उसीके शरीक हैं । आप समझते हैं यह आपका महल है । नहीं, यह औरगजेवका पत्थरका जिगर है ! यह हवा नहीं, औरगजेवकी जहरीली साँस है । यह चिराग, नहीं, उस जल्लादकी कहरकी नजर है ! अब्बाजान, क्या आप यह सोचते हैं कि इस महलमें, इस किल्लेमें, इस सल्तनतमें, आपका या मेरा एक भी दोस्त है ? नहीं, एक भी नहीं है ! सब उमीके शरीक हो गये हैं ! सब खुशामदी और मतलबके धार हैं ! जुआचोर हैं !—यह किसकी परछाई है ?

शाह०—कहाँ ?

छठा-दृश्य ।

[औरगजेव एक पत्र हाथम लिये टहल रहा है ।]

औरग०—यह टारानी मोतकी सजाका हुक्मनामा है ।—
यह काजीका फैसला है ।—मेरा कुमूर क्या है ।—मैं लेकिन
—नहीं, क्यों—यह फैसला ! फैसलेको न्यो रद करूँ ।—यह
फैसला है ।

[दिलदारका प्रवेश ।]

दिल०—यह खून है ।

औरग०—(चौंकर) कौन !—दिलदार ! तुम इम रक्त
यहाँ ?

दिल०—जहाँपनाह, मे ठीक वक्तमे ठीक जगहपर हूँ । देख
लीजिएगा । ओर अगर मैं यहाँपर न होता तो भी यह खून—

औरग०—(भरींई हुई आवाजम) ग्यून !—नहीं दिलदार, यह
काजीका फैसला है ।

दिल०—बादशाह सलामत, सच ओर माफ माफ कहूँ ?

औरग०—रुहो ।

दिल०—बादशाह सलामत आप एकाणक कौंप क्यों उठे ।—
आपकी आयाज एक मूखी हवाने शोकेकी तरह क्यों निकली ! क्यों
जहाँपनाह !—सच कहूँ ?

औरग०—दिलदार !

दिल०—सच जान कहूँ ?—आप टारानी मोत चाहते है ।

औरग०—मैं !

दिल०—हाँ आप ।

औरग०—ले

शाह०—फॉड़ें !—कूद पड़ें ? (कूदना चाहते हैं ।)

जहा०—अब्या, आप ये क्या पागलोकी सी बात कर रहे हैं !

शाह०—सच तो है ! मैं क्या पागल हुआ जा रहा हूँ !—ना ना ना । मैं पागल न होऊँगा !—या खुदा ! इम अपाहिज, बूढ़े, निहायत लाचार शाहजहाँको देख खुदा !—तुझे तरस नहीं आता ! तरस नहीं आता ? बेटेने बापको कैद कर रक्खा है—यह बेटा जो एक दिन उस बापके खौफसे कौपता था !—इतनी ब्रेहन्साफी, इतना जुल्म, ऐसी कुदरती कानूनके खिलाफ वारदात तुम देख रहे हो ? देख सकते हो ?—मैंने ऐसा क्या गुनाह किया था कि खुद मेरा ही बेटा—ओ !—

जहा०—एक मर्तवा इम वक्त अगर वह मेरे सामने आनाता, तो !—(दात पासना ।)

शाह०—मुमताज ! तुम बड़ी खुशफिस्मत हो, जो अपने बेटेकी ऐसी नालायक और सद्ममा पहुँचानेवाली करतूत देखनेकी नहीं रहीं । तुमने कोई बडा सत्राव किया था, इसीसे तुम पहले चल दीं ।—जहानारा !

जहा०—अब्या !

शाह०—मैं तुझे दूआ देता हूँ—

जहा०—फ्या अब्या !

शाह०—कि तेरे औत्राद न हो—दुश्मनके भी औत्राद न हो ।

(प्रस्थान ।)

(दूसरी ओरसे जहानाराका प्रस्थान ।)

को मौतकी सजा दी है ।

जिहन०—यही क्या वह हुक्मनामा है ?—मुझे दीजिए खुदा-
बन्द, मैं खुद अपने हाथसे यह हुक्म तामील कर लाऊँ । काफिरको
अपने हाथसे मौतकी सजा देनेके लिए मेरे हाथोंमें खुजली हो रही
है । मुझे—

औरग०—लेकिन मेने दाराको माफी दे ली है ।

शायस्ता०—यह क्या जहाँपनाह !—ऐसे दुश्मनको माफी !—
अपने दुश्मनको माफी ।

औरग०—मैं जानता हूँ । इमीसे तो उसे माफ करना मेरे लिए
फरमकी बात है ।

शायस्ता०—जहाँपनाह, यह फरम खरीदनेमें आपको अपना
तरत तरत ब्रेचना पडेगा ।

औरग०—जिन हाथोंकी ताकतमें इम तग्नपर रुब्जा किया
है, उन्हीं हाथोंकी ताकतमें उसकी हिफाजत भी करेँगा ।

शायस्ता०—जहाँपनाह, एक बड़ी भारी आफतको मिरपर
बनाये रखकर निन्दगी भर सन्तनत करनी पडेगी । आप जानते हैं,
मारी गिआया और फौज दिलमें दागकी तरफदार है । उस दिन
दाराकी हालत देखकर सत्र गंग उच्चोंकी तरह रो रहे थे और
जहाँपनाहको गालियाँ दे रहे थे । अगर ये एक दफा भी मौका पाँवे—

औरग०—कैसे ?

शायस्ता०—जहाँपनाह आठों पहर कुछ दागकी निगरानी न
कर सकेंगे । जहाँपनाह किमी दिन मफरमें गये, और फौजके
निपाहियोंने मौका पाकर दाराको गिरा कर दिया—तो जहाँपनाह—
समझे ?

डिल०—फैसला ! जहाँपनाह, काजी लोग जब दाराने लिए मौतका हुक्म दे रहे थे, उस वक्त वे खुदाके मुँहकी तरफ नहीं देख रहे थे । उस वक्त वे जहाँपनाहके खुश चेहरेका खयाल कर रहे थे—जोरूके गहने गढानेके मनमूत्रे गँठ रहे थे । फैसला !—जहाँ मालिकनी लाल लाल आँखे सामने अडी रहती है, यहाँ फैसला ! जहाँपनाह सोच रहे है कि मैने दुनियाको मूर्ख चक्रमा दिया । लेकिन दुनियाने मन-ही-मन सब समझा, मिरफ खौफसे कुछ कहा नहीं । जोर करके आप इन्सानकी जवानको मर सकता है, गला घोटकर उसे मार टाल सकते है, लेकिन स्याहको सफेद नहीं कर सकते । दुनिया जानेगी, आगेके लोग जानेगे कि फैसलेका जाल रचकर आपने दाराना खून किया है—अपने तरत और ताजका खतरा दूर करनेके लिए ।

औरग०—सचमुच !—दिलदार तुम सच कह रहे हो ! तुमने आज दारानकी जान बचाई ! तुमने मेरे बेटे महम्मदको मुझे लौटा दिया—आज मेरे भाई दारानको बचाया ! जाओ—शायस्ताखीको भेज दो ।

(दिलदारका प्रस्थान ।)

औरग०—दारा जिये । मुझे अगर उसके लिए तग्न देना पडे, तो दूँगा ! इतना बडा अजाब—जाने दो, यह मौतका हुक्मनामा फाड टाँटे—(फाडना चाहता है ।) नहीं, अभी नहीं । शायस्ताखीके सामने इसे फाडकर अपनी नेकीका सुवृत्त दूँगा ।—यह लो, शायस्ताखी आ गये ।

[शायस्ताखा और जिह्नखीका प्रवेश और कौनिश करण ।]

औरग०—शायस्ताखी, काजियोने अपने पैसरेमें भाई दारा

जिहन०—जहाँपनाह, तसलीम ! (जाना चाहता है ।)

औरग०—ठहरो, देखूँ । (दण्डकी आज्ञासे लेना, पडना और फेर देना)—अच्छा जाओ ।

(जिहनसाँ जाना चाहता है । औरगजेब फिर उस बुलाता है ।)

औरग०—ठहरो । (दण्डकी आज्ञाको फिर लेना और फिर फेर देना)

अच्छा जाओ !—

(जिहनसाँका प्रस्थान ।)

(औरगजेब फिर जिहनसाँकी ओर बढ़ता है । फिर लौटता है ।
दमभर सोचता है ।)

औरग०—ना, जरूरत नहीं है !—जिहनसाँ ! जिहनसाँ ! नहीं चला गया ।—शायस्तासाँ !

शायस्ता०—खुदानन्द !

औरग०—मैंने यह क्या किया !

शायस्ता०—जहाँपनाहने समझदारोंका ही काम किया ।

औरग०—खैर जाने दो ।

(धीरे धीरे प्रस्थान ।)

शायस्ता०—औरगजेब ! क्या तुममें भी कुछ नेकी-बदीकी तमीज है ?

(प्रस्थान ।)

औरग०—समझा ।

शायस्ता०—इसके सिवा बूढ़े बादशाह भी दाराने तरफदार हैं और उन्हे सरी फौज मानती है अपने उस्तादकी तरह, चाहती है अपने बापकी तरह ।

औरग०—हूँ, (दहलना) न होगा, तो यह तख्त टे दूँगा ।

शायस्ता०—तो फिर इतनी मेहनत करके यह तख्त लेनेकी क्या जरूरत थी ? बापको तरतसे उतारकर, भाईको कैद करके—जहाँपनाह बहुत दूर बढ आये है ।

औरग०—लेकिन—

जिहन०—खुदानन्द, दारा काफिर है ! आप काफिरको माफ करोगे ? खुदानन्द, इस दीन इस्लामकी हिफाजतके लिए ही आप आज इस तरतपर बैठे हैं—याद रखे । दीनकी इज्जत रखना आपका फर्ज है ।

औरग०—सच है जिहनखॉ ! मैं अपनी बेइज्जती और अपने ऊपर जुल्म सह सकता हूँ, लेकिन दीन इस्लामकी तौहीन नहीं सह सकता । कसम खा चुका हूँ ।—दाराकी मौत ही उसके लायक सजा है । जिहनखॉ, लो यह मौतका हुक्मनामा !—ठहरो, दस्तखत कर दूँ । (दस्ताक्षर करना ।)

जिहन०—टीजिण जहाँपनाह, आज रातको ही दाराका कटा हुआ सिर लाकर जहाँपनाहको दिखाऊँगा—बाहर मेरा घोडा तैयार है ।

औरग०—आज ही !

शायस्ता०—(मृत्युदण्डका आज्ञापत्र औरगजेबके हाथसे लेकर) जितनी जन्दी बला टले, उतनाही अच्छा । (जिहनखॉको दण्डपत्र देना ।)

दिल०—मैं था पहले सुल्तान मुरादका ममग्वरा। अब हूँ वाह-
जाह औरगजेवका मुसाहब।

दारा—यहाँ किस मतलबम आय हो ?

दिल०—मतलब कुछ नहीं है, आपसे मुलाकात करने आया हूँ।

दारा—क्यों ऐ नौजवान, मेरी हँसी उड़ानेक लिए ?—हँसो।

दिल०—नहीं शाहजादासाहब, मैं हँसने नहीं आया। ओर
अगर हँसने भी आता तो आपकी हालत देखकर—वह तानेकी हँसी
गलक ओम् बन जाती ओर जमीनपर टपटप टपकने लगती।—
यह हाल ! शाहजादा दारा आज इम हालतमें !—(भराडं हुट
बाबाजम) या खुदा !

दारा—ऐ नौजवान यह क्या ! तुहारी आँखोंसे ओम् गिर गये
हैं—रोते हो !—राआ !

दिल०—नहीं, गेऊँगा नहीं ! वह बहुत ही ऊँच दर्जेका नज़ारा
(ट्य) है !—एक पहाड टटा-फूटा पटा है, एक समुद्र सूख गया
है, एक सूरज फीका पड गया है ॥ मारे जहानमें एक-तरफ पैदा-
यश और दूसरी तरफ तमाही हो रही है। इस दुनियामे भी यही
है। यह तमाही बड़ी भारी, पाऊ और फलकी चीज है।

दारा—तुम एक दानिशमन्द (दार्शनिक) जान पड़ते हो।

दिल०—नहीं शाहजादा साहब, मैं दानिशमन्द नहीं हूँ। मैं
मसग्वरा हूँ, मुसाहब हो गया हूँ, अभी दानिशमन्दका दर्जा नहीं
पासका हूँ। अगर बाम चरते चरते कभी कभी मिर उठकर
देखनेको दानिश कहते हों, तो मैं जरूर दानिशमन्द हूँ। शाहजादा
साहब,—जरूर ममज्ञता है कि विरागका जलना ही ठीक है,
का बुझना ही नहीं, दरगतका उगना ही राजिर है,

सातवाँ-दृश्य ।

स्थान—मिजराबाद । एक साधारण घर ।

समय—रात ।

(सिपर एक पलंगपर सो रहा है । दारा बकेले जाग रहे हैं और उसरी सूत देग रहे है ।)

दारा—सो रहा है—सिपर सो रहा है । नाद । सन बचेनियो-को दूर कर देनेवाली नाद । मेरे सिपरके सत्र रज भुलाए रह ।—मेरे बचेने मफरम मेरे माथ मर्दी और गर्मीकी बटी बडी सन्तियाँ झेली है, उमे त भर मक डिलामा दे । मैं लाचार हूँ । ओलादकी हिफाजत करना खाना देना, रुपडे देना—बापका काम है । सो मे कर नहीं मका ।—बेटे तू भूखमे तटपता था, मे तुझे खानेको नहीं दे सका । प्यामसे तेरा गला मग्व रहा था, मैं तुझे पानी तक नहीं दे सका ।—सर्दीमे पहननेके लिए काफी रुपडे तक नहीं दे सका—मुझे खुद खानेको नहीं मिला मोना नहीं मिया । उससे मुझे कभी नैसा सदमा नहीं पहुँचा बेटे, जैसा तेरी तकलीफ, तेरी गरीबी, तेरी तौहीनसे पहुँचा है । बचे ! मेरे लस्ते जिगर ! मैं आज तुझे देख रहा हूँ । मुझे जान पटता है, दुनियामें और कोई नहीं है—सिर्फ तू है और मैं हूँ । मुझे इतना दुख है । मैं आज कैदखानेमें कैद हूँ, तो भी तेरे चेहरेको देखकर मैं सब दुख भूल जाता हूँ ।

[दिलदारका प्रवेश ।]

दारा—कौन ।—तुम ।

दिल०—मैं—यह—क्या देख रहा हूँ ।

दारा—तुम कौन हो ?

दारा—मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगा और खामक़र इस प्रेषको छोड़कर मैं कहीं न जाऊँगा ।

[जिह्नघाँका प्रवेश ।]

जिह्न०—और कहीं जाना न पड़ेगा । यह दाराके कल्कका हुक्म है ।

दिल०—यह क्या !

जिह्न०—शाहजादा साहब, मरनेके लिए तैयार हो जाइए, जद्दात मौजूद है ।

दिल०—ता बादशाहन राय प्रल दी ।

जिह्न०—हाँ दिलदार, तुम इस वक्त मेहरवानी करके बाहर जाओ । हम लग अपना काम करें ।

दारा—औरगजेब अपनी इतनी बड़ी सल्तनतके, एक कोनेमें सौंस लेनेके लिए दो तीन हाथ जमीन भी नहीं दे सकता ? मैं इस तग और गन्दे मरानामे हूँ, यह मैठा चीथडा पहने हूँ, खानेको दो सूखी और जली रोटियाँ मिलती हैं । यह भी वह नहीं दे सकता ?

दिल०—जिह्नघाँ, तुम आज ठहर जाओ, मैं बादशाहका दूसरा हुक्म लिये आता हूँ ।

जिह्न०—नहीं दिलदार, बादशाहका यही हुक्म है कि, आज ही रातको शाहजादेका कटा हुआ सिर, उन्हे उजाकर दिखाया जाय !

दारा—ही रातका ! इतनी जल्दी ! यह सिर उसे चादिए द न आयगी !—इस सिरकी इतनी कीमतका नहीं था ।

गैरघाजिव है इन्सानको खुदासे आराम ही मिलना चाहिए, तकलीफ मिलना जुन्म है। लेकिन यह बात नहीं है, आराम और तकलीफ एक कानूनके दो पहलू है।

दारा—ऐ नौजवान, मैं यह नहीं सोचता। तो भी—तकलीफ-मे कौन हँम सकता है? मग्ना कौन चाहता है? मैं मरना नहीं चाहता।

दिल०—शाहजादा साहब, आपकी मौतकी सजाका हुक्म मैं आज मन्सूर कर आया हूँ। आप कैदसे अगर रिहाई चाहते हैं तो आइए। मेरी पोशाक पहन लीजिए—चले जाइए। कोई शर्त नहीं करेगा। आइए, हम दोनों आपसमें ऋपडे बदल ले।

दारा—उसके बाद तुम ?

दिल०—मैं मरना ही चाहता हूँ। मरनेमें मुझे बड़ा मजा मिलेगा। इस दुनियामें कोई मेरे लिए रज करनेवाला नहीं है।

दारा—तुम मरना चाहते हो !!!

दिल०—हाँ मैं मरनेका एक अच्छा मौका ढूँढ रहा था। शाहजादा साहब, मरना मुझे बहुत प्यारा है। आपने मुझपर आज कैसा भारी एहसान किया, यह मैं कह नहीं सकता—

दारा—क्यों ?

दिल०—मरनेका एक अच्छा मौका देकर आपने यह एहसान किया है।—आइए।

दारा—या रहीम ! यही बहिस्त है ! और क्या !—नहीं ए नौजवान, मैं नहीं जाऊँगा।

दिल०—क्यों ? शाहजादा साहब, क्या मरनेका एसा अच्छा मौका मींगनेपर भी मैं न पाऊँगा ? (पैर पकड़ता है।)

शुक्रिया अग करने हूँ आप अपनी जान दे दे ।

दारा—जग ही । काहेका दुःख ! एक दिन तो जाना होगा ही । कोई दो दिन पढ़ गया और कोई दो दिन पीछे ! मे तयार हूँ । तुममे विदा होता हूँ दोस्त ! तुममे अभी घड़ीभरकी जान पहचान है तुम कौन हो यह भी नहीं जान पड़ता है । मगर तुम मेरे बहुत निरौठ पुराने दोस्त हो ।

दिल०—तो जाइए ग्राहजादा साहब इस दुनियामे मेरी ओर आपकी यही आखिरी मुलाकात है । (प्रस्थान ।)

दारा—अब मुझे मारो—जिहनग्या !

जिहन०—जल्लाद !

[दो जलादोंका प्रवेश । जिहनग्याका इशारा करना ।]

दारा—नग ठहरो । एक मर्तवा—सिपर ! सिपर !—नहीं ! क्यों पुकारा ।

सिपर—(उठकर) अन्नाजान !—यह क्या ! ये कौन है अन्ना !—मुझे सौफ माटूम पट रहा है ।

दारा—ये मुझे मारनेके लिए आय है । तुमसे आखिरी मुलाकात करनेके लिए ही मैंने तुमको जगा दिया था । अब मैं जाता हूँ वचने ! (गलस लगाना) अब जाओ ।—जिहनग्या, शायद तुम इतने बड़े शैतान नहीं हो कि मेरे बेटके आगे मुझे कल करो । उसे दूमे क्रमेमे ल जाओ ।

जिहन०—(एक जलादसे) उसे उस कमरेमे ले जा ।

सिपर—(जलादके परठने पर) नहीं, मैं नहीं जाऊँगा । मेरा प्राको मारोगे ! क्यों मारोगे ! (जलादके हाथसे अपनेको छुड़ाकर दारारु । धारर) अन्ना—मे तुम्हें छोड़कर न चारूँगा ।

जिहन०—अगर आज ही रातको आपका मिर हम, न ले जा सकेगे, ना खुद हमारी जान जायगी ।

दारा—ओह जिहनरॉ, तो फिर तुम क्या कर सकते हो, लो मुझे मारो ।—जब बादशाहका हुक्म है ।—आज कौन बादशाह है, कौन गियाआ है ।—हँमते हो ? हँसो ।

जिहन०—आप तैयार है ?

दारा—तैयार ही हूँ ! और अगर मैं तैयार न भी होऊँ तो उससे तुम लंगोका स्या बनता त्रिगटता है । (दिवदारसे) एक दिन उसी जिहनरॉने हाथ जोड़कर गिडगिडाकर मुझसे जान बचानेके लिए कहा था । मैंने उसकी जान बचाई थी । आज—नसीब ! तेरा खेल—गुव्व !

जिहन०—बादशाहका हुक्म ! काजियोका फैसला ! शाहजादा साहब, मैं क्या कर सकता हूँ ?

दारा—बादशाहका हुक्म ! काजियोका फैसला !—ठीक है ! तुम क्या कर सकते हो !—(दिवदारसे) जाओ दोस्त ! तुमसे मेरी यह पहली और आखिरी मुलाकात है ।

दिल०—कुछ न हो सका ! मैं आपकी जान नहीं बचा सका, शाहजादा साहब । जान पड़ता है, शायद 'यही' उस रहीमकी मर्ती है ! मैं कुछ समझ नहीं सकता । लेकिन शायद इसका एक बड़ा भारी मतलब है । इसका एक बड़ा अंजाम है । तर्ही तो इतनी बड़ी बेहरमी, इतना बड़ा गुनाह क्या, फजूल, चला जायगा ? शाहजादा साहब, आप ऐसे आदमीकी कुर्बानीका कुछ मतलब जरूर है । वह मतलब क्या है, यह मैं समझ नहीं सकता । लेकिन मतलब जरूर है । खुशीके साथ खुदाका

दारा—क्या करूँ । कोई चारा नहीं है बेटा, (मुझे आज मरना होगा । अपनी जिन्दगी छोड़नेका मुझे आज-उतना संदमा नहीं है जितना तुझे छोड़ने . रहा है ।) (आखें मूंद लेना ।) जाओ बेटा, ये लोग मुझे कल मरेंगे । वह बड़ा ही गौफनाक नजारा होगा ।—उसे-तुम न देख सकोगे ।

सिपर—अन्ना, मैं तुम्हें छोड़कर जाऊँ ।—मैं नहीं जाऊँगा ।

दारा—सिपर, कभी तुमने मेरी बात नहीं टाली !—

कभी तो—(आँसू पोंछना) (जाओ बेटा, मेरा यह आखरी हुक्म—मेरा यह आखरी कहना मानो) जाओ ।—मेरी बात नहीं सुनोगे ? सिपर । बेटा । जाओ ।

(सिपर सिर झुकाकर जानेको तैयार होता है ।)

दारा—सिपर । (सिपर लौटता है ।)

दारा—एक मर्तवा—आ—तुझे छतरीमें लगा दें । (छतरीमें लगाना) ओ—अब जाओ बेटा ।

(मन्त्रमुग्धकी तरह सिर झुकाये एक जल्लादके साथ सिपरका प्रस्थान ।)

दारा—(ऊपर देखकर, छतरीपर हाथ रक्कर) मुद्रा । पहले इनमें मैंने कौनसा ऐसा गुनाह किया था । ओ !—जाने दो, हो गया । जल्लाद, अपना काम कर ।

जिहन०—उस कमरेमें लेनाकर काम तमाम करके ले आओ । यहाँ इमकी जखरत नहीं है ।

(दनों जल्लादोंके साथ दाराका प्रस्थान ।)

जिहन०—अपनी जान बचानेवालेका कल अपनी आँखोंसे नहीं देखा, अच्छा ही हुआ ।—वह जल्लादोंकी चामाच—वह मरते वक्तकी आवाज—

(सिपर जोरसे दाराके पैरोसे लिपट जाता है ।)

दारा—बच्चे, मुझसे लिपटकर क्या करेगा । पकडकर क्या तु मुझे बचा सकेगा ? जाओ बेटा, ये मुझे कल करेंगे ! तुझसे देखा न जायगा ।

(दोनों जल्द अपनी आंखाके आँसू पोंछते हैं ।)

जिहन०—ले जाओ-।

(जल्द सिपरको पकडकर खींचता हुआ ले चलता है ।)

सिपर—(बिलकर) नहीं, मैं नहीं जाऊँगा । मैं नहीं जाऊँगा ।
(हाथ छुड़ानेकी चेष्टा करता है ।)

दारा—ठहरा । मैं उसे समझाये देता हूँ । फिर वह कुछ न कहेगा ।—छोड दो ।

(जल्द सिपरको छोड देता है और वह दाराके पास आकर म्हा होता है ।)

दारा—(सिपरका हाथ पकडकर) सिपर ।

दारा—सिपर—मेरे प्यारे बच्चे ! मुझे जाने दे ! (अब तक तूने इतने दुखमें भी मुझे नहीं छोडा ।—जाडेमें, धूपमें, भूख-प्यास और जागनेकी बेचैनीमें, जगलों और रोगिस्तानोंके सफरमें तूने मुझे नहीं छोडा) मुसीबत और तकलीफसे अधा होकर मैं तेरी छातीमें छुरी मारनेको तैयार हुआ, तब भी तूने मुझे नहीं छोडा । सफरमें, जगमें, कैदमें, जानकी तरह तू मेरे कलेजेसे लगा रहा—तूने मुझे नहीं छोडा । आज तेरा बेरहम बेदर्द बाप (कण्ठारोघ हो जाना । उसके बाद वह कण्ठसे अपनेको सभालकर भर्राई हुई आवाजसे) तेरा बेदर्द बाप मुझे छोडे जा रहा है ।

सिपर—अम्मा, अम्मी गई—आप भी—

(रोना ।)

पाँचवाँ अंक ।



पहला दृश्य ।

स्थान—दिल्ली । दरबार ।

समय—तिसरा पहर ।

(वस्त्र—ताऊस (मयूरसिंहासन) पर औरंगजेब बैठा है ।

सामने मीरजुमला, शायस्ताखा, जसवन्तसिंह, जयसिंह,
दिलखौं इत्यादि उपस्थित हैं ।)

औरंग०—मैंने आपके मुताबिक गजासाहबको गुजरातका सूबा
दे दिया है ।

जसवन्त०—उसेक बन्धे में नहोपनाहको अपनी उच्छाम
अपनी मनाकी महायता देने आया है ।

औरंग०—महाराज जसवन्तसिंह औरंगजेब एकदफारे सिवा
द्वारा किसीपर प्तवार नहीं करता । लेकिन तो भी हम महाराज
जयसिंहकी ग्यातिरसे मारवाडके राजाका प्राग्शाहकी वेगप्राह गियाया
धननेका दोजारा मोका देगे ।

जयसिंह—नहोपनाहकी मेहरबानी ।

जसवन्त०—नहोपनाह में ममझ गया है कि उल्-कपटम
हो, या बल ओर शक्तिमें हो, नहोपनाहन जब सिंहासनपर बैठकर
माझ्राज्यमें एक शान्ति स्थापित करे हे तब किसी तरह उस
शान्तिको नष्ट करना पाप है ।

नेपथ्यमे—ओ ! ओ ! ओ !

जिहन०—लो मर तमाम हो गया ।

सिपर—(कमरेके भीतरसे) अन्ना ! अन्ना ! (दरवाजा तोड़ने की चेष्टा करता है ।)

[दाराका कटा हुआ सिर लेकर जल्लादका प्रवेश ।]

जिहन०—दो, मिर मुझे दो । मैं इसे वादगाह सलामतके पास ले जाऊँगा ।

(ठीक इसी समय द्वार तोड़कर “अन्ना ! अन्ना !” चिल्लाता हुआ सिपर प्रवेश करता है और पिताका कटा हुआ सिर देस मूर्छित होकर गिर पड़ता है ।)

दिलेर०—जहाँपनाह, श्रीनगरके राजा पृथ्वीसिंहने शाहजादे और उनकी फौजको अपने यहाँ पनाह देनेमे इकाग कर दिया । तब शाहजादा हम लोगोका छाडनेपर लाचार हुए । उसके बाद ही मुझे जहाँपनाहका पत्रबाना मिला । मेने राजास मुलाकात करके जहाँपनाहके हुक्मके मुताबिक कहा कि “ शाहजादा सुलेमान बादशाहके भतीजे हैं । बादशाह उनको अपने लडकेमे बटकर चाहते हैं । अगर आप शाहजादेके तई बादशाहके हाथमे मोप लेंगे, तो आपकी ईमानदारी या परममे बड़ा नही लगेगा । श्रीनगरके राजाने पहले तो शाहजादेको मुझे देना नामजूर कर दिया । लेकिन दूसरे ही दिन उन्होने शाहजादेको अपने यहाँसे रुखसत कर लिया । सबकुछ मजममे नही आया ।

औरग०—बदनसीब शाहजादा ! उसके बाद ?

दिलेर०—शाहजादा तिव्वतके गिण गाना हुए । लेकिन रास्ता न मात्रम होनेके सबब रात भर भटककर सबगे फिर श्रीनगरके किनारे आगये । उसके बाद मय फौजके मेन जाकर उन्हे गिरफ्तार कर लिया । इसमे अगर कुछ मेरी खता हुई हा तो खुदा मुझे माफ करे । मै किमी खास आदमीका नोकर नही हूँ, मै बादशाहका सिपहसालार हूँ । बादशाह मलामतके हुक्मकी तामीर करनेके गिण मै लाचार था ।

औरग०—खोमाहब, उमे यहाँ ठे आइए !

दिलेर०—जो हुक्म । (प्रस्थान ।)

औरग०—राजासाहबके मुँहसे यह बात सुनकर मैं बहुत खुश हुआ। जान पड़ता है, हम शायद राजासाहबको अपने खैरख्वाहोंमें समझ सकते हैं।

जसवन्त०—निश्चय।

औरग०—अच्छी बात है राजासाहब।—वजीरआजम, सुल्तान शुजा इस वक्त आराकानके राजाकी पनाहमें हैं न ?

मीर०—गुलाम उन्हें आराकानकी सरहद तक खेदकर पहुँचा आया है।

औरग०—वजीरआजम, हम आपकी दिलेरी और हिम्मतकी तारीफ करते हैं।—सिपहसालार, तुम शाहजादा महम्मदको ग्वालियरके किलेमें कैद कर आये ?

शायस्ता०—खुदानन्द !

औरग०—बेचारा साहबजादा !—लेकिन दुनिया देख ले कि मैं सबसे एकसा बर्ताव करता हूँ। मैं बेटे या दोस्तके साथ कोई रियायत नहीं करता।

जयसिंह—जहाँपनाह, इसमें क्या सन्देह है।

औरग०—बदकिस्मत दाराकी मौतने हमारी सारी कामयाबीको फीका कर दिया है। लेकिन भाई बेटे जायें, दीनकी तरफ़ से।—सिपहसालार, भाई मुराद ग्वालियरके किलेमें खैरियतसे हैं।

शायस्ता—खुदानन्द !

औरग०—नासमझ भाई ! अपनी खतासे सल्तनत खो दी। और मैं मक्केशरीफ जानेका सबाब न हासिल कर सका।—खुदाकी मर्जी।—दिलेखी, तुमने शाहजादा मुलेमानको किस तरह कैद किया ?

औरग०—परेगान न होना शाहजादे ।

सुले०—नहीं । और क्यों—ओ ! इन्मान इतनी सहूलियतसे बातचीत कर सकता है, और साथ ही इतना बड़ा गैतान भी हो सकता है !

औरग०—सुलेमान, तुम्हें हम सताना नहीं चाहते । तुम्हारी अगर कुछ राहिश हो, तो कहो । हम मेहरवानी करंगे ।

सुले०—मैं सिर्फ यही चाहता हूँ कि नहोंपनाह अपने इम्कानभर मुझे गूब मताये । अपने बापके खूनीसे मैं रतीभर भी मेहरवानी नहीं चाहता ।—ग़ादग़ाह मलामत ! सोचकर देखिए, आपने क्या किया है ? अपने भाईको,—एक ही माँके पेटकी औलाद, एक ही बापकी मोहब्बतकी नजरके नीचे पले हुए, एक खून—भास,—जिममे ग़दकर हुनियामें अपना सगा कोई नहीं,—उसी भाईको आपने मरवा डाला । जो बचपनके खेलका साथी, जगानामें पढ़ने—खिलनेका मेहरबान साथी—निसकी तरफ़ अगर कोई टेढ़ी आँखसे देखता तो यह देखना आपके कलेजेमें तीरकी तरह लगता—जिसे चोटसे बचानेके लिए आपको अपनी ग़ती आगे कर देना ग़जिय था—उसे—उसे—आपने क़त्ल करवा डाला । और ऐसा भाई !—आप कहते तो यह सन्नत यह आपको एक मुड़ी धूलकी तरह उठाकर दे सकतें थे, उन्होंने आपसे कभी कोई धुरा उर्ताव या आपकी कोई गुराई नहीं की । उनकी ग़ता यही थी कि सब लोग उन्हें चाहते थे—ऐसे भाईको आपने क़ल करवा डाला । हथके पिन जय उनका सामना होगा, तब क्या आप उनकी तरफ़ आँख उठाकर देख सकेंगे ?—खूनी ! जाटिम !—ग़ैतान ! तुम्हारी ! तुम्हारी मेहरवानीको मैं नफ़रतसे लात मारता हूँ ।

उसका रून कर डाल ।

औरग०—गुदाने गुनाहगारको ठीक मना दी ।—वह लो,
शाहजादा आगया ।

[शाहजादा सुलेमानके साथ दिलरखाका फिर प्रवेश ।]

औरग०—आओ शाहजादे !—शाहजादे सुलेमान !—क्यों
शाहजादे ! सिग क्या जुकाये हुए हो ?

सुलेमा०—बादशाह—(कहते कहते रुक गये ।)

औरग०—रहो शाहजादे, क्या कहते थे कहे ! तुम्हें कुछ
दर नहीं है । तुम्हारे अघ्याफे मग्नेकी जग्बरत ही आपडी थी । नहीं
तो—

सुले०—जहाँपनाह, मैं आपसे कैफियत नहीं तल्प करता । और
फनहयात्र औरगजंत्रको आज किमीके आगे कैफियत देनेकी जग्बर-
रत भी नहीं है । कौन इन्माफ करेगा ! मुझे भी मार डालिए । जहाँ-
पनाहकी कुरीम काफी धार है, उमे जहर्गम बुझानेकी क्या जग्बरत
है !

औरग०—सुलेमान, हम तुम्हारी जान नहीं लेंगे । मगर—

सुले०—बादशाह मलामत, इस 'भगर' के गाने मैं जानता हूँ ।
मोतसे भी कटी और गौफनाक कोई बात आप करना चाहते हैं ।
बादशाहके दिलमें अगर एक ब्रेरहमी और बेदर्दिका काम करनेका
खयाल पैदा हो, तो दुश्मनके लिए उससे बढकर और खौफ नहीं ।
लेकिन अगर दो बेदर्दिक काम करनेका खयाल पैदा हो जाय, तो
मैं जानता हूँ कि उनमे जो बढकर बेदर्दिका काम होगा वही आप
करेगे । आपके बढला लेनेसे आपकी मेहरबानी ज्यादा गौफनाक
है । फरमाइए बादशाह मलामत—मार !—

औरग०—परेगान न होना ग्राहजादे ।

सुले०—नहीं । और क्यों—ओ ! इन्मान इतनी मद्दलियतसे बातचीत कर सकता है, ओग साथ ही इतना बड़ा गैतान भी हो सकता है ।

औरग०—सुलेमान, तुम्हें हम सताना नहीं चाहते । तुम्हारी अगर कुछ ग्राहिया हो, तो कहो । हम मेहरबानी करेंगे ।

सुले०—मे सिर्फ यहाँ चाहता हूँ कि जहाँपनाह अपने इम-कानभर मुझे गृह मतायें । अपने बापके गूनीसे मैं रानीभर भी मेहरबानी नहीं चाहता ।—बादशाह मलामत ! सोचकर देखिए, आपने क्या किया है ? अपने भाईको,—एक ही माने पेटकी औलाद, एक ही बापकी मोहबतकी नजरके नीचे पले हुए, एक रून—भास,—जिसमें बढकर नूनियाम अपना सगा कोर्ट नहीं,—उसी भाईको आपने मरवा डाला । जो बचपनके खेलोंका साथी, जमानोंमें पढ़ने—खिलनेका मेहरबान साथी—जिसकी तरफ अगर कोई टेढ़ी आँखसे देखना तो वह देखना आपके कलेजेमें तीगकी तरह लगता—जिसे चौटसे प्रचानेके लिए आपको अपनी छानी आगे कर देना राजिय था—उसे—उसे—आपने कल करवा डाला । और ऐसा भाई !—आप कहते तो यह मन्तनत वह आपको एक मुट्ठी धूलकी तरह उठाकर दे मरते थे, उन्होंने आपसे कभी कोई बुरा प्रतीप 'या आपकी कोर्ट बुराई नहीं की । उनकी गता यही थी कि मर लोग उन्हें चाहते थे—ऐसे भाईका आपने कल करवा डाला । हथके देन जब उनका सामना होगा, तब क्या आप उनकी तरफ आँख उठाकर देख सकेंगे ?—गूनी ! जाळिम !—गैतान ! तुम्हारी मेहरबानी ! तुम्हारी मेहरबानीको मैं नफरतसे छाल मारता हूँ ।

औरग०—अच्छा तो वही हो । मैं तुम्हारे लिए मौतकी सजा-
का हुक्म देता हूँ ।—ले जाओ । (सिंहासनसे उतरना ।) अल्लाहका
नाम लो सुलेमान ।

[बालकके बेपमे तेजीसे जोहरत-उम्रिसाका प्रवेश ।]

जोहरत—अल्लाहका नाम लो औरगजेब ! (पिस्तौल तानकर गोली
चलाना चाहती है ।)

सुले०—यह कौन ? जोहरत-उम्रिसा ! ! ! (जाहरतका हाथ
झकड़ लेता है ।)

जोहरत—छोड़ दो—छोड़ दो । कौन हो तुम ? इस गुनहगार-
को मैं आज मार टाँसेंगी । छोड़ दो—छोड़ दो ।

सुले०—यह क्या जोहरत ! सत्र करो—खूनका एवज खून नहीं
है । अजाबसे सबाबकी जड़ नहीं जमती । मैं चाहता, तो मामने लट
कर इसे मार डालता । लेकिन कल्ल—बड़ा भारी गुनाह है ।

जोहरत—डरपोक नामर्दी ! वापके नालायक बेटे !—चले
जाओ ! मैं अपने वापके खूनका बदला लूँगी ! छोड़ दो—यह —बना
हुआ, लुटेरा, गृनी !— (मृच्छित हो जाना ।)

औरग०—ऐ दिलेर और नेक शाहजादे ।—जाओ, तुम्हें मैं न
माँसेगा । शायस्ताखों' इसे ग्वालियरके किलेमे ले जाओ ।—और
दासकी बेटीको मेरे अब्बाके पास आगरेके किलेमे पहुँचा दो ।

दूसरा दृश्य ।

स्थान--अराकानका राजमहल ।

समय--रात ।

[शुजा और पियारा ।]

शुजा—कौन जानता था कि तकदीर हमे खदेडकर आखिर्को इस जगली अराकानके राजाकी पनाह लेनेको मजबूर करेगी ?

पियारा—और यही कौन जानता है कि यहाँसे खदेडकर कहाँ ले जायगी ?

शुजा—जगली राजाने क्या अफवाह उटा दी है, जानती हो ?

पियारा—क्या ! जरूर कोई अजीब बात होगी । जल्द बताओ, मना अफवाह उडा दी है । सुननेके लिए मेरी नान निकली जा रही है ।

शुजा—उस पाजीने अफवाह उटा दी है कि मैं इन चालीस सत्रांगको लेकर अराकान जीतने आया हूँ ।

पियारा—एतवार ही क्या !—मैंने सुना है, बरितयार खिलजीने सिर्फ सत्रह सत्रांगमे बगाल फतह कर लिया था ।

शुजा—गैरमुमकिन है । जरूर किसीने दस्मनास ऐसी गप उटा दी है । मैं यकीन नहीं कर सकता ।

पियारा—इमसे क्या होता है !

शुजा—पियारा, राजाने क्या हुकम दिया है, जानती हो ? राजाने कल सरे चले जानेके लिए हमे हुकम दिया है ।

पियारा—कहाँ ? जरूर उमने हमारे लिए किसी खूब अच्छी आगे-टपकी जगहमें रहनेका इन्दोवस्त कर दिया है

शुजा—पियारा, क्या तुम रुभी मूडकर भी दाताकी टुनियामें कटम न रक्खोगी ? इममें भी

पियारा—इसमें आयद दिख्खीकी बात करना अच्छा न हो । पर यह पहले ही कह देते ।—अच्छा ले, मैं मज्जीदगी (गभीरता) इम्नियार करती हूँ ।

शुजा—हाँ, जी लगाकर सुनो । और एक बात सुनोगी ? अगर सुनोगी तो आँखे बाहर निकल आयेगी, गुस्सेसे गला रेंप जायगा, रंगोसे आगकी चिनगारियाँ निकलने लगेगी ।

पियारा—अरे बाप रे !

शुजा—अच्छा कहना हूँ—सुनो ।—यह पाजी हमें पनाह देनेकी कीमत क्या चाहता है, जानती हो ? यह तुम्हें चाहता है । क्या मन्नाटेमें आगई ।—करो दिख्खी !

पियारा—जरूर ! मेरी नजरमें राजाकी इज्जत बढ़ गई ।—यह राजा बैशरू ममजगर है ।

शुजा—पियारा, पेसी बाते न करो । मैं पागल हो जाऊँगा । यह तुम्हारे नजदीक दिख्खी हो सकती है, लेकिन मेरे नजदीक यह जिगरके टुकड़े टुकड़े कर देनेवाली तलवार है ।—पियारा, तुम जानती हो, तुम मेरी कौन हो ?

पियारा—जान पडता है, बीबी हूँ ।

शुजा—नहीं ।—तुम मेरी सलतनत, इज्जत, हशमत, सत्र जुलू—दीन टुनिया और आफ़वन भी—हो । सलतनत नहीं पाई—लेकिन अत्रतक कभी उसका खयाल नहीं हुआ ।—आज हुआ !

पियारा—क्यों ?

शुजा—जो मेरे लिए जीने मरनेका सवाल है, उसीको लेकर तुम दिख्खी कर रही हो ।

पियारा—नहीं, यह बहुत ज्यादा है । बहुत लोग दूसरा व्याह

करते हैं, लेकिन तुम्हारी तरह किसीकी परवाही नहीं हुई होगी ।

शुजा—नहीं । मैं समझ गया ।—तुम सिर्फ मुँहसे दिहोगी करती हो । लेकिन भीतर-ही भीतर कुटी मरी जाती हो । तुम्हारे मुँहमें हँसी और आँवोंमें आँसू है ।

पियारा—जान लिया '—नहीं । किसीने कहा कि मेरी आँवोंमें आँसू हैं । यह लो (आँसू पाछना) अब नहीं हैं ।

शुजा—अब क्या करना चाहती हो ?

पियारा—मुझे प्रेच डालो ।

शुजा—पियारा, अगर तुम मुझे चाहती हो तो यह जहर भरी दिहोगी रहने दो । सुनो, मैं क्या करूँगा, जानती हो ?

पियारा—ना ।

शुजा—मैं भी नहीं जानता ।—औरगजेयने पाम जाऊँ ?—नहीं । उससे मरना अच्छा । क्या ! तुम कुछ कहती नहीं पियारा !

पियारा—सोचती हूँ ।

शुजा—सोचो ।

पियारा—(दममर साचर) लेकिन लडके-लडकी ?

शुजा—क्या ?

पियारा—कुछ नहीं ।

शुजा—मैं क्या करूँगा, जानती हो ?

पियारा—ना ।

शुजा—ममझमें नहीं आता । गुत्कुशी (आमहत्या) करनेका जी चाहता है,—लेकिन तुमको उडकर मरा भी नहीं जाता ।

पियारा—और अगर मैं भी माघ चढ़े ?

शुजा—सुखमें मर सकता हूँ ।—नहीं, मेरे लिए तुम क्यों मरोगा ।

पियारा—इसमें शायद दिल्लीगिनी बात करना अच्छा न हो । पर यह पहले ही कह देते ।—अच्छा ले, मैं सजीदगी (गभीरता) इत्तियार करती हूँ ।

शुजा—हाँ, जी लगाकर सुनो । और एक बात सुनोगी ? अगर सुनोगी तो आँख बाहर निकल आयेगी, गुस्सेसे गला रेंग जायगा, रंगोंसे आगकी चिनगारियाँ निकलने लगेगी ।

पियारा—अरे बाप रे !

शुजा—अच्छा कहता हूँ—सुनो ।—यह पाजी हमें पनाह देनेकी कीमत क्या चाहता है, जानती हो ? वह तुम्हें चाहता है । क्या मन्नाटेमें आगई !—करो दिल्लीगिनी !

पियारा—जरूर ! मेरी नजरमें राजाकी इज्जत बढ़ गई ।—यह राजा बेशक ममझार है ।

शुजा—पियारा, ऐसी बातें न करो । मैं पागल हो जाऊँगा । यह तुम्हारे नजदीक दिल्लीगिनी हो सकती है, लेकिन मेरे नजदीक यह जिगरके टुकड़े टुकड़े कर देनेवाली तलवार है ।—पियारा, तुम जानती हो, तुम मेरी मौन हो ?

पियारा—जान पड़ता है, ब्रीची हूँ !

शुजा—नहीं ।—तुम मेरी सलतनत, इज्जत, हशमत, सब कुछ—दीन दुनिया और आक़बत भी—हो ! सलतनत नहीं पाई—लेकिन अक़बत कभी उसका खयाल नहीं हुआ ।—आज हुआ !

पियारा—क्यों ?

शुजा—जो मेरे लिए जीने मरनेका सवाल है, उसीको लेकर तुम दिल्लीगिनी कर रही हो !

पियारा—नहीं, यह बहुत ज्यादा है । बहुत लोग हमरा ब्याह

करते हैं, लेकिन तुम्हारी तरह किमीकी प्रगती नहीं हुई होगी ।

शुजा—नहीं । मैं समझ गया ।—तुम सिर्फ मुँहसे दिङ्गली करती हो । लेकिन भीतर-ही-भीतर कुटी मरी जाती हो । तुम्हारे मुँहमें ईमी और ऑखोंमें ऑम् हैं ।

पियारा—चान् लिया '—नहीं । किसने कहा कि मेरी ऑखोंमें ऑम् हैं ! यह ग (आच पाठना), अत्र नहीं है ।

शुजा—अत्र क्या करना चाहती हो ?

पियारा—मुझे बेच डाला ।

शुजा—पियारा, अगर तुम मुझे चाहती हो तो यह जहर भरी दिङ्गली रहने दो । सुना, मैं क्या करूँगा, जानती हो ?

पियारा—ना ।

शुजा—मैं भी नहीं जानता ।—जोरगजेवरक पाम जाऊँ ?—नहीं । उसम मरना अच्छा । क्या ! तुम कुछ कहती नहीं पियारा !

पियारा—मोचती हूँ ।

शुजा—मोचो ।

पियारा—(दमभर साचर) लेकिन लटके-लटकी ?

शुजा—क्या ?

पियारा—कुछ नहीं ।

शुजा—मैं क्या करूँगा, जानती हो ?

पियारा—ना ।

शुजा—ममझमें नहीं आता । सुदकुशी (आमहत्या) करनरा जी चाहता है,—लेकिन तुमको छोडकर मग भी नहीं जाना ।

पियारा—ओर अगर मैं भी साथ चहुँ ?

शुजा—सुखसे मर सकता हूँ ।—नहीं, मेरे लिये तुम क्या —

पियारा—ना । वहीं हो । कल सवेरे हम निकाले हुए न जायेंगे । कल जग होगी । इन चालीस सवारोंको लेकर ही इस राज्यपर हमला करो, हमला करके बहादुरोंकी तरह मरो । मैं तुम्हारे पास खड़ी होकर रहूँगी । और लडकी-लडके—उम्मेद है, वे अपनी इज्जत आप रक्खेंगे ।—क्या कहते हो ?

शुजा—अच्छा ।—लेकिन उसमें फायदा क्या होगा ?

पियारा—इसके सिवा चारा क्या है ! तुम्हारे मर जानेपर मुझे कौन बचाएगा ! और तुम अबतक बहादुरोंकी तरह जिन्दा रहे हो, बहादुरोंकी ही तरह मरो । इस जगली राजाको ऐसी गदी बात मुँहसे निकालनेकी काफी सजा दो ।

शुजा—यही अच्छा है । तो कल हम दोनों पास-पास खड़े होकर मरेंगे ।—पियारा, हमारी इस जिन्दगीके मिलनेकी यही आखिरी रात है । तो आज हँसो, बातें करो, गाओ—जिससे अब तक तुम मुझे छाये हुए—धेरे हुए रहती थी ।—एक मर्तवा, आखिरी मर्तवा देख डें, सुन लें ! अपनी सितार छोड़ो । गाओ—बहिश्त इस दुनियामे उतर आये । मितारकी झनकार और तानसे आसमानको गुँजा दो । अपने हुस्नसे एक दफा इस अँधेरेको दजा दो । अपनी मुहब्बतसे मुझे टक लो । ठहरो, मैं अपने सवारोंसे रुह आऊँ । आज रात भर न सोऊँगा । (प्रस्थान ।)

पियारा—मौत !—वही हो ! मौत—जहाँ इम दुनियाकी सग उम्मेदों और ख्वाहिशोंका खातमा है, सुख-दुखका अन्त है, मौत—जो गहरी नींद यहाँ खुलती नहीं, जिम अँधेरेमें कभी सवेरा नहीं होता, जो बेहोशी ओर खामोशी कभी जाती नहीं । मौत ।—बुरी क्या है, एक दिन तो होगी ही । तो दिन रहते ही—हाथ-पैर चलते

ही—मरना अच्छा । तो आज यह रूप, बुझन हुए विरागकी लोको
 तरह, उजली चमकमे जल उठ यह गाना प्रकन्द आराजमे आस-
 मानपर चढकर सितारोंकी दुनियाको टूट ने, प्राराम आजका
 आफतकी तरह हिल उठे, गुथी दुक्की तरह रो उठे सारी जिन्दगी
 एक प्यारके बोसेमे खतम हो नाय ।—आज हमारे ऐशकी आविरी
 रात है । (प्रस्थान ।)

तीसरा दृश्य ।

स्थान—आगरेका शाही किला ।

समय—रात ।

[बाहर आँधी, पानी आर बिजली । शाहजहाँ ओर जोहरतउम्रिता]

शाह०—किसकी मजाल है कि दाराका खून करे ? मैं बादरप्रह
 शाहजहाँ खुद उसका पहरा दे रहा हूँ । किसकी मजाल है !—
 औरगजेब ?—नाचीज है !—मैं अगर आँपि टाल करूँ, तो औरग-
 जेब डरसे काँप उठेगा ! मैं अगर कटूँ आँपि उठे, तो आँपि उठेगी,
 अगर कटूँ बिजली गिरे, तो बिजली गिरेगी !

(बादल गरजता है ।)

जोहरत—ओ केसा बादल गरज रहा है । बाहर जमीन-आस-
 मान हवा-पानी गौरहमे जग छिडनेसे हलचल मची हुई है । और
 भीतर इन आधे पागल ^{अराज} बन्धाजानके दिलमे भी ऐसी ही हलचल मची
 हुई है । (भेषगर्जन) ओ फिर !

शाह०—हथियार लो, हथियार लो ! तलवार, भात्र, तीर
 कमान, लेकर दौड़ो ! वे आ रहे हैं, वे आ रहे हैं !—लड़ेंगा ! जगी
 बाजे बजाओ । झडा खडा करो !—वह वे आ रहे हैं ।

खूनके प्यासे शैतानके गुलाम !—मुझे नहीं पहचानता ! मैं बाद-
शाह शाहजहाँ हूँ ! हटकर खड़ा हो !

जोहरत—ब्राजाजान, जोशमें न आइए । चलिण आपको सुल
आऊँ । *(उत्तर)*

शाह०—ना । मेरे हटते ही व द्वाराको मार डालेंगे ।—पास न
आना । खबरदार—

जोहरत—*ओला* ब्राजाजान !—

शाह०—पास न आना । तुम लोगोकी साँसमें जहर है,—वह
माँस बँधे हुए गदे पानीकी हवामे भी बढ़कर जहरीली है, सडी हड्डीसे
बढ़कर बढ़बूदार है ! कहता हूँ, आगे कदम न बढ़ाना ।

जोहरत—ब्राजाजान रात ज्यादा बीत गई है । सोने चलिए ।
(उत्तर) [जहागरामा प्रवेशन]

जहा०—कैसा पुरदर्द नजारा है ! वे-ब्रापकी लडकी, औलादके
गम्मे पागल हुए बुड्ढेको तसल्ली दे रही है । मगर उसके ही कले
जेमें बकाधक करके आग जल रही है ! कैसा पुरदर्द और पुरअसर
नजारा है !—देख जाओ औरगजेर ! अपनी करतत देख जाओ !

जोहरत—फफी, तुम उठ क्यों आई ?

जहा०—बादलोके गरजनेसे आँल खुल गई !—अब्याजान फिर
पाँगलोंकी तरह बक रहे हैं ?

जोहरत—हाँ फफी ।

जहा०—दवा दी है ?

जोहरत—दी है ।—लेकिन माइम नहीं; अबकी होश आनेमें
[क्यों हो रही है ।

शाह०—किसने किया ! किसने किया !

जोहरत—क्या ब्राह्मण !

शाह०—गून ! खून ! वह खून निकल रहा है ! तमाम फर्श भीग गया ।—देखूँ ! (दौड़कर दाराने कल्पित रुधिरका अपने दोनों हाथोंमें मलकर) अभीतक गर्म है—धुआँ उठ रहा है ।

जहा०—अब्रा, इतनी रात तीन गई, अभीतक आप नहीं सोये ?

शाह०—औरगजेब ! मेरी तरफ देखकर हँस रहा है ? हँस !—नहीं पाजी ! तुझे सना दूँगा !—सटा रह खूनी ! हाथ जोड़कर गड़ा हो !—क्या !—माफी माँगता है ? माफी !—माफी नहीं दी जासकती । तने मोचा गा, मैं अपना लटका समझकर तुझे माफ कर दूँगा ?—ना ! तुझे भूसीकी आगमें जलानेका हुक्म देता हूँ ।—जाओ, छे जाओ ।

जहा०—अब्रा, मोने चलिए !

जोहरत—आइए ब्राह्मण । (हाथ पकड़ती है ।)

शाह०—क्या मुमताज ! तुम उसकी तरफस माफी माँगती हो ! नहीं, मैं माफ नहीं करूँगा । मैंने उसे उमके जुर्मकी सजा दी है । उमने दारानका खून किया है ।

जहा०—नहीं अब्रा, खून नहीं किया । चलकर सोइए ।

शाह०—खून नहीं किया ? खून नहीं किया ?—सच, खून नहीं किया ? तो फिर मैंने यह क्या देखा ! खान ?

जहा०—हाँ अब्रा, खान ।

शाह०—तब भी अच्छा है ! लेकिन यह बड़ा बुरा खान था । अगर सच हो ।—क्यों जोहरत ! रो रही है !—तो क्या यह खान नहीं है ? खान नहीं है ? ओ-हो-हो-हो-हो-

(मेघका गरजना ।)

जोह०—यह क्या हो रहा है बाहर ! आजकी रात ही क्या कयामतकी रात है !—सब पागल हो उठे हैं,—पानी, आग, हवा, आसमान, जमीन—सब पागल हो उठे हैं ।—ओ कैसी खौफनाक रात है !

शाह०—यह सब क्या जहानारा ?

जहा०—अब्या, रात ज्यादा हो गई है । सोइए । आप पागल तो हैं नहीं ।

शाह०—नहीं, मैं पागल नहीं हूँ । समझ गया, समझ गया ।—जहानारा, बाहर यह सब क्या हो रहा है ?

जहा०—बाहर एक कयामत हो रही है ! वह सुनिए अब्याजान—बादल गरज रहा है ! वह सुनिए—पानी जोरसे बरस रहा है ! वह सुनिए—हवाकी डुमक ! बाराबग विजली कटक रही है ! पानीका सोता मानो उमड़ चला है । आधी उस पानीको जमीनपर तीरकी तरह पहुँचा रही है ।

शाह०—करो पाजियो ! खूब ऊपर करो, खूब गैतानी करो । यह जमीन चुपचाप सब सह लेगी । इसने तुम्हें पैदा ही क्यों किया था !—इसने तुम्हें अपनी गोदमे पाल-पोसकर इतना प्रता क्यों किया था ! तुम सयाने हुए हो, अब क्यों मानोगे !—उसने जैसा किया वैसा फल पाया । करो पाजियो ! क्या करेगी वह ? ढेरके ढेर आगके शोले उगलेगी ? उगले, ये शोले आसमानमे जाकर दूने जोरसे उसीकी छातीपर पड़ेंगे और उसे जला देंगे । वह समुद्रमे लहरें उठाने गुम्मेसे फल उठेगी ? फल उठे, ये लहर उमीकी छातीपर सौमोंकी तरह बेकार हो-होकर रह जायेंगी, भीतर रुकी (गर्मी) ने वह भूचालमें हिल उठेगी ? लेकिन ७१

उससे खुद उसीकी छाती फट जायगी, तुम्हारा यह कुछ न कर सकेगी।—अपाहिज बुटिया ! वह बेचारी क्या कर सकती है ? सिर्फ अनाज दे सकती है, पानी दे सकती है, फूट फूट दे सकती है। और कुछ नहीं कर सकती। रुगे, उसके ऊपर जुन्म करो। उसकी छातीको मितमके कुल्हाटोमे चीरते चले जाओ ! यह कुछ न कर सकेगी !—रुगे पानियो !—मैया ! एक दफा गरन उठ सकती हो मैया ? कयामतकी आज्ञामे, मैकडों सरजोंकी तरह नलकर, फटकर, चौचौर हाकर—इस ग्यारी आसमानमे छिटक जा सकती हो मैया ? देवों, वे कहीं रहते हैं ? (दात पीमगा ।)

जहा०—अब्या, इम बेकार गुम्सेसे क्या होगा ! चलिए, सोइए ।

शाह०—सच बेटी—बेकार है ! बेकार है ! बेकार है !

(मँपगन ।)

जोहरत—ओ कैती रात है फूफी ! ओ ! कैमी खोफनाक है !

शाह०—जी चाहता है जहानारा, इम रातके ओधी पानी और अँपेरेमें एक बाग खून तेजीमे दोइ । ओर ये मफेद बाल नोचकर, इस हगमें उटाकर, इस प्रसातमे बहा दूँ । जी चाहता है कि अपनी छाती खोलकर दिजलीके आगे कर दें । जी चाहता है कि यहाँसे अपनी रूट निकालकर खुदानो दिखाऊँ । वह फिर गरज रहा है,—नादल ! तुम बारबार क्यों बेकार गरन रहे हो ? अपनी चाटसे जमीनकी छातीके टुकडे टुकडे कर सकते हो ? अँपेरे !—कैसा अँपेरा है !—न मरन ओर तांगको एकदम निगलकर नेस्त-नाबूद कर सकता है ।

जहा०—यह फिर !

तीनो—ओ कैमी रात

चौथा दृश्य ।

स्थान—ग्वालियरका किला ।

समय—सवेरा ।

(सुलेमान और महम्मद ।)

सुले०—सुना महम्मद, फ़ैसलेमे चचाको मौतकी सजा दी गई है ।

मह०—फ़ैसलेमे नहीं भाई, फ़ैसलेका ढांग रचकर । सिर्फ़ वाकी थे यही चचा ! आज उनका भी खातमा हुआ ।

सुले०—महम्मद, तुम्हारे मसुर सुल्तान शुजाकी मौत कैसे हुई ?

मह०—ठीक माझम नहीं । कोई कहता है, वे मय बीबीके दरियामे डूब गये । कोई कहता है, वे मय बीबीके लडकर मरे और लडकी-लडकीने पुदकुशी (आत्महत्या) कर ली ।

सुले०—तो उनके ग्यान्दानमे कोई नहीं रह गया ?

मह०—नहीं ।

सुले०—तुम्हारी बीबीने सुना है ।

मह०—सुना है । वह कल रात भर रोती रही, सोई नहीं ।

सुले०—महम्मद, तुम्हे इतना बड़ा रज है । महसकते हो ?

मह०—और तुम्हे यह बड़ा आगम है ! माँ—बापमे मिलने निकले थे, मगर उनसे मुलाकात भी नहीं हुई ।

सुले०—फिर उसी बातकी याद दिला रहे हो ! महम्मद, तुम इतने निठुर हो !—तुम्हारे अब्बाने क्या तुम्हे यहाँ मुझे इसी तरह जलानेके णि भेजा है । तुम्हें तो मुझे बचलाना और तसल्ली

तेना चाहिए—

मह०—भाई साहब, अगर इम कलजेका खून देनेसे तुम्हे कुछ भी तसल्ली हो, तो कहो, मैं अभी दुरी भोक हूँ !

सुले०—सच कहते हैं महम्मद, इस रजके छिप दिलासा है ही नहीं । अगर त्रिन्कुल भुला दे सकते हो अगर गुजरे हुणको एकदम मिटा दे सकते हो तो मिटा दो !

मह०—क्या ऐसी कोई तरकीब नहीं है ? भाईसाहब, क्या ऐसा कोई जहर नहीं है कि—

सुले०—उह देखो महम्मद,—सिपरका देखो ।

[पुलक ऊपर सिपरका प्रवेश ।]

सुले०—उह देखो उम बच्चेको—मेरे छोटे भाई सिपरको देखो ! देखो इम गैंगी बुत सरतको ! छातीके ऊपर दोनों हाथ बाँधे एकदर दूर सुनसानकी तरफ चुपचाप ताक रहा है ! ऐसा खौफनाक और पुरदर्त नजारा कभी देखा है महम्मद ?—इसको देखकर भी क्या तुम अपने रजका खयाल सोच सकते हो !

मह०—ओ कैसा खौफनाक है !—सच कहा ! हमारा रज मुँहमे कहा जा सकता है । लेकिन यह रज बयान नहीं किया जा सकता । बच्चा जब रोता है, तब पाम ही अगर किसीके कराहनेका जोर उठे, तो डरसे बच्चेका रोना थम जाता है । वैसे ही हमारा रज इस रजके आगे सौफसे चुप हो जाता है ।

सुले०—उमे देखो, यह दोनों ओखे मूँटे दोनों हाथ मर रहा है ! शायद सदमेसे चिल्लाना चाहता है, मगर आवाज नहीं निकलती !—सिपर ! सिपर ! भाई !

(एक बार सुलेमानकी तरफ देखकर सिपरका प्रस्थान ।)

मह०—भाईसाहब !

सुले०—महम्मद !

मह०—मुझे माफ़ करो !

सुले०—तुमसे क्या खता हुई है भाई !

मह०—नहीं भाई साहब, मुझे माफ़ करो । इतने गुनाहका बोझ अब्बाजान सँभाल नहीं सकेगे । इसीसे आधा गुनाह मैं अपने सिर लेता हूँ । मैं बड़ा भारी गुनाहगार हूँ । मुझे माफ़ करो ।

(घुटने टेक देना ।)

सुले०—उठा भाई !—शरीफ़ नेक वहादुर ! मैं तुम्हे माफ़ करूँगा ? तुम जो सह रहे हो, वह अपनी खुशीमें ईमानके लिए । मैं ही सिर्फ़ बदनसीब हूँ !

मह०—तो कहो, मुझसे तुम्हे कुछ मलाल नहीं है । भाई कहकर मुझे गलेसे लगा लो ।

सुले०—मेरे भाई ! (गले लगाना ।)

मह०—वह देखो चचाजान (मुराद) को लोग कालके लिए लिये जा रहे हैं ।

[सुलेमान उधर देखता है । पुलके ऊपर पहरके साथ मुरादका प्रवेश ।]

मुराद—(ऊँचे स्वरमें) या अल्लाह ! अपने गुनाहोंकी सजा मैं पा रहा हूँ । इसका मुझे रज नहीं है । लेकिन औरगजेब क्यों बच रहा है ?

नेपथ्यमें—कोई नहीं बचेगा । काँटेकी तौल बटला मिल जायगा ।

सुले०—यह किसकी आजाज है ?

मह०—मेरी बीबीकी ।

नेप०—उसको जो सजा मिलेगी, उसके आगे तुम्हारी यह सजा तो इनाम है ।—कोई नहीं बचेगा । कोई नहीं बचेगा ।

मुराद—(उल्लासके साथ) उमे भी सजा मिलेगी ! तो मुझे कल्लागाहमे ले चलो । मुझे अब कुछ रज नहीं है ।

(पहरेर साथ मुरादका प्रस्थान ।)

सुरे०—महम्मद, यह क्या ! तुम एकटक उधर ही नाक रहे हो ? क्या देखते हो ?

मह०—दोजख । इसके सिवा और भी क्या कोई दोजख है ? या खुदा, यह कैसा होगा ?

पाँचवाँ दृश्य ।

स्थान—औरगंजेवकी बाहरा बैठक ।

समय—आधी रात ।

[अरेल औरगजेव ।]

औरग०—जो किया—दीनके लिए । अगर और किसी तरह मुमकिन होता ।—(बाहरकी तरफ दरख्तर) ओ कैसा अँपरा है !—कौन जिम्मेदार है !—मे !—यह फैसला है ! यह कैसी आज्ञा है !—नहीं, दगाकी आइट है !—यह क्या ! किसी तरह इस ग्यालको दिलमे दूर नहीं कर सकता । रातको नींदकी खुमारीसे हुल्का पटता हूँ, मगर नींद नहीं आती ! (लयी सॉम लता है) ओ ! कैसा सन्नाटा है ! इतना सन्नाटा क्यों है ! (दहलता है, फिर एकाएक खडे होकर) यह क्या है ! फिर यही दाराका कटा हुआ सिर !—शुजाकी गूनसे तर लाश ! मुरादका खड !—जाओ सत्र ! मुझे यकीन नहीं । अरे ये फिर ने ही लग !—मुझे डेरकर नाच रहे हैं !—कौन हो तुम ? उणेंको चमकदार चोरीकी तरह शीचरी-चमे—जागते हुए भी सोतेकीमी हालतमें—मुझे खूब पडते हो !—चले जाओ !—यह मुरादका खड मुझ पुकार रहा है दाराका सिर

मह०—भाईसाहब !

सुले०—महम्मद !

मह०—मुझे माफ़ करो !

सुले०—तुमसे क्या खता हुई है भाई !

मह०—नहीं भाई साहब, मुझे माफ़ करो । इतने गुनाहका बोझ अब्राजान सँभाल नहीं सकेगे । इसीसे आधा गुनाह मैं अपने सिर लेता हूँ । मैं बड़ा भारी गुनहगार हूँ । मुझे माफ़ करो ।

(घुटने टेक देना ।)

सुले०—उठो भाई ।—शरीफ़ नेक बहादुर । मैं तुम्हे माफ़ करूँगा । तुम जो सह रहे हो, वह अपनी खुशीमें ईमानके लिए । मैं ही सिर्फ़ बदनसीब हूँ ।

मह०—तो कहो, मुझसे तुम्हें कुछ मलाल नहीं है । भाई कहकर मुझे गलेसे लगा लो ।

सुले०—मेरे भाई ! (गले लगाना ।)

मह०—वह देखो चचाजान (मुराद) को लोग कालके लिए लिये जा रहे हैं ।

[सुलेमान उधर देखा है । पुलके ऊपर पहरेके साथ मुरादका प्रवेश ।]

मुराद—(कँचे स्वरमें) या अल्लाह ! अपने गुनाहोंकी सजा मैं पा रहा हूँ । इसका मुझे रज नहीं है । लेकिन औरगजेब क्यों बच रहा है ?

नेपथ्यमें—कोई नहीं बचेगा । काँटेकी तौल बदला मिल जायगा ।

सुले०—यह किसकी आज्ञा है ?

मह०—मेरी बीबीकी ।

नेप०—उसको जो सजा मिलेगी, उसके आगे तुम्हारी यह सजा तो इनाम है ।—कोई नहीं बचेगा । कोई नहीं बचेगा ।

मुराद—(उल्लासके साथ) उमे भी सजा मिलेगी ! तो मुझे कल्लागाहमे ले चलो । मुझे अब कुछ रज नहीं है ।

(पहरेके साथ मुरादका प्रस्थान ।)

सुले०—महम्मद, यह क्या ! तुम एकटक उधर ही ताक रहे हो ? क्या देखते हो ?

मह०—दोजख । इसके सिवा और भी क्या कोई दोजख है ? या पुदा, यह कैसा होगा

पाँचवाँ दृश्य ।

स्थान—औरगजेवकी बाहरी बैठक ।

समय—आधी रात ।

[अनेले औरगजेव ।]

औरग०—जो किया—दीनके लिए । अगर और किमी तरह मुमकिन होता !—(बाहरकी तरफ देखकर) ओ कैमा अंधेरा है !—कौन जिम्मेदार है !—मे !—यह कैमला है ! यह कैसी आवाज है ?—नहीं, हवाकी आहट है !—यह क्या ! किमी तरह इस ग्या लको दिलसे दूर नहीं कर सकता । रातको नींदकी खुमारमे हुलका पडता हूँ, मगर नींद नहीं आती ! (लंबी सोंम लता है) ओ ! कैसा सन्नाटा है ! इतना सन्नाटा क्यों है ! (उठलगा दे फिर एकदम गडे होकर) यह क्या है ! फिर यही दाराका कटा हुआ सिर !—शुजाकी खूनसे तर लाग ! मुरादका उड !—जाओ सब ! मुझ यकान नहीं । अब ये फिर ये ही गेग !—मुझे घेरकर नाच रहे हैं !—कौन हो तुम ? धुएकी चमकदार चोटीकी तरह बीच-बीचमे—जागने हुए भी सोतेकीमी हालतमें—मुझे दंग पडते चले जाओ !—यह मुरादका धड मुझे पुकार रहा है दारा

मेरी तरफ एकटक ताक रहा है, शुजा हँस रहा है।—यह सब क्या है!—ओ (आँखें बंद कर लेना, फिर गोलना) जाने दो ! गया ! ओ !—बटनमें तेजीके साथ ग्लून चक्कर मार रहा है । सिरपर मानो किसीने पहाड लद दिया है ।

[दिलदारका प्रवेश ।]

औरग०—(चौककर) दिलदार ?

दिल०—जहाँपनाह !

औरग०—यह सब मैंने क्या देखा ?—जानते हो ?

दिल०—इन्माफके पर्देके ऊपर गर्म पलतावेकी परछाही।—तो शुरू हो गया ?

औरग०—क्या ?

दिल०—पलतावा । जानता या कि जम्र ही होगा । इतना बड़ा कुदरती कानूनके खिलाफ काम—कायदेका इतना बड़ा उल्ट-फेर कुदरत म्या बहुत दिनों तक सह सकती है ?—कभी नहीं ।

औरग०—दिलदार, कायदेका उलट फेर क्या ?

दिल०—यही बूढ़े बापको नजरबन्द रखना । जानते हैं जहाँपनाह, आपके अन्धा आज आपकी बेहरमी देखकर पागल हो रहे हैं!—उसके ऊपर यह एकके ऊपर एक भाइयोका खून ! इतना बड़ा अजाब क्या या ही चला जायगा ?

औरग०—कौन कहता है मैंने भाइयोका खून किया है ? यह काजियोका फैसला है ।

दिल०—हमेशा औराको बोसा देते रहनेसे क्या जहाँपनाह यह भी यकीन हो गया है कि आप अपनेको भी बोखा दे, यही सच्चे बढकर मुस्किल है । आप भाइयोको गला

टाळ सकते हैं, लेकिन इन्साफको चली गला घोटकर न मार सकेगे। हजार उसका गला घोटिए, तब भी उसकी धीमी, गहरी, ढकी हुई, टूटी-फूटी आवाज—दिलके भीतरसे रह-रहकर सुनाई ही देगी।—
अब अपने आमालोका नतीना भोगिए ।

औरग०—जाओ तुम यहाँमे। कोन हो तुम दिल्लार—जो औरगजेवको नसीहत करने आये हो ?

दिल०—मैं कौन हूँ औरगजेव ? मैं हूँ मिर्ना महम्मद निया-मतखों हाजी ।

औरग०—नियामतखों हानी !—एगियाके सवसे बटकर मग-हूर आफिल दानिअन्द नियामतखों ?

दिल०—हाँ औरगजेव, मैं वही नियामतखों हूँ। मुनो, मैं शाही मामशेकी जानकारी हामिठ करनेके लिए इत्तिफाकिया इम प्रेख झगडेके चक्रमे आफर पट गया था। वही जानकारी हामिल करनेके लिए मैं नीच मसखरा बना, और एकरा एक मामरी चाग-कीमे भी शरीक हुआ।—लेकिन जो जानकारी लेकर मैं आन यहाँ-से जाता हूँ—जान पटना है, उसे न ये जाना तो अच्छा था !—औरगजेव, क्या तुमने यह साचा या कि मैं तुम्हारे रुपयोंके लिए अबतक तुम्हारी गुलामी कर रहा था ? इममे इस उक्त भी यह ज्ञान है कि यह मगहर दौलतक मिरपर लान मार डता है। बाग्शाह मलामत, मैं जाता हूँ। (जाना चाहता है।)

औरग०—जनाब !

दिल०—ना, तुम मुझे लैटा न सकोग ! औरगजेव मैं जाता हूँ। हों एक बात कहे जाता हूँ। तुम मोचते हा, इम निन्दगीकी प्राणी तुमन नीन ली ?—नहीं, यह तुम्हारी जीन मरी है औरगजेव, यह

मेरी तरफ एकटक तारू रहा है, शुजा हँस रहा है।—यह सत्र क्या है!—ओ (आँस बंद कर लेना, फिर रोलना) जाने दो ! गया ! ओ !—बदनमें तेजीके साथ खून चक्कर मार रहा है । सिरपर माना किसीने पहाड लद दिया है ।

[दिलदारका प्रवेश ।]

औरग०—(चौककर) दिलदार ?

दिल०—जहाँपनाह !

औरग०—यह सत्र मैंने क्या देखा ?—जानते हो ?

दिल०—इन्साफके पर्देके ऊपर गर्म पछतावेकी परछाही।—
तां शुद्ध हो गया ?

औरग०—क्या ?

दिल०—पछतावा । जानता या कि जम्हर ही होगा । इतना बडा कुदरती कानूनके खिलाफ काम—कायदेका इतना बडा उलट-फेर कुदरत क्या बहुत दिनों तक सह सकती है ?—कभी नहीं ।

औरग०—दिलदार, कायदेका उलट फेर क्या ?

दिल०—यही बूढे बापको नजरबंद रखना ! जानते हैं जहाँपनाह, आपके अन्ना आज आपकी बेहरमी देखकर पागल हो रहे हैं!—उसके ऊपर यह एकके ऊपर एक भाडयोका गून ! इतना बडा अजाब क्या या ही चला जायगा ?

औरग०—कौन कहता है मैंने भाडयोका गून किया है ? यह काजियोंका फैसला है ।

दिल०—हमेशा औराको बोखा देते रहनेसे क्या जहाँपनाहको यह भी यकीन हो गया है कि आप अपनेको भी बोखा दे सकते हैं ? यही सत्रमे बढकर मुस्किल है । आप भाडयोंको गला घोटकर मार

टाळ सकते हैं, लेकिन इन्साफको जन्दी गला घोटकर न मार सकेगे। हजार उसका गला घोटिए, तब भी उसकी धीमी, गहरी, ढकी हुई, टूटी-फूटी आवाज—दिलके भीतरसे रह-रहकर सुनाई ही देगी।—
अब अपने आमालोका नतीना भोगिए ।

औरग०—जाओ तुम यहाँसे। कौन हो तुम पिन्डार—जो औरगजेवको नसीहत करने आये हो ?

दिल०—मैं कौन हूँ औरगजेव ? मे हूँ मिर्ना महम्मद नियामतखॉ हाजी ।

औरग०—नियामतखॉ हाजी !—पशियाके सबसे ढढकर मगहर आकिल टानिअन्द नियामतखॉ ?

दिल०—हैं औरगजेव, मे वही नियामतखॉ हूँ। सुनो, मैं शाही मामलोकी जानकारी हासिल करनेके लिए इत्तिफाकिया उस घरेलू झगडेके चक्करमे आकर पट गया था। वही जानकारी हासिल करनेके लिए मैं नीच मसखग बना, और पकरार एक मामूली चालाकीमे भी शरीक हुआ।—लेकिन जो जानकारी लेकर मैं आज यहाँसे जाना हूँ—जान पटता है, उसे न ले जाता तो अच्छा था।—औरगजेव, क्या तुमने यह सोचा था कि मैं तुम्हारे रूपयोके लिए अतक तुम्हारी गुलामी कर रहा था ? इममे इम वक्त भी वह जान है कि वह मगरर दौस्तके मिरपर लात मार दता है। बादशाह सखमत, मैं जाता हूँ। (जाना चाहता है।)

औरग०—जनाब !

दिल०—ना, तुम मुझे लैटा न सकोगे। औरगजेव, मैं जाता हूँ। हों एक बात कहे जाता हूँ। तुम माचते हो, उस जिन्दगीकी बाजी तुमने जीत ली ?—नहीं, यह तुम्हारी जीत नहीं है औरगजेव, —

तुम्हारी हार है। बड़े गुनाहकी बड़ी सजा होती है।—बर्बदी, तनुजुली।
 तुम जितना अपनी तरक्की समझ रहे हो, सचमुच, उतना ही तुम
 नीचे गिरते जा रहे हो। उसके बाद जब यह जयानीका नशा उतर
 जायगा, जब धुंधली नजरमे देखोगे कि अपने और बहिश्तके बीचमे
 तुमने कैसा गढा खोद रक्खा है, तब तुम उधर देखकर काँप
 उठोगे।—याद रक्खो। (प्रस्थान)

[औरगजेब सिर झुकाये दूसरी तरफसे जाता है।]

छठा दृश्य।

स्थान—आगरेका किला। शाहीमहलका बरामदर।

समय—तीसरा गहर।

[जहानारा और जोहरत उनिसा बैठी बातें कर रही है।]

जहा०—बेटी जोहरत उनिसा, औरगजेबके ऐसा देखनेमें
 सीमा, हँसमुख, मीठी छुरी और कमीना आदमी तुमने और भी कहीं
 देखा है।

जोहरत—ना। मुझे एक तरहका खौफ लगता है फुफ्फू। भीतर
 इतना बेरहम, बाहर इतना सीधा, भीतर इतना शहजोर, बाहर
 इतना बेचारा, भीतर इतना जहरीला और बाहर इतना मीठा।—
 यह भी मुमकिन है। मुझे खौफ लगता है।

जहा०—लेकिन मेरे दिलमे उमके लिए एक तरहकी इज्जतका
 खयाल पैदा होता है। तानुवसे सन्नाटेमें आजाती हूँ कि आदमी
 इस तरह हँस मकना है—और साथ ही माथ म्यूनी शेरकी तरह
 खलच भरी निगाहसे देख मकता है,—ऐसी नमी और महत्त्वपूर्ण
 बातें कर मकता है—जब कि माथ ही माथ उसके भीतर-ही भीतर
 उसकी आग सुन्न रही है, सुनाके आगे इस तरह हाथ जोड़ मक-

ता है—जब कि साथ ही साथ दिलमें कोई शैतनतका नया मन-सूत्रा गाँठ रहा है।—बन्दिहारी !

जोहरत—बाघाजानको इम तरह कैद कर रक्खा है, फिर भी सन्तनतके कामोंमें उनकी राय माँग भेजता है ! उनके सामने ही एक एक कुर्रके उनके बेटोका खून करता जाता है—फिर भी हर मर्तवा उनसे माफी माँग भेजता है ! जैसे बड़ी भारी शर्म, बड़ा भारी लिहा-रा है ! अजीब आदमी है !—उह लो, बाघाजान आ रहे हैं ।

[शाहजहाँका प्रवेश ।]

ह०—देख, कैसा अपने आपको सजाया है मैंने ! जहानारा, देख ! जोहरतउन्सि, देख ! औरगजेब कहीं इन जवाहरोंको चुरा न ले जाय—इसीसे मैं इन्हे पहने पहने मृतता हूँ । कैसा देख पडता हूँ ? (जोहरतसे) मुझसे शादी करनेको तेरा जी नहीं चाहता ?

जोहरत—फिर हवास जाता रहा । पागलपन वीच-वीचमें चोंद-पर बादलकी तरह आकर चला जाता है ।

शाह०—(सहसा गमीर होकर) लेकिन खबरदार, ब्याह न करना ! (नाचे स्वरसे) लडका होगा तो तुझे कैद रखेगा, तेरे जेवर छीन लिगा । ब्याह न करना ।

जहा०—देखती हो बेटी, यह पागलपन नहीं है । इसके साथ-होश-हवास भी हैं । यह मानों 'शायरीमें रोना' है ।

जोहरत—दुनियाँमें जितने पुरदर्द नज्जारे हैं, उनमें अकमन्द-पागलका पैसा पुरदर्द नज्जारा शायद और नहीं है । एक खूबसूरत-मूरत जैसे टूट कर तिमिरी पडी हुई है।—ओ 'घड़ा-ही' पुरदर्द है ।

(आँसोंपर आँबल रखकर प्रस्थान ।)

शाह०—मैं पागल नहीं हुआ हूँ जहानारा ! संभलकर त्नातचीत

कर सकता हूँ—कोशिश करनेसे अपना मतलब समझा सकता हूँ।

जहाँ०—यह मैं जानती हूँ अब्बाजान !

शाह०—लेकिन मेरा दिल टूट गया है। इतना बड़ा सदमा उठाकर भी जिन्दा हूँ, यही ताज्जुब है। दारा, शुजा, मुराद,—सबको मार डाला !—और उनका एक लडका भी बटला लेनेके लिए नहीं रहा। सबको मार डाला।

[औरगजेबका प्रवेश ।]

शाह०—यह कौन ? (भय और विस्मयके भावसे) यह—यह तो बादशाह है !

जहाँ०—(आश्चर्यसे) यह तो मचमुच ही औरगजेब है !

औरग०—अब्बा !—

शाह०—मेरे हीरे मोती लेने आया है ! न दूँगा—न दूँगा। अभी सबको लोहेकी मुँगरियोंसे चूर-चूर कर डालूँगा ! (जाना चाहता है ।)

औरग—(सामने आकर) नहीं अब्बा, मैं हीरे-जवाहरात लेने नहीं आया।

जहाँ०—तो जान पड़ता है वापको-मारने आये हो। अच्छा है, वापका खून ही क्यों बाकी रह जाय !—यह भी हो जाय।

शाह—मारेगा—मेरा खून करेगा ? कर, औरगजेब। मुझे कल कर !—उसके बदलेमें ये सब जवाहरात मैं तुझे दूँगा, और—मरनेके वक्त तुझे इस मेहसवानीके लिए दुआ देकर मरूँगा। ले—मेरी जान ले ले।

औरग०—(एकाएक घुटने टेककर) मुझे इससे भी बढ़कर गुनहगार न घनाइया—अब्बा, मैं गुनहगार—भारी गुनहगार हूँ। उसी आगसे जल-जलकर राक हुआ जा रहा हूँ। देखिए अब्बा,

यह ढाली देह, ये गढोंमें रसी हुई आँखें, ये मूखे ओठ, यह पीला और उतरा हुआ चेहरा । ये मेरी गवाही देंगे ।

शाह०—दुबला हा गया हँ । मचमुच, दुबला हो गया है ।

जहा०—औरगजेब, दीपाचे (भूमिका) की जरूरत नहीं है । यहाँ एक ऐसा आदमी मौजूद है, जो तुमको खूब जानता है । कहो, कौनसा नया शैतनतका मनमूत्रा गाँठफर आये हो ! कहो अब क्या चाहते हो ?

औरग०—अब्यामे माफी ।

जहा०—माफी ! औरगजेब, यह तो तुमने खूब नया ढग निकाला !

औरग०—मैं जानता हूँ जहन कि—

जहाँ०—चुप रहो ।

शाह०—कहने दे, जहानारा । कहो, क्या कहना चाहते हो औरगजेब ?

औरग०—और कुछ नहीं कहना चाहता, सिर्फ आपसे माफी चाहता हूँ । (जहानारा ब्यगकी हसी हसता है ।)

औरग०—(एक वार जहानाराकी ओर देखकर शाहजहाँसि) अगर आप मेरी इस इन्तिजाको जालसाजी समझे, तो अब्याजान आइए मेरे साथ, मैं इसी दम महल्का फाटक खोले देता हूँ, और आपको आग-रेके तरतपर सत्रके सामने बैठकर बादशाह मानकर आपकी ताजीम करता हूँ । यह मैं अपना ताज आपके पैरोंपर रख्के देता हूँ ।

(मुकुट उतारकर शाहजहाँके पैरोंपर रखना ।)

शाह०—मेरा दिल पसीजा जाता है, -पसीजा जाता है ।

औरग०—मुझे माफ़ कीजिए ! (दोनों पैर पकडना ।)

शाह०—बेटा ! (औरगजेबको उठाकर अपनी आँखें पोंछना ।)

जहा०—औरगजेब, यह तुमने अच्छा तमाशा किया ।

शाह०—बोल नहीं जहानारा !—बेटा मेरा मेरे पैर पकडकर मुझसे माफी माँग रहा है । मैं क्या माफी दिये बिना रह सकता हूँ ?—
हायरे बापका कलेजा ! इतनी देर तक तू क्या इसीके लिए आफत मचाये था ! वही भरमे सारा गुस्सा गलकर पानी हो गया !

औरग—आइए अन्ना—आपको फिर आगरेके तख्तपर बैठाऊँ और बैठाकर मक्केशरीफ जाकर अपने गुनाहोंका कफारा करनेकी कोशिश करूँ !

शाह०—ना, मैं अब फिर बादशाह होकर तख्तपर नहीं बैठना चाहता । मेरे दिन पूरे हो आये हैं ।—इस सल्तनतको तुम भोगो ! बेटा, ये हीरे, जवाहरात और ताज तुम्हारे हैं ।—और माफी !—
औरगजेब—औरगजेब, नहीं, उन बातोंको इस वक्त याद न करूँगा । औरगजेब, तेरे सब कर्मर मैंने माफ कर दिये । (आँखें बंद कर लेते हैं ।)

जहा०—अन्ना, दाराके खूनीको माफी !—

शाह०—चुप !—जहानारा ! इस वक्त मेरे आराममें खलल न डाल । उन्हे तो अब पा नहीं सकता ।—सात बरस सरत तकलीफमें प्रिताये हैं, इतने दिनोतक भीतरी । आगमे जलना रहा हूँ । रजमें पागल हो गया हूँ । देखती तो हे । एक दिन तो खुश हो लेने दे । तू भी औरगजेबको माफ कर दे बेटा ।—औरगजेब, जहानारासे माफी माँगो ।

औरग०—मुझे माफ करो बहन !—

१०—तुझमें माफी माँगनेकी हिम्मत है ?—अब्बाकी तरह

मैं जईफ नहीं हुई ! लुटेरोंके सरदार ! खूनी ! दगाबाज !—

शाह०—जहानारा, यह भी तेरी ही तरह बे-मौजा है—तेरी ही तरह यतीम है ! माफ कर !—इसकी माँ अगर इस वक्त जिन्दा होती, तो वह क्या करती जहानारा ? अपनी ओछादकी मोहब्बत इसकी माँ मेरे पास जमा कर गई है ।—क्या जहानारा ! अन्न भी चुप है । आँख उठाकर देख, इस शामके रक्त इस जमनाकी तरफ देख—देख वह कैसी साफ है ! देख उस आसमानकी तरफ—देख उसका रंग कैसा गहरा है ! देख इस चमनकी तरफ—देख वह कैसा खूबसूरत है ! और देख यह पत्थर बने हुए मोहब्बतके आँसुओंका ढेर, यह जुदाईके सदमेकी हमेशा बनी रहनेवाली कहानी ! यह खडा, चुप, बेदाग, सफेद महल । इस ताजमहलकी तरफ आँख उठाकर देख—कैसा पुरदर्द है ! इन सबकी तरफ देखकर औरगजेबको माफ कर—और यह सोचनेकी कोशिश कर कि तू इस दुनियाको जितना खराब समझती है वह उतनी खराब नहीं है—जहानारा ।

जहा०—औरगजेब, यहाँ तुम्हारी पूरी तौरसे जीत हुई औरगजेब—अपने इस जईफ और लबेजान बापके कहनेसे मैंने तुम्हें माफ कर दिया । (दोनों हाथोंसे मुँह ढक लेना ।)

(बगधे जोहरतउभिष्ठाका प्रवेश ।)

जोहरत—लेकिन मैंने माफ नहीं किया खूनी ! सारी दुनिया चाहे तुझे माफ कर दे, पर मैं माफ नहीं कहेंगी । मैं तुझे बददुआ देती हूँ—गुस्सेमें भरी हुई नागिनकी तरह गर्म साँस लेकर मैं तुझे बददुआ देती हूँ । इस बददुआकी यहशतनाफ परआहीं जैसे एक खौफकी तरह खाते-पीते-सोते पीछे फिरे । सोतेमें उस

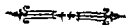
बददुआका ब्रौंझ पहाटकी तरह तेरी छातीपर रखा रहे । उस बददुआकी खौफनाक आवाज तेरी खुशी और फतहयात्रीके बाजोंमें बेसुरी होकर गूँजती रहे । तूने मेरे बापका मून करके जो सल्लतनत हासिल की है, मैं बददुआ देती हूँ, तू बहुत दिनोंतक जी, और मल्लतनत कर ।—वही सल्लतनत तेरे लिए काल हो । वह तुझे एक गुनाहसे दूसरे गहरे गुनाहके गढेमें टकेलती रहे । मरते वक्त तेरे इस जलते हुए सिरपर खुदाके रहमकी एक छँट भी न पड़े ।

(प्रस्थान ।)

(शाहजहाँ, औरंगजेब और जहानारा, तीनों सिर झुकाये चुप खड़े रहते हैं ।)

[पर्दा गिरता है ।]

द्विजेन्द्र-नाटकावली ।



बंगालमें द्विजेन्द्रलाल राय नामके एक सवश्रेष्ठ नाटककार हो गये हैं । अनेक बातोंमें वे जगत्प्रसिद्ध लेखक रवीन्द्रनाथ ठाकुरसे भी बड़े बड़े समथे जाते हैं । स्वयं रवीन्द्र बाबू भी उनकी रचनाओंपर मुग्ध हैं । वे राष्ट्रीय कवि थे । उनके नाटक भारतकी जीवित भाषाओंमें सबसे श्रेष्ठ समझे जाते हैं और इस कारण उनके मराठी, गुजराती, कन्नड़ी, तामिल, मलयालम, तेलगू आदि अनेक देशी भाषाओंमें अनुवाद हो चुके हैं । वे कवित्वसे कमनीय, मौलिकतासे उज्ज्वल, त्रिशुद्ध शक्तिपरायणतासे मनोह और सद्भावोंसे परिपूर्ण हैं । राष्ट्रियता, जातीयता और स्वदेश प्रेमके भावोंको जागरित करनेमें द्विजेन्द्र बाबूके नाटक बेजोड़ हैं और विश्ववन्द्य महात्मा गांधीजी भावनाओंके बहुत अधिक पोषक हैं । हमने अबतक उनके नीचे लिखे नाटकोंका हिन्दीमें प्रकाशित किया है जिनकी बहुत ही प्रशंसा हुई है और जिनकी कई कई आदृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं । 'संस्कृतकी' एक विस्तृत समालोचनामें उसके विद्वान् समालोचक बाबू कालिदास रूपूर वी० ए० ने लिखा है—

“यह स्वीकार करना पडेगा कि हिन्दी भाषाम अभिनय करने आर पढने, दोनोंके योग्य यदि कोई नाटकमाला है तो द्विजेन्द्र बाबूकी ।”

“द्विजेन्द्र बाबूके नाटकोंके चिरजीवी रहनेमें कोई सन्देह नहीं मान्य होता । वे पढने और अभिनय करने, दोनोंमें समाजका आनन्दित करते हुए शिक्षा देते हैं । उनके पात्र मनोविचारकी सूक्ष्मसे सूक्ष्म तरंगोंमें जा मिलते हैं और उनके मानसिक हृदयमें मिलकर पुनर्जीवन प्राप्त करते हैं ।”

इन नाटकोंकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे बहुत ही पवित्र भावोंसे पूर्ण । इसलिए इन्हें बालक युवा युवती सभी पढ सकते हैं ।

इस शाहजहाँ नाटकके सिवाय द्विजेन्द्रबाबूके नौरे लिखे हुए नाटक प्रकाशित हो चुके हैं जो हाथोंहाथ बिक रहे हैं । इनका एक सेट मैगावर आप अपना लायनेरीकी शोभा बढाएँ—

ऐतिहासिक

पौराणिक

दुर्गादास	मू० १)	पार्षाणी (अहल्या)	III
मेवाड-पतन	III)	भीष्म	१
गणा प्रतापसिंह	१II)	सीता	II
नूरजहाँ	१=)	मुहराब रस्तम	II=
शाहजहाँ	१)	सामाजिक	
ताराबाई	१)	उसभार	१=
चन्द्रगुप्त	१)	भारत-रमणी	III=
सिंहल-विजय	१II)	सूमके घर घूम	

कालिदास और भवभूति ।

यह ग्रन्थ भी द्विजेन्द्रबाबूका लिखा हुआ है । इसमें महाकवि कालिदास और अभिज्ञान शाकुन्तल और भवभूतिके उत्तररामचरित्रकी तुलनात्मक समालोचना की गई है, जिससे संस्कृतके इन दो महाकवियोंकी रचनाओंका असली मूल्य समझमें आ जाता है । हिन्दीमें इसकी जोड़का समालोचना ग्रन्थ और दूसरी नहीं । मूल्य १II)

मैनेजर,—हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय

